अवधी

कक्षा ९

अवधी

कक्षा ९

नेपाल सरकार
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय
पाठ्यक्रम विकास केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर

प्रकाशक : नेपाल सरकार
शिक्षा, विज्ञान तथा प्रविधि मन्त्रालय
पाठ्यक्रम विकास केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर

© पाठ्यक्रम विकास केन्द्र

वि.सं. २०७७

पाठ्यक्रम विकास केन्द्रको लिखित स्वीकृति विना व्यापारिक प्रयोजनका लागि यसको पुरै वा आंशिक भाग हुबहु प्रकाशन गर्न, परिवर्तन गरेर प्रकाशन गर्न, कुनै विद्युतीय प्रसारण वा अन्य प्रविधिबाट अभिलेखबद्ध गर्न र प्रतिलिपि निकाल्न पाइने छैन ।

हाम्रो भनाइ

विद्यालय तहको शिक्षालाई उद्देश्यमूलक, व्यावहारिक, समसामयिक र रोजगारमूलक बनाउन विभिन्न समयमा पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक विकास तथा परिमार्जन गर्ने कार्यलाई निरन्तरता दिइँदै आएको छ । विद्यार्थीमा राष्ट्र राष्ट्रियताप्रति एकताको भावना पैदा गराई नैतिकता, अनुशासन र स्वावलम्बन जस्ता सामाजिक एवम् चारित्रिक गुणका साथ आधारभूत भाषिक तथा गणितीय सिपको विकास गरी विज्ञान, सूचना प्रविधि, वातावरण र स्वास्थ्यसम्बन्धी आधारभूत ज्ञान र जीवनपयोगी सिपका मा(ध्यमले कलासौन्दर्यप्रति अभिरुचि जगाउन, सिर्जनशील सिपको विकास गराउनु र विभिन्न जातजाति, लिङ्ग, धर्म, भाषा, संस्कृतिप्रति समभाव जगाई सामाजिक मूल्य र मान्यताप्रतिको सहयोगात्मक र जिम्मेवारीपूर्ण आचरण विकास गराउनु आजको आवश्यकता बनेको छ । यही आवश्यकता पूर्तिका लागि विद्यालय शिक्षाका लागि राष्ट्रिय पाठ्यक्रम प्रारूप, २०७६ को सैद्धान्तिक मार्गदर्शनअनुसार अवधी विषयको यो नमुना पाठ्यपुस्तक विकास गरिएको हो ।

यस पाठ्यपुस्तकको लेखन तथा सम्पादन श्री विक्रममणि त्रिपाठी, श्री विजय बर्मा र श्री हंसावती कुर्मीबाट भएको हो । यसलाई यस रूपमा ल्याउने कार्यमा यस केन्द्रका महानिर्देशक श्री अणप्रसाद न्यौपाने, प्रा.डा. दुवीनन्द ढकाल, प्रा.डा. ओमकारेश्वर श्रेष्ठ, श्री सिद्धीबहादुर महर्जन, श्री अन्जु लामा, श्री टुकराज अधिकारी र श्री इन्दु खनालको विशेष योगदान रहेको छ । यस पुस्तकको लेआउट डिजाइन श्री सन्तोषकुमार दाहालबाट भएको हो । उहाँहरूलगायत यसको विकासमा संलग्न सम्पूर्णप्रति केन्द्र हार्दिक कृतज्ञता प्रकट गर्दछ ।

पाठ्यपुस्तकलाई शिक्षण सिकाइको महत्त्वपूर्ण साधनका रूपमा लिइन्छ । अनुभवी शिक्षक र जिज्ञासु विद्यार्थीले पाठ्यक्रमद्वारा लक्षित सिकाइ उपलब्धिलाई विविध स्रोत र साधनको प्रयोग गरी अध्ययन अध्यापन गर्न सक्छन् । यस पाठ्यपुस्तकलाई सकेसम्म क्रियाकलापमुखी र रुचिकर बनाउने प्रयत्न गरिएको छ तथापि यसमा अझै भाषा प्रयोग, भाषाशैली, विषयवस्तु तथा प्रस्तुति र चित्राङ्कनका दृष्टिले कमीकमजोरी रहेको हुन सक्छन् । तिनको सुधारका लागि शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, बुद्धिजीवी एवम् सम्पूर्ण पाठकहरूको समेत महत्त्वपूर्ण भूमिका रहने हुँदा सम्बद्ध सबैको रचनात्मक सुझावका लागि पाठ्यक्रम विकास केन्द्र हार्दिक अनुरोध गर्दछ ।

वि.स. २०७७

पाठ्यक्रम विकास केन्द्र

विषयसूची

पाठ	शीर्षक	पृष्ठ सङ्ख्या
१.	मन कै धनी	१
२.	बसन्त ऋतु	१३
३.	अवधी भाषा कै उन्नायक पाठकजी	२१
४.	हमार गाँव	३२
५.	पारम्परिक हुनर सम्बर्द्धन कै आवश्यकता	४२
६.	चिठ्ठी	५४
७.	भक्तिकालीन कविता	६३
८.	स्वाधीनता के खातिर	७०
९.	अवधी लोक जीवन औ पर्यावरण	८१
१०.	आयशा कै तीन दिन	९२
११.	विवशता	१०१
१२.	अवधी भाषा कै आदिकवि कुक्कुरीपा	११२
१३.	सूफी साहित्य	११९
१४.	प्रिया कै बियाह	१२७
१५.	व्यावसायिक चिठ्ठी	१३६
१६.	नाग पञ्चमी कै कथा	१४६

पाठ १

मन कै धनी

१ एक बहुत बड़ा गाँव रहै। ऊ गाँव के नाँव मिलनपुर रहै। मिलनपुर मा बहुत धनी मनई रहत रहैं। ऊ गाँव मा एक बहुत गरीब परिवारौ रहत रहै। गरीब परिवार कै घर गाँव से कुछ दुरी पर रहै। उनलोग कै स्वभाव बहुत बढ़िया रहै। उनलोग मिलिके गाँव मा रहै के चाहत रहैं, लेकिन ऊ गाँव के अउर आदमी लोग उनका गरीब जानिके गाँव मा रहै नाय देय चाहत रहैं।

२. गाँव कै आदमी लोग ऊ बेचारा गरीब का गरियावैं-मारैं, उसे लड़ाईझगड़ा करत रहैं। यिके अलावा गाँव छोड़के जाहू का कहत रहैं। तब ऊ आदमी कहत रहै कि हम यी गाँव छोड़िके कहा जाई ? हम गाँव छोड़िके कहूँ न जइबै। तबहू गाँव के आदमी लोग उनका भगावै चाहत रहैं। फिर एक दिन गाँव कै आदमी लोग ऊ बेचारा गरीब परिवार का गाँव से भगावै लागे। तब, ऊ फिर कहिस कि हम गाँव छोड़िके कहूँ न जइबै।

३. एक दिन कै बात होय। मिलनपुर गाँव कै सब आदमी उकै घर जलावै के सल्लाह करिन। यिके बाद वही दिन राति मा जाय के उकै घर जराय दिहिन। यी सब देखिके ऊ गरीब परिवार का बहुत दुःख लाग। संसार मा हमार कोइ आपन नाय है अउर अपने मन मा सोचै लाग, "हम इतना गरीब काहे हन।" अगर गरीब न रहित तो सब कोई हमहू का सहयोग करतीं। काहे हमार घर जलाय के हमका गाँव से निकारा करतीं ?

४. कुछ देर बाद मिलनपुर कै आदमी लोग उनका जाव जाव कहै लागें। तब ऊ गरीब परिवार बेचारा कहै लाग कि आज हमका यहीं रहै देव, काल्ह यी गाँव छोड़ के चले जइबै। तब गाँववाले कहिन कि आज रातिकै मोहलत दीत हन। काल्ह हियां से चले जायौ। अत्ता बाति कहिकै मिलनपुर के सब आदमी लोग अपने अपने घर का चले गयें।

५. ऊ गरीब परिवार बेचारा भोरहेन आपन घर परिवार कै सब बाल बच्चेन का बटोर के गाँव से निकल चला । साँझ होत खन एक दुसरे गाँव मा पहुचा । ऊ गाँव कै नाम किसानपुर रहै । ऊ गाँव मे जाइके गरीब बेचारा छोटमोट घर बनाय के रहै लाग । तब ऊका किसानपुर गाँव के आदमी लोग कुछ नाय कहिन । ऊ गाँव मा कोइ उनका गरीबौ नाय कहै । ऊ गाँव मा सब आदमिन के साथे मिलिकै रहै लागें औ एक दुसरे का सहयोगौ करै लागें । यी बाति जब मिलनपुर के आदमी लोग सुनिन तो ऊ लोग बहुत गुस्सानें । उनका नीक नाही लाग । तब मिलनपुर कै सब आदमी मिलिकै किसानपुर गाँव मा गयें ।

६. किसानपुर गाँव के आदमिन से कहिन,"यी गरीब परिवार का काहे किसानपुर गाँव मा रहै के दिहे हौ ? किसानपुर से जल्दी से जल्दी निकाल देव ।" यी बाति किसानपुर कै लोग सुनिन तो बहुत गुस्साय गयें अउर कहिन,"हमलोग किसानपुर गाँव से न निकाला जाई । मिलनपुर मा सब कोई धनी होइहैं । हमरे किसानपुर मा सब कोई गरीबै हैं अउर सब कोई धनी हैं । धनी अउर गरीब मिलिके बइठे हैं । तोहरे मिलनपुर के तना हमरे किसानपुर गाँव मा धनी अउर गरीब के बीच भेद नाय होत है । तुम लोग अपने गाँव जाव, यी गरीब परिवार हमरेन गाँव किसानपुर मा रहिहैं ।" यिके बाद किसानपुर मा ऊ गरीब परिवार सुख से रहै लाग अउर मिलनपुर के आदमी लोग अपने गाँव मा चले गयें ।

७. एक दिन कै बाति होय । ऊ गरीब आदमी जङ्गल मा गवा रहै । ऊ जङ्गल मा बिरवा के उपर चढ़िके लकड़ी काटै लाग । एकछिन के बाद ऊका भूखपियास लाग गवा । तब ऊ, बिरवा पर से उतरिके नदी के किनारे गवा । नदी मा हाथ गोड़ धोय के बिरवा के नीचे बइठा औ खाना खाय लाग । खाना खाय के बाद एकछिन बिरवा के नीचे आराम करिस ।

८. यही बीचे वकर नजर भाठा पर गवा । ऊ भाठा मा एक बटुला देखान । ऊ वहि बटुला का खोदिस अउर खोल के देखिस, तब ऊमा सोना चाँनी, हीरा, मोती से बटुला भरा रहै । ऊ गरीब आदमी बटुला का अपने घरे लइ गवा अउर सोचिविचारिकै कहिस,"यी बटुला हमार न होय । यी बटुला मिलनपुर इलाका मा मिला है । यही नाते यिका मिलनपुर के राजा का देय के परी ।"

९. यिहै सोचिकै ऊ बटुला लइकै राजा के दरबार मा गवा औ राजा से कहिस,"राजा साहेब ! यी बटुला हम जङ्गल मा पाये हन । यिमा खाली सोना चाँनी, हीरा, मोती भरा है । हम यी बटुला महाराज का देय आये हन । महाराज, यी बटुला लिहा जाय ।"

१०. मिलनपुर कै राजा उकै इमानदारी देखिकै बहुत खुश भयें अउर कहै लागें,"तुम बहुत

इमानदार हौ । बतावो तुम का चाहत हौ ?" तब गरीब आदमी बेचारा बोला,"हम्मै कुछ नाही चाहीं, खाली आप यी सोना चानी सहित कै बटुला लइ लेव ।" तब राजा बोले, "अब तुम मिलनपुर मा खुसी के साथ आइकै बइठि सकत हौ ।" राजा कै बाति सुनिकै गरीब किसान कहिस,"सरकार मिलनपुर गाँव मा खाली धनी लोग रहत हैं । अइसन गाँव, गाँव के परिभाषा मा नाही आय सकत । गरीब लोगन का यिहां नाही रहै दिहा जात है । वहू मा सब से बड़ी बाति हम्मै दुःख के समय मा किसानपुर कै लोग आपन मानिन औ अपने गाँव मा रहै कै जगह दिहिन । यही नाते हम वहीँ रहै चाहित हन ।" यत्ता कहिकै राजा का नमस्कार कइकै गर्व के साथ किसानपुर के तरफ चलि परा ।

११. मिलनपुर कै राजा अपने गल्ती पर पछितावा करत मन कै धनी वहि गरीब किसान का देखतै रहि गयें ।

शब्दार्थ

रहै :	रहा
मा :	मे
हुआँ :	उहाँ
काल्ह :	काल्हि
उनलोग :	ऊ लोग
नाय :	नाही
करतीं :	खातिर
चाँनी :	चाँदी
यिके :	यकरे
छोड़िके :	छोड़के
जइबै :	जाबै
अत्ता :	यतना
उकै :	वनकै
सब कोई :	सब केहु

बिरवा :	पेड़
ऊमा :	वहमा
यिका :	येकां
गवा :	गै
यिमा :	यहमा
बइठि :	रहि
बताव :	बतावो
यत्ता :	यतना
तुम लोग :	तोहरे लोग

अभ्यास

सुनाई

१. लोक कथा कै पहिला औ दुसरा अनुच्छेद साथी से सुनि कै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) गरीब परिवार कै घर गाँव मा रहै ।

(ख) उनलोग कै स्वाभाव बहुत बढ़िया रहै ।

(ग) तब ऊ आदमी कहत रहै कि हम यी गाँव छोड़के चला जाबै ।

(घ) तबहूँ गाँव के आदमी लोग उनका भगावै चाहत रहैं ।

(ङ) तब, ऊ फिर कहिस कि हम गाँव छोड़के कहूँ न जइबै ।

२. पाठ के तिसरा औ चउथा अनुच्छेद का सुनिकै लिखा जाय ।

३. पाठ के अठवाँ, नववाँ औ दशवाँ अनुच्छेद का सुनिकै वोकर मुख्य बात बतावा जाय ।

४. पाठ के तिसरा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ यहि किसिम के कवनो घटना कै बर्णन करा जाय ।

५. नीचे दिहा पाठ का ध्यानपूर्वक सुनिकै उत्तर बतावा जाय ।

एक देश मा एक ठू जङ्गल रहै । वहि जङ्गल मे ढेर कुल जनावर औ पशु पंछी जइसै बाघ, भालू, हिरन, कोयल, सुग्गा आदि रहत रहें । वही जङ्गल मे सियार औ गदहौ रहत रहें । वही मे गदहा औ एक सियार मे बहुत दोस्ती रहा । दूनौ साथ-साथ रहत रहें औ बाटिचूटिकै खात रहें । सन्झा के समय मीठ-मीठ खिस्सा कहनी कहिके बितावत रहें । एक दिन सन्झक समय वन्हरे एकठू किसान के बेह्वा मे गयें । बेह्वा मे काकर खुब फरा रहा । यहर-वहर देखिके दूनौ वेह्वा मे हलें औ पेट भर काकर खाइन । दुसरेव दिन फिर दूनौ वहीं काकर चोरावै गयें औ पेटभर खाइन । यहि किसिम से वन्हरे रोज काकर खाय के नाते बहुत खुश भयें औ मोटायिउ गयें । बिना दुःख किहे खाय के पावै के नाते ऊ दूनो बहुत खुश रहैं । एक दिन बेह्वा मे दूनौ काकर खातै रहें कि गदहा का गाना गावै कै मन लाग । ऊ अपने सङ्हरिहा सियार से कहिस "मीता हम्मै एकठू गाना गावै के मन लागत है ।" यी सुनि कै सियार आश्चर्यचकित होत कहिस "नाही ! यी तो नाइ होई । काँकर कै मालिक कहूँ जानि गै तो हम्मन का बहुत मारी । यहि नाते चुप्पय काँकर खाइके लउटि चला जाय ।" सियार कै बाति गदहा के मने नाही बइठा औ कहिस "कइसन बाति करत हौ, तूँ ? यतना रातिके जानि पाई ? हम तो बिना गाये नाई रहब ।" सियार बोला

"मीता, तोहार बोली बहुत कड़ा है । यहि नाते तूँ न गावो । बेह्वा कै मालिक कहूँ सुनि लिहिस तौ ठीक नाई होई ।" गदहा कहिस

"आवाज के बारेम तुहै का मालुम ? तु तो खाली हुवांयके भर सुने हौ । गीत औ सङ्गीत के बारेम तुहैं कुछ नाई पता है । यी आनन्द कै समय मे नाही गाइब तब फिर कब गाइब ?"

सियार सोचिस गदहा बिना गाये नाई रही । वह नाते ऊ कहिस, "तूँ गाना गइबै करबो तो रुकौ हम दूर जाइकै लुकाय जाई तब गावो । यतना कहिकै सियार लुकाय चला गै औ गदहा गाना गावै लाग ।

(क) के से के से दोस्ती रहा ?

(ख) बेह्वा मे काव खुब फरा रहा ?

(ग) एक दिन बेह्वा मे काव करत के गदहा का गाना गावै कै मन लाग ?

(घ) सियार काव सोचिस ?

(ङ) सियार औ गदहा के सोच मे आप का कवन अन्तर मिला ?

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का सब जने ठीक से वसरीपारी बोला जाय :

स्वभाव स्‌व भा व

जलावै, बच्चेन, भोरहेन, जङ्गल, नमस्कार

२. कथा के आधार पर यी वाक्य के केका कहिस है ? बतावा जाय ।

(क) हम गाँव छोड़िके कहूँ न जइबै ।

(ख) आज रातिकै मोहलत दीत हन, काल्ह हियाँ से चले जायौ ।

(ग) यी गरीब परिवार का काहे किसानपुर गाँव मा रहै के दिहे हौ ?

(घ) हमरे किसानपुर मा सब कोई गरीबै हैं अउर सबकोइ धनी हैं ।

(ङ) तुम लोग अपने गाँव जाव, यी गरीब परिवार हमरेन किसानपुर गाँव मा रहिहैं ।

(च) हम यी बटुला महाराज का देय आये हन ।

(छ) गरीब लोगन का यिहाँ नाही रहै दिहा जात है ।

३. पाठ के आधार पर गरीब किसान से सम्बन्धित मुख्य मुख्य बातिन का बुँदागत रूप मे टिपोट कइकै कक्षा मे सुनावा जाय ।

४. "गाँव के परिभाषा मे मिलनपुर गाँव नाही किसानपुर गाँव आवत है ।" यहि विषय मे अपने साथिन सङ्हातिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

५. अवधी समाज मा कहिसुनि जाय वाला लोककथन मध्ये कवनो एक कथा का बुँदागत रूप मा तयार करा जाय औ वही के आधार पर कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा तिसरा अनुच्छेद तेजी से पढा़ जाय औ ओका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति, यति औ लय के साथ पाठ के छठवाँ अनुच्छेद का सस्वर वाचन करा जाय ।

३. पाठ का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

(क) कथा के अनुसार गरीब परिवार पहिले कवने गाँव मे रहत रहा ?

(ख) गाँव वाले काहे गरीब परिवार कै घर जराय दिहिन ?

(ग) किसानपुर गाँव कै लोग मिलनपुर गाँव के लोगन से काव कहिन ?

(घ) मिलनपुर कै राजा काहे बहुत खुश भयें ?

(ङ) मिलनपुर गाँव, गाँव के परिभाषा मा काहे नाही आय सकत है ।

(च) गरीब परिवार किसानपुर गाँव से मिलनपुर गाँव जाय के काहे नाही तयार भवा ?

लिखाई

१. नीचे दिहा शब्दन कै अर्थ बुझिकै वाक्य मा प्रयोग करा जाय ।

परिवार, परिभाषा, भाठा, बटुला, भोरहेन, इमानदार

२. पाठ के सतवाँ अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।

३. यहि लोक कथा से का कइसन शिक्षा मिलत है ?

४. सप्रसङ्ग व्याख्या करा जाय ।

(क) हमरे किसानपुर मा सब कोई गरीबै हैं अउर सब कोई धनी हैं ।

५. अपने परिवार मे केहु से पुछिकै एक लोक कथा लिखा जाय औ गुरूजी का देखावा जाय ।

६. नीचे दिहा अनुच्छेद ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

एक हराभरा जङ्गल मे तमाम पशु-पंक्षी रहत रहें । वमहे एक हिरन, एक विलारि, एक खरहा औ एक ठु मुस मे बहुत दोसाई रहा । चारो ओर जङ्गल भर मे यी लोग कै दोसाई कै खुब चर्चा रहा । वहि जङ्गल के बीच मे एक ठू नदी बहति रही । एक दिन नदी मे भयङ्कर बाढि आय गै । चारो दोसन का नदी पार करै के रहा लेकिन पउरै के न आवै के नाते सब लाचार रहें । उलोग नदी के किनारे खड़ा होइकै नदी पार करै कै उपाय सोचै लागें । यतने मे एक खचुहा पउरत देखाय परा । खचुहा से चारो जने कहिन, "हम्मन के यहि पार से वहि पार कइसौ पहुचाय देतेव ।"

खचुहा राजी भवा । चारो दोस वकरे पीठ पर बइठें । खचुहा नदी मे थोरै दूरि जाय कै रुकि गवा औ कहिस,"हम थकि गयन । चारो जने कै बोझ नाही सहि पाइत हन । कहूँ हमहू न बुड़ि जाई । यही नाते एक जने उतरि जातेव तो नीक रहा ।" खचुहा कै यी बाति सुनिकै

हरिन बिलारि के ओर, बिलारि खरहा के ओर ताकिस । खरहा एकाएक अपने पंजा से मूसे पर झपट्टा मारि कै नदी मे ढकेलि दिहिस । मूस नदी मे बहि गै ।

अब के बचे हिरन, बिलारि औ खरहा । खचुहा धीरे-धीरे आगे बढ़ै लाग । कुछ दूर नदी मे चलिकै उ रुकि गै औ कहिस "भाई हम थकि गये हन । यदि एक जने आउर घटि जाव तो काम चलि सकत है ।" अबकी हिरन बिलारि के ओर देखिस, बिलारि खरहा के ओर देखिस । खरहा यहर वहर तकतै रहा कि यतने मे बिलारि खरहा का नदी मे ढकेलि दिहिस । खरहा नदी मे बुड़ै लाग ।

अब बचे हिरन औ बिलारि । यहि दूनौ के खचुहा पीठि पर लादि कै चलि दिहिस । बीच नदी मे पहुचिकै खचुहा फिर बोला,"हे भाई हम्मै किनारे तक अबहिउ पहुचब मुश्किल लागत है । अबकी बिलारि हरना के ओर ताकिस तो लेकिन वकरे तकतै हिरन सीङ से मारि कै बिलारि का पानी मे गिराय दिहिस औ बिलारि बाढि मे बहि गई ।

खचुहा हिरन के लइकै आगे बढा । नदी पार करै के एक चौथाई बाकी रहा । यतने मे खचुहा फिर रुकि कै कहै लाग "भाई हिरन, हम तोहार बोझ नाही सहि पाइत हन ।" यतना सुनतै हिरन डेराय गै औ कहै लाग, "यी काव कहत हौ । हमरे चारो जने का बुड़ावै खातिर अपने पिठिया पर चढाये रहेव । " खचुहा जबाब दिहिस, "हम तोहरे चारो जने का सच्चा दोस जानिकै पिठिया पर बइठाये रहेन लेकिन तोहरे पक्का दोस तो नाही पक्का स्वार्थी जरुर निकरेव । यदि तोहरे अपने-अपने दोस के खातिर जान देय कै बाति करतेव तो सब का उतारि दीत ।" खचुहा कै बाति सुनिकै हरना पछिताय लाग औ सोचिस निस्वार्थ भावना के साथ आपन जान संकट मे डारिकै दुसरे कै जान बचाई । खाली अपने खातिर परेशान न रही ।

(क) केकरे केकरे बीच बहुत दोसाई रहा ?

(ख) चारो दोस काहे नाते लाचार रहें ?

(ग) खरहा एकाएक केकां झपट्टा मारि कै नदी मे ढकेलि दिहिस ?

(घ) खरहा नदी मे बुड़ै के बाद खचुहा के पीठ पर के के बचें ?

(ङ) खचुहा कै बाति सुनिकै हिरन काहे पछिताय लाग ?

७. दिहा प्रश्न कै विस्तृत रूप मे जवाफ लिखा जाय ।

(क) "मिलनपुर कै राजा अपने गल्ती पर पछितावा करत मन कै धनी वहि गरीब किसान का देखतै रहि गयें ।" यहि वाक्य से आप का बूझा जात है ? लिखा जाय ।

व्याकरण

पदसङ्गति

१. नीचे रेखाङ्कित क्रियापद भूतकाल कै होय, वनकै वर्तमान रूप पहिचान कइकै कापी मे उतारा जाय ।

बहुत समय पहिले कै बाति होय, एक राजा रहें । उनका राजा बने लगभग दस सालि होई गवा रहा । पहिले पहिले उनका राजकाज सम्हारै मे कउनो परेसानी नाही आवा । वकरे बाद एक मरतवा अकाल परा । वही सालि लगान न के बराबर आवा ।

राजा का यिहै चिन्ता हमेशा सताये रहत रहा,"खर्चा कइसै घटावा जाय । ताकि कवनो दिक्कत न होय ।" वकरे बाद उनका यिहै आशंका रहै लागि । कहुँ फिर न यहू सालि अकाल न परि जाय । अब उनका पड़ोसी राजौ लोग से डेर लागै लागि कहुँ मवका मिलाई कै हमला न कइ देयँ ।

एक बेर वयँ अपने कुछ मन्त्रिन का अपने खिलाफ षडयन्त्र रचत रंगे हाथ पकरि लिहे रहें । राजा का चिन्ता के कारण नींद नाही आवत रहा । भूखौ कम लागत रहा । शाही मेज पर सैकडौं पकवान परोसि जात रहा लेकिन वयँ दुइ-तीन कवर से बेसी नाही खाय पावत रहें ।

राजा अपने शाही बाग के माली का देखत रहें । ऊ बड़े स्वाद से प्याजि औ चटनी के साथे सात-आठ ठु मोटि-मोटि रोटी खाय लेत रहा । राति के लेटत भरेम मस्त नींद मे सोय जात रहा । सकारे कइउ बेर जगावै के बादै उठत रहा । राजा का वोका देखिकै जलन होत रहा । एक दिन दरबार मे राजा कै गुरु आये । राजा आपन सारा समस्या गुरु के सामने जाहिर किहिन । गुरु बोले, "वत्स यी सब राजपाट के चिन्ता के कारण होय, येका छोड़ि देव या अपने बेटवा का सउपि देव, तोहार नींद औ भूखि वापस आय जाई ।"

२. पाठ कै तिसरा अनुच्छेद मे भवा भूतकाल के क्रिया पद का रेखा खीचिकै चिन्हित करा जाय ।

३. नीचे के क्रियापद मध्ये भूतकाल कै क्रियापद कवन होय ?

(क) हम पाठ पढ़ेन ।

(ख) तोहरे लोग घरे गयौ ।

(ग) गोपाल जी लिखत हैं ।

(घ) वन लोग नाचिन ।

(ङ) तोहरे लोग जाबौ ।

(च) आप लोग खुब नाच्यौ ।

(छ) ऊ लोग भात खाइन ।

४. भूतकाल कै क्रियापद प्रयोग कइकै अपने परिवार कै बयान करा जाय ।

५. भूतकाल कै क्रियापद प्रयोग कइकै कवनो घटना के बारे मे एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

६. नीचे के तालिका मे भूतकाल के हरेक पक्ष पर आधारित कुछ क्रियापद दिहा हैं । हरेक का अपने कापी मे लिखा जाय औ गुरुजी का देखावा जाय ।

सामान्य भूतकालीन पक्ष

कर्ता	पुरूष	धातु/प्रत्यय = क्रिया पद	उदाहरण	कैफियत
आप	दूसर	नाच् +यौ = नाच्यौ	आप खुब नाच्यौ ।	अकर्मक क्रिया
आप लोग	दूसर	नाच् +यौ = नाच्यौ	आप लोग खुब नाच्यौ ।	अकर्मक क्रिया
ऊ	अन्य	खा + इस = खाइस	ऊ भात खाइस ।	सकर्मक
वैं/ऊ लोग	अन्य	खा + इन = खाइन	वैं भात खाइन । ऊ लोग भात खाइन ।	सकर्मक

अपूर्ण भूतकालीन पक्ष

कर्ता	पुरूष	धातु/प्रत्यय = क्रिया पद	उदाहरण	कैफियत
हम	प्रथम	पढ +तै+रह+एन = पढतै रहेन	हम पाठ पढतै रहेन ।	

आप	दूसर	लिख्+तै+रह्+एव = लिखतै रहेव	आप पाठ लिखतै रहेव ।	
आप लोग	दूसर	लिख्+तै+रह्+एव = लिखतै रहेव	आप लोग पाठ लिखतै रहेव ।	
ऊ/यी	अन्य	खेल्+तै+रह्+आ = खेल्तै रहा	ऊ/यी खेल्तै रहा ।	
वैं/ऊ लोग/उन लोग	अन्य	खेल्+तै+रह्+एं = खेल्तै रहें	वैं खेल्तै रहें । ऊ लोग/उन लोग खेल्तै रहें ।	

पूर्ण भूतकाल

कर्ता	पुरूष	धातु/प्रत्यय = क्रिया पद	उदाहरण	कैफियत
हम लोग	प्रथम	पढ् +इ+भऐ+रहेन = पढ़ि भै रहेन	हम लोग पाठ पढ़ि भै रहेन ।	
तूँ/तुम	दूसर	पढ् +इ+भऐ+रहेव = पढ़ि भै रहेव	तूँ/तुम पाठ पढ़ि भै रहेव ।	
ऊ/यी	अन्य	पढ् +इ+भवा+रहा = पढ़ि भवा रहा	ऊ/यी पढ़ि भवा रहा ।	
वैं/ऊ लोग/उन लोग	अन्य	पढ् +इ+भवा+रहें = पढ़ि भवा रहें	वैं पढि भवा रहें । ऊ लोग/उन लोग पढ़ि भवा रहें ।	

अभ्यस्त भूत पक्ष

कर्ता	पुरूष	धातु/प्रत्यय = क्रिया पद	उदाहरण	कैफियत
हम	प्रथम	पढ् +अत्+रह्+एन = पढत रहेन	हम पाठ पढ़त रहेन ।	

आप	दूसर	पढ् +अत्+रह्+एव = पढ़त रहेव	आप पाठ पढ़त रहेव ।	
भाई	अन्य	पढ् +अत्+रह्+आ = पढ़त रहा	भाई पाठ पढ़त रहा ।	
बहिनी	अन्य	पढ् +अत्+रह्+ई = पढ़त रही	बहिनी पाठ पढ़त रही ।	
ऊ	अन्य	पढ् +अत्+रह्+ई = पढ़त रही	बहिनी पाठ पढ़त रही ।	

७. नीचे दिहा वाक्य भूतकाल कै कवन पक्ष होय, लिखा जाय ।

(क) बिटियवै पाठ लिखत रहीं ।

(ख) निर्मला पाठ पढ़े हीं ।

(ग)तोहरे लोग पाठ लिखि भै रहेव ।

(घ) ऊ लोग पाठ पढ़त रहें ।

(ङ) हम पाठ लिखे हन ।

(च)राम विद्यालय गवा ।

८. लिख् धातु प्रयोग कइकै भूतकाल के हरेक पक्ष कै एक/एक वाक्य लिखा जाय ।

सिर्जनात्मक/ परियोजना कार्य

१. आप के गाँव मे तत्काल घटा कवनो घटना समेटिकै एक कथा लिखा जाय ।

२. अपने घर पर सुना कवनो लोककथा ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय औ कक्षा मे सुनावा जाय

पाठ
२

विश्वेश्वर प्रसाद स्वर्णकार

१. सवैया

बौरि विशाल लिये नव पल्लव कोकिल कीर अलापि सुनावै ॥

चातक पीव रटै निसवासर फूलि पलासन लूक लगावै ॥

गूंजि मलिन्द रहे अरबिन्द समूह प्राण तड़ावन पावै ॥

त्यो विरही दु:ख दै न विश्वेश्वर मै न मही मत सैन सजावै ॥

२. सवैया

आय गयो रितु राज समाजन लै वन वागन जोर जनावै ॥

गूजत भौर मतंगन के गन घूमत पौन तुरंग सुहावै ॥

कोकि लकीर कपोतन के धुनि मोहि विश्वेश्वर नेक न भावै ॥

अर्ज यही सुन गर्ज सखी पर प्रीति मैं बर्ज विदेश न जावै ॥

३. कवित्त

आयो रितु राज-गाज परे गो हमारे
जान-मान ना रहेगी गुमान नरसत है ॥
फूलि उठे किन्सुक कदम्ब अम्ब बौरन पै
भौरन की भीर रस हेत फगरत है
बोलत न कीव वैन छोलत हिये को पिक
डोलत सुगन्ध सुचि पौन सरसत है ।
विश्वेश्वर प्रसाद कहे मेरी तेरी सौहवीर
बागन विलोक तौ अंगार बरसतु है ।

४. सवैया (बसंत)

लाल गुलाल को घोरि कै दै भरि कै हमरे कर की पिचकारी ॥
होरी करो तिन के संग मैं पर होरी अबीर को लाव हमारी ॥
हेरहू जाय कहूं गलियन मै लान विश्वेश्वर पावै मुरारी ॥
यो वन बानिक सो बनिकै नित प्यार करे वृषभान दुलारी ॥

५. कवित्त (समस्या)

(दुपट्टा दिये मुख पै)
केलि कुल कौतुक ये सारी रैन कहा देत
बैठी बाल षहा शसि लट्टा किये तूष पै ॥
प्यारी नट वट्टा होय प्रीतम के पहामहि
प्रेम के लपटा मै छपट्टा किये सुख पै ॥
मयन के चपट्टा मे विश्वेश्वर प्रसाद कहै
येकही रपट्टा धाह अट्टा लिये दुख पै ॥
काट्ट हसी ठट्टा में लुमान मन मोह के
भफट्टा मे दुपट्टा दिये मुख पै ॥

६. पद

कब मिलि हो गिरवर गिरधारी ॥

माखन खायो दही दरकायो गउवा चरांयेव जमुना करारो ॥ कब मिलि हो.....

बंशी बजाय के राग सुनायेव कर कर जाय किहो बरुवारी ॥ कब मिलि हो.....

गोपिन संग रास रच डारेव वृन्दाबन के मंझारी ॥ कब मिलि हो.....

कहत विश्वेशर चरण शरण में दर्स देहुँ अभिलाष हमारी ॥ कब मिलि हो.....

शब्दार्थ

रितुराज :	वसन्त ऋतु
बौरि :	आम कै फूल, बन फूल
कीर :	तोता, सुग्गा
अलापि :	अलाप, कीरन/चिरई कै आवाजि, राग , कलरव
लूक :	तपन, अग्नि कै ज्वाला, उल्का, गरम बयारि
मलिन्द :	भँवरा, उपनाम
तड़ावन :	देखावटी, छलकपट, आडम्बर, नसिहत देय के सोच
सैन :	संकेत, लक्षण, चिन्ह, सेना
भौर :	पानी कै आवर्त, तरङ्ग, भवरा
मतंगन :	बादर कै समूह, मेघ, एक ऋषि जे शबरी कै पुत्र रहें
पौन :	पवन, वायु, हवा
कोकि :	मादा चकवा, मादा कोयल
कपोतन :	कबुतर, कबुतर जेस भूवर रङ्ग कै
बर्ज :	मनाही, रोकब
नरसत :	सखा, मानव बन्धु, नारायण

किन्सुक : एक किसिम कै पेड़(विरवा)

कदम्ब : भाँदव महीना गोलाकार पियर फूल फुलाय वाला छाँयादार वृक्ष

अम्ब : अमरुत

बौरन : मञ्जरी, फूल कै गुच्छा

फगरत : उडब, मेड़राब

सरसत : सरसराब, फइलब

सौहवीर : दोस्ती, आत्मियता,

बानिक : वेश, श्रृङ्गार, सजधज,

शसि : चन्द्रमा, चन्द्रकला, चन्द्रकिरण

पहामहि : अड्ना, नजदिक, याद

धाह : ताप, चिल्लाई कै रोइब

अट्टा : अटारी, मचान, अअट्टालिका ।

काट्ट : धूर्त, कपट

लुमान : लटकब

दरकायो : आवश्यकता देखाइब, फाटब, जरुरत, गिराइब

बरुवारी : शक्ति कै प्रदर्शन, शक्तिशाली, जबरजस्ती बल-प्रयोग

अभ्यास

सुनाई

१. कविता कै दुसरा औ तिसरा पद्यांश का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) नव पल्लव के साथ विशाल पेड़ मे बउरि आय चुका है ।

(ख) चातक निसदिन पिव पिव नाही रटत है ।

(ग) फुलान पलास जी मे तपन पयदा करत है ।

(घ) भवरन कै समूह फूल पर गूँजत देखिकै मन तड़फत है ।

(ङ) हे विश्वेश्वर यहि विरहणी का यहि किसिम से दुःख न देव ।

२. पद्यांश दुइ का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ उल्लेख भवा ऋतुराज के बारे मा अपने शब्द मे कहा जाय ।

३. कविता के चउथा पद्यांश का ध्यानपूर्वक सुनिकै वहमा कहा बातिन का कक्षा मे सुनावा जाय ।

४. कविता कै पचवाँ पद्यांश कै श्रुति लेखन करा जाय ।

५. नीचे दिहा कविता ध्यानपूर्वक सुना जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

हाथ मथनी, अम्मक शोभा

देखि मस्का, मन खोब लोभा

आउर बनावैं, घिउ औ दहीउ

अम्मा कहानी, खोब कहीउ ॥

हाथेक शोभा, लागै मथनी

गहना नीक लागै, नथुनी

बप्पा खेतेम गाड़ै अन्टा

साँझ सुबेरे, कतना टन्टा ॥

(क) अम्मा के हाथ कै शोभा काव होय ?

(ख) अउर काव काव बनत है ?

(ग) कवन गहना नीक लागत है ?

(घ) खेतेम काव गाड़त हैं ?

(ङ) कवने समय टन्टा होत है ?

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्द वसरीपारी ठीक से बोला जाय ।

तड़ावन-तड़ावन

मलिन्द, मतंगन, पौन, कोकि, कपोतन

२. यहि पद्य के अर्थ के बारे मे अपने साथिन के बीचे छलफल कइकै निकरा निष्कर्ष कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

सवैया (बसन्त)

लाल गुलाल को घोरि कै दै भरि कै हमरे कर की पिचकारी ॥

होरी करो तिन के संग मैं पर होरी अबीर को लाव हमारी ॥

हेरहू जाय कहूं गलियन मै लान विश्वेश्वर पावै मुरारी ॥

यो वन बानिक सो बनिकै नित प्यार करे वृषभान दुलारी ॥

३. पाठ मे दिहा कविता कवने विषय पर लिखा है आपन आपन विचार पेश किहा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा पचवाँ पद्य का तेजी से पढ़ा जाय औ ओका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति, यति औ लय के साथ पाठ कै तिसरा पद्य सस्वर वाचन करा जाय ।

३. नीचे दिहा पद्यांश का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ दिहा पद्यांश कै अर्थ बतावा जाय ।

पद

कब मिलि हो गिरवर गिरधारी ॥

माखन खायो दही दरकायो गउवा चरायेव जमुना करारो ॥ कब मिलि हो.....

बंशी बजाय के राग सुनायेव कर कर जाय किहो बरुवारी ॥ कब मिलि हो.....

गोपिन संग रास रच डारेव वृन्दाबन के मंझारी ॥ कब मिलि हो.....

कहत विश्वेशर चरण शरण में दर्स देहुँ अभिलाष हमारी ॥ कब मिलि हो.....

लिखाई

१. पाठ के अन्तिम पद्य कै सारांश लिखा जाय ।

२. "वसन्त ऋतु" कविता कै मुख्य सनेश काव होय ? लिखा जाय ।

३. वसन्त ऋतु शीर्षक पर अपने आसपास कै वर्णन करत दुइ पद्य लिखा जाय ।

४. कविता पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) रितु राज कहिकै कवि कवने ऋतु कै वर्णन किहे हैं ?

(ख) कवन कवन पेड़ फुलान हैं ?

(ग) आम के पेड़ पर काव आय चुका हैं ?

(घ) विश्वेशर लाल गुलाल पिचकारी हाथ मे लिहे केकरे खोज मे गलियन मा घूमत हैं ?

(ङ) सब से अन्तिम पद्यांश मे कवि केका अपने चरण शरण मे लेय कै आराधना करत हैं ?

५. दिहा पद्यांश कै व्याख्या करा जाय ।

आय गयो रितु राज समाजन लै वन वागन जोर जनावै ॥

गूजत भौर मतंगन के गन घूमत पौन तुरंग सुहावै ॥

कोकि लकीर कपोतन के धुनि मोहि विश्वेश्वर नेक न भावै ॥

अर्ज यही सुन गर्ज सखी पर प्रीति मैं बर्ज विदेश न जावै ॥

व्याकरण

१. उपयुक्त लेख्य चिन्ह लिखिकै यहि अनुच्छेद का ठीक किहा जाय ।

अञ्जली का अस्पताल के बिछौना पर जबजब होश आवत रहा तब यिहै सवाल पुछत रही बप्पा हमार घर कहाँ होय वोकरे यहि सवाल कै जबाब सायद केहु के पास नाही रहा । यहिसे सब लोग यिहै कहिकै वोका सान्त्वना दियत रहें जहाँ बप्पा-अम्मा वहीँ तोहार घर....जहाँ तोहार पति, सास-ससूर वहीँ तोहार घर.....जबाब सुनिकै जोड़ से अञ्जली चिल्लया परत रही नाही...

२. **नीचे दिहा अनुच्छेद से नाम औ विशेषण कै अलगअलग सूची बनावा जाय ।**

"सविता कै बियाह होय के निश्चित होय गवा" यी खवर सर्वत्र फइलि गवा । बियाह एक ठू व्यक्तिगत सम्वन्ध कै बाति होयके बादो यी सार्वजनिक चाख कै विषय होय । यहिसे सब कै बियाह कै यत्रतत्र चर्चा होत है लेकिन यी बियाह कै बाति सार्वजनिक चाख होय के नाते कुछ दुसरै रहा । एक ठू अइसै लडकी, जवन सार्वजनिक कल्याण के खातिर जीवन समर्पण करै के सङ्कल्प लइकै औ सम्पूर्ण विश्व का आपन सेवा कै क्षेत्र बनाइकै मानवता कै सेवा करै के चाहत रही । वहिकै बियाह, वोकरे आत्मा विपरीत राहुल से होय जात रहा । सविता जवने कै अर्थ होत है सूर्य, विश्व कै सर्वश्रेष्ठ ग्रह, जवने कै प्रकाश से सम्पूर्ण जगत चराचर जीवन पावत है, विकसित होत है औ आफ्नो सम्पूर्णता का प्राप्त करत है । जवने के अभाव कै कल्पना नाही कइस सका जात है । उहै नाही कइ मिलत है ।

३. **पाँच/पाँच ठु नाम औ विशेषण शब्द लिखिकै गुरूजी का देखावा जाय ।**

४. **विशेषण शब्दन कै प्रयोग कइकै ग्यारह वाक्य मे अपने साथी कै बयान करा जाय ।**

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

१. वसन्त ऋतु शीर्षक पर एक कविता लिखिकै कक्षा मे सुनावा जाय ।

२. वसन्त ऋतु औ अउर ऋतु मे काव फरक देखात है लिखा जाय औ कक्षा मे सुनावा जाय ।

पाठ ३

अवधी भाषा कै उन्नायक पाठकजी

१. विश्वनाथ पाठकजी कै जनम वि.सं.१९९४ साल चइत २३ गते कपिलवस्तु जिला, पिपरा गा.वि.स.कै चाकरचौड़ा मे भा रहा । बाद मे आप कै परिवार यही जिला के धनकौली गा.वि.स. कै पकरेहटा मे जाइकै रहै लाग । पाठकजी के महतारी कै नाँव सूर्या पाठक औ पिता कै नाँव संकर्षण पाठक रहा । अपने मातापिता कै कनिष्ट सुपुत्र पाठकजी खाली ४–५ वरिस तक बापे महतारी कै साथ पाइन । ४ वरिस के उमिर मे महतारी कै साथ छुटा तो पचवे वरिस मे पिताजी सदा के खातिर साथ छोड़ि दिहिन । वकरे बाद पाठकजी अपने बड़े भाई औ २००७ साल कै स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी बलभद्रनाथ पाठक के देखरेख मे पले बढ़े ।

२. पाठकजी कै सुरुवात से लइकै बी.ए. तक कै शिक्षादिक्षा भारत मे भै । गोरखपुर विश्वविद्यालय से वी.ए. करै के बाद प्युठान चला गयें । वहिँकै बाल शिक्षा हाईस्कुल मे अपने पेशागत जीवन कै शुरुवात किहिन । वकरे बाद आप दुइ बरिस तक कपिलवस्तु जिला अन्तरगत कै कृष्णानगर मे अवस्थित महेन्द्र हाईस्कुल मे पढ़ाइन । वकरे बाद आप अर्घाखाची कै जनज्योति हाईस्कुल मे अपने पेशा कै निरन्तरता दिहिन । यहि सिलसिला मे आप त्रिभुवन विश्वविद्यालय से अङ्ग्रेजी से एम.एड. औ राजनीतिशास्त्र से एम.ए. तक कै शिक्षा हासिल किहिन । २०२९ साल मे आई कै आप धनकुटा क्याम्पस मे उप प्राध्यापक के रूप मे नियुक्त भयें । ओकरे बाद २०३१ से लइकै २०३६ साल तक आप वुटवल क्याम्पस मे पढ़ाइन । २०३६ साल मे आप धनकुटा क्याम्पस मे सहायक क्याम्पस प्रमुख के रूप मे नियुक्त भयें । वकरे बाद २०४० साल मे आइकै रामशाहपथ काठमाडौ के शिक्षाक्याम्पस मे अपने पेशागत जीवन कै निरन्तरता दिहिन । अइसै २०४७ से २०५९ तक आप महेन्द्ररत्न क्याम्पस तहाचल मे पढ़ाइन । यही से आप सेवानिवृत्त भयें ।

३. काठमाडौं मे आवै के बाद पाठकजी त्रिभुवन विश्वविद्यालय मे पढ़ावै के साथै अपने मातृभाषा मे काम करै कै सोच बनाइन । यहमा इतिहासकार, पुरातत्त्व औ संस्कृतिविद डा.रामनिवास पाण्डेय, पूर्व सचिव औ जलस्रोतविद पशुपतिप्रताप शाह, संचारविद तपानाथ शुक्ल, पेशा

से इन्जिनियर रामचन्द्र पाण्डेय, विक्रममणि त्रिपाठी, दिग्विजयनाथ मिश्र, श्यामदेव योगी लगायत के लोगन कै साथ मिला ।

४. यही क्रम मे वि. सं.२०५२ साल में आइकै अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद कै गठन भै । नेपाल मे मूल रूप से यही संस्था के समन्वय से पाठ्यक्रम विकास केन्द्र के सक्रियता मे अवधी भाषा कै पढ़ाई विषय के रूप मे आरम्भ भै । जवन कि हरेक अवधीभाषी के खातिर विशेष उत्साह कै बाति होय ।

५. यही किसिम से तत्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान से समन्वय कइकै अवधी भाषा साहित्य औ संस्कृति कै संरक्षण सम्वर्द्धन के खातिर आप अलगअलग किसिम कै काम आगे बढ़ावा गै । यही क्रम मे आप के व्यक्तिगत प्रयास से, यहीं से लगभग २० हजार शब्द कै लघु अवधी शब्दकोश प्रकाशित भै । आप के अगुवाई मे अवधी व्याकरण कै प्रकाशन भै । यही किसिम से अवधी लोक साहित्य कै अलगअलग विधा कै जानकारी संग्रहित करावै के खातिर अलग अलग विद्वान लोगन के द्वारा विद्वतवृत्ति औ लघु अनुसन्धान के माध्यम से अलगअलग काम सम्पन्न किहा गयें । जवन कि आज तक निरन्तरता पाये है । पाठकजी अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद कै संस्थापक महासचिव, वकरे बाद अध्यक्ष औ बाद मे अन्तिम काल तक संरक्षक रहें । यहि हरेक काम मे पाठक जी कै नेतृत्वदायी भूमिका रहा ।

६. लम्मे समय से मधुमेह रोग से पीड़ित गोरखापत्र मे अवधी भाषा कै पृष्ठ संयोजक पाठकजी हृदयघात होय के बाद अस्पताल मे भर्ती भा रहें । प्रारम्भिक रूप मे व्यापक सुधार होय के बावजूद अस्पतालै मे दुसरा हृदयघात होय के नाते आप के स्वास्थ्य मे किडनी लगायत कै व्यापक किसिम कै समस्या देखान । जवन कि आप के मृत्यु कै कारण बना । अवधी संस्कृति कै उन्नायक भाषासेवी अग्रज विश्वनाथ पाठक जी कै निधन वि.सं २०७१ साल चइत २८ गते ७७ वरिस के उमिर मे शहीद गंगालाल हृदय रोग केन्द्र के सघन उपचार कक्ष मे दिन कै २:०० बजे भै ।

७. वरिष्ठ समालोचक औ साहित्यकार डा. गोविन्दराज भट्टराई वनकै याद करत अपने लेख "अवधी भाषाप्रेमी अग्रज विश्वनाथ पाठक" मे लिखत हैं कि युवा, जोश से भरा प्रकाशपुञ्ज से भरिपूर श्री विश्वनाथ पाठक जी से हमार भेट भये ३८ वर्ष होइ चुका है । वहि समय वनकै बार नाही पाक रहा, आज कै हिसाब करत के ४० वरिस कै रहा होइहैं । यी २०३४ साल कै बाति होय । वन लगायत जयराज अवस्थी औ आउर कुछ अग्रजलोग त्रिभुवन विश्वविद्यालय अन्तर्गत शिक्षाशास्त्र संकाय मे एम. एड.(अंग्रेजी) मे दाखिला लिहे रहें । सेमिष्टर प्रणाली रहा । हम वन लोगन से एक वर्ष पाछे २०३५ मे दाखिला लेय के नाते

हम पहिला सेमिष्टर मे रहत के वनलोग तिसरे मे, हम दुसरे मे पहुचत के ऊ लोग चौथे मे पहुचि चुका रहें । वकरे बाद अध्ययन लगायत आउर जरूरत का पूरा करै के बाद मध्यपश्चिम से सेवाकालीन मे आवा पाठक सर कै पुरूब कै धनकुटा मे पदस्थापन होइगै । २०३८ साल अगहन ८ गते त्रिभुवन विश्वविद्यालय कै सहायक प्राध्यापक कै नियुक्ति पत्र लइकै हम धनकुटा वहुमुखी क्याम्पस पहुचेन । पाठकजी सपरिवार आवासगृह मे रहत रहें । लड़िके छोट छोट रहें । एम.ए.समेत होय के नाते हम मानविकिउ मे पढ़ावत रहेन । सिर्जना औ लेखन साथैसाथ चलत रहै । यही नाते हम एकान्त मे रहै चाहत रहेन । पाठकजी प्रशासन मे, नेतृत्व मे, साथी भाइन के समुह मे हँसीखुसी मे जीवन बितावत बहुत दिन तक होष्टल मे रहें ।

८. बाद मे ताहाचल क्याम्पस मे वनकै बदली भै । बाद मे कीर्तिपुर क्याम्पस मे आये । यहूँ वन्हैं प्रशासकीय जिम्मेदारी समेत दिहा गै । हम्मन कै गोष्ठी मे सेमिनार में निरन्तर भेट होत रहै । धीरेधीर प्रज्ञाप्रतिष्ठान के अनेक कार्यक्रमन मे समेत आप कै उपस्थिती बढ़त गै । कलेज मे खास कइकै अङ्ग्रेजी कै उच्चारण विज्ञान पढ़ावत रहें । कक्षा मे बड़े निष्ठा के साथ पढ़ावै वाले मनई, लेकिन बेलायती अङ्ग्रेजी अनुसार उच्चारण करै कै प्रयास करत के बड़ा औ खुला ओठ के नाते तनिक अस्वाभाविक देखाय जाय, दाँत जल्दियै धोखा दइ चुका रहा; कुछ विद्यार्थी हँसै कै प्रयास करैं, कइउबाजी स्वराघात तक नाही मिलै, लेकिन वन निष्ठावान मनई, बिना वास्ता किहे लाग रहत रहें । पाठक सर उपप्राध्यापक भयें । वही पद से बाद मे सेवानिवृत्त भयें ।

९. वकरे बाद आप एकेडेमी के ओर आकर्षित भयें । खास कइकै अवधी भाषाकोश, व्याकरण तयार करै खातिर बड़वारै संघर्ष किहिन । मानकीकरण न होइ चुका भाषा, अनेक भाषिका से युक्तभाषा मे कवनो काम ठोकुवा कइकै पेश करब मुश्किल रहा । लेकिन बिना डेराने, बिना हारे गोष्ठिन मे आपन तर्क धीरेधीर रखतै जात रहें । अवधी समाज मे एक किसिम कै जातीय, भाषिक औ सांस्कृतिक जागरण लावै मे पाठक सर कै महत्त्वपूर्ण योगदान है ।

१०. यही योगदान कै कदर करत संस्कृति मन्त्रालय से दिहा जाय वाला संस्कृति क्षेत्रिय प्रतिभा पुरस्कार, भवानी भिक्षु स्मृति प्रतिष्ठान से दिहा जायवाला २०७१ साल कै भवानीभिक्षु पुरस्कार से पुरस्कृत हैं, तो त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल भारत अवध मैत्री समाज लगायत कै संस्थन के द्वारा पाठकजी का सम्मानित किहा जाय चुका है ।

११. निश्चित रूप से पाठकजी के व्यक्तिगत औ सामुहिक प्रयास से अवधी भाषा संस्कृति के संरक्षण औ सम्बर्धन के खातिर एक आधार तइयार होइ चुका है । पाठक जी कै मेहरारू निमा पाठक, दुइ बेटवै संतोष पाठक, शेखर पाठक औ विटिया विजया पाठक हिन ।

शब्दार्थ

कनिष्ट सुपुत्र :	छोट बेटवा
अवस्थित :	स्थित
सेवानिवृत्त :	अवकास प्राप्त
मातृभाषा :	माई कै भाषा, व्यक्ति कै पहिला भाषा
जलस्रोतविद :	जल शक्ति कै जानकार
गठन :	स्थापना
समन्वय :	एक दुसरे के समझदारी मे
आरम्भ :	शुरुवात
संग्रहित :	संकलित
उन्नायक :	प्रवर्धन करै वाले, शुरुवात करै वाले
समालोचक :	कवनो चीज या विषय कै गुण, दोष औ उपययुक्तता के आधार पर विश्लेषण करै वाले विश्लेषक
प्रकाशपुञ्ज :	प्रकाश कै ज्योति
सेवाकालीन :	सेवा करतै करत
पदस्थापन :	वही पद पर दुसरे क्याम्पस मे बदली
प्रशासकीय जिम्मेदारी :	प्रशासन कै जिम्मेवारी
अस्वाभाविक :	स्वाभाविक रूप मे न होय वाला क्रिया

अभ्यास

सुनाई

१. जीवनी कै पहिला औ पचवा अनुच्छेद साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) विश्वनाथ पाठकजी कै जनम वि.सं.१९९४ साल चइत २३ गते कपिलवस्तु जिला, पिपरा गा.वि.स.कै चाकरचौड़ा मे भा रहा ।

(ख) पाठकजी के महतारी कै नाँव सूर्या पाठक औ बापे कै नाँव संकर्षण पाठक रहा ।

(ग) पाठकजी अपने बड़े भाई औ २००७ साल कै स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी बलभद्रनाथ पाठक के देखरेख मे पले बढ़े ।

(घ) विश्वनाथ पाठकजी के अगुवाई मे लघु अवधी शब्दकोश कै प्रकाशन भै ।

(ङ) विश्वनाथ पाठकजी के अगुवाई मे अवधी व्याकरण कै प्रकाशन भै ।

२. नीचे दिहा पाठ का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ उत्तर बतावा जाय ।

इस्वी सम्बत १९३९ साल १२ जनवरी के दिने गौरा गाँव मे एक बालक कै जनम भै । गौरा गाँव जिल्ला कपिलवस्तु, मायादेवी गाँउपालिका मे परत है । यिहै बालक आगे आइके राम निवास पाण्डेय के नाँव से जाना जाय लागें । वन पढ़ि लिखिकै पुरातत्त्व मे विद्यावारिधिउ किहिन औ नेपाल के पुरातत्त्व औ नेपाली इतिहास लिखै के काम मे विशेष किसिम कै योगदान पहुचावै मे सफल भयें ।

जइसन कि हम्मन का मालुम है । हम्मन कै देश पुरातात्त्विक दृष्टिकोण से बहुत महत्त्वपूर्ण जगहि होय । विश्व कै सबसे पुरान मानव निर्मित हथियार आपै खोज किहा गै रहा । यी बर्दिया जिला के दानव ताल से मिला रहा । यही किसिम से आप दाङ जिल्ला से मध्य पाषाण औ नवपाषाण कालीन सामाग्री प्राप्त किहे रहें । पाषाण काल का नेपाल मे ढुङ्गेयुग के नाँव से जाना जात है ।

पाण्डेयजी पहिला बाजी नेपाल कै प्राचीन इतिहास लिखिन । जवन कि नेपाल कै पुरान इतिहास के बारे मे जानकारी देय वाला एक मात्र किताब माना जात है ।

पश्चिम नेपाल कै इतिहास लिखै वाले पहिला इतिहासकार आपै रहा गै । आप नेपाल के बाइसे चौविसे राज्य कै पहिला बाजी बृहत इतिहास लिखिन ।

धार्मिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण रूरूक्षेत्र कै अध्ययन आपै के सक्रियता मे सुरु भै । ललितपुर के दशनामी सन्यासी लोगन के बारे मे पहिला बाजी आपै अध्ययन किहिन । कपिलवस्तु के पुरातत्त्व के बारे मे आप महत्त्वपूर्ण अध्ययन किहा गै रहा ।

अपने जीवन काल मे आप त्रिभुवन विश्वविद्यालय अर्न्तगत नेपाली संस्कृति औ इतिहास विभाग मे प्रोफेसर औ बाद मे विभागाध्यक्ष के रूप मे काम किहिन । यकरे साथै पाण्डेयजी तत्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान कै आजीवन सदस्य रहें । साथैसाथ आप युनेस्को

कै सदस्य, गुठी संस्थान के सञ्चालन समिति कै सदस्य, सांस्कृतिक संस्थान कै सञ्चालक समिति कै सदस्य के रूप मे आप महत्त्वपूर्ण काम किहे रहें ।

अपने जीवन काल मे आप गोरखा दक्षिण वाहु दोस्रो, राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कार, नूरगंगा प्रतिभा पुरस्कार, सर्वश्रेष्ठ शिक्षक उपाधि, महेन्द्र प्रज्ञा पुरस्कार आदि पदक औ विभूषण से सम्मानित भवा गै रहा । यही सिलसिला मे आप के सम्मान मे मरणोपरान्त आप कै हुलाक टिकट जारी भवा ।

नेपाल के अवधी भाषा के संस्थागत संरक्षण कै काम आपै के सक्रियता मे सुरू भै । आप अवधी सांस्कृतिक विकास परिषद् कै संस्थापक अध्यक्ष रहे । यह परिषद् के अध्ययक्ष पद के पहिले कार्यकाल के बाद आप संस्था के संरक्षक कै जिम्मेवारी जीवनभर निर्बाह किहा गै । डा. पाण्डेय कै मृत्यु वि.सं. २०६१ साल, मङ्सिर १४ गते भै ।

(क) डा. रामनिवास पाण्डेय जी कै जन्म कहा औ कवने सालि में भै ।

(ख) पश्चिमी नेपाल वाइसे चौविसे राज्य कै वृहत इतिहास के लिखे रहा ?

(ग) डा. पाण्डेय अपने जीवनकाल मे कहाँ औ कवने पदपर रहिकै देश सेवा किहिन् ?

(घ) अपने योगदान के खातिर डा. पाण्डेय का कवन कवन सम्मा औ पुरस्कार मिला ?

(ङ) अवधी संस्कृति के संरक्षण औ प्रवर्द्धन मे डा. पाण्डेय कइसै योगदान दिहिन् ?

३. पाठ के सतवाँ औ अठवाँ अनुच्छेद ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ उदाहरण के अनुसार लिखा जाय ।

कनिष्ट, अवस्थित, सेवानिवृत्त, जलस्रोतविद्, समन्वय, आरम्भ, संग्रहित

२. "अवधी समाज मे एक किसिम कै जातीय, भाषिक औ सांस्कृतिकजागरण लावै मे पाठक सर कै महत्त्वपूर्ण योगदान है ।" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय ।

३. आप से परिचित अवधी भाषी समाज के कवनो समाजसेवी के बारे मे बुँदागत रूप मे परिचय तइयार करा जाय औ वही के आधार पर कक्षा मे वनकै परिचय प्रस्तुत करा जाय ।

४. आप के अपने जिला के कवनो समाजसेवी के परिचय के बारे मे बुँदागत रूप मे लिखिकै कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ कै पचवाँ अनुच्छेद तेजी से पढ़ा जाय औ ओका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति, यति औ लय के साथ पाठ के पहिला अनुच्छेद का सस्वर वाचन करा जाय ।

३. नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

महेन्द्र वहुमुखी क्याम्पस पश्चिमी नेपाल कै सब से बड़वार औ पूरान शैक्षिक संस्था होय । जानत हौ, यी के बनवाये रहा ? शिक्षा के यहि मन्दिर का बनवाये रहिन : औतार देवी चौधराइन ।

औतार देवी चौधराइन वहि समय के नेपालगञ्ज कै प्रसिद्ध व्यापारी लक्ष्मी नारायण चौधरी कै मेहरारू रहीं । बाद मे वनकै परिवार अपने नाँव के साथे चौधरी उपनाम जोड़ि लिहे रहा ।

औतारदेवी चौधराइन बहुत समय तक वैवाहिक जीवन नाही बिताय पाइन । कमै उमिर मे वनकै पति लक्ष्मीनारायण चौधरी कै मृत्यु होइ गै । वन बिधवा होइ गईं । वहि समय यइसन लोगन का अवधी समाज मे अबला कहा जात रहा लेकिन मर्दे के मृत्यु के बाद वन समाज सेवा के जवने राहि पर चलीं । वोसे वनही भर नाही, वनके पूरा खानदान कै नाँव अमर होइ गै । वनके वहि सेवा से आज पश्चिमी नेपाल कै मधेश औ पहाड़ क्षेत्र कै सारा समाज लाभ पाये है ।

ऊ विधवा नारी जेकां आजौ हम्मन कै समाज 'अबला' के रूप मे जानत रहा । आपन सारा सम्पत्ति समाज सेवा मे लगाय दिहिन । वन विक्रम सम्वत १९९३ साल मे अपने पति स्वर्गीय लक्ष्मीनारायण चौधरी के यादगारी मे 'नारायण शिक्षा प्रसार योजना'कै शुरूवात कराइन । यी कार्यक्रम नेपालगञ्जै कै प्रसिद्ध व्यापारी कृष्णगोपाल टण्डन के अध्यक्षता मे शुरू भै । वहि समय नारायण शिक्षा प्रसार योजना के अन्तरगत कैलाली कञ्चनपुर से लइके पुरूब मे वीरगञ्ज तक कै ८० ठु विद्यालय चलत रहें ।

यही सन्दर्भ मे नेपालगञ्ज मे १९९२ साल मे नारायण प्राथमिक विद्यालय कै स्थापना भै । यी नारायण प्राथमिक विद्यालय धीरेधीर निम्न माध्यमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, इन्टर कालेज होत आज महेन्द्र वहुमुखी क्याम्पस के नाँव से जाना जात है ।

औतार चौधराइन के समाज सेवा कै काम खाली शिक्षण के क्षेत्र तक सीमित नाही रहा । नेपालगञ्ज के भेरी अञ्चल अस्पताल का बनवावै मे यन अनेक किसिम से सहयोग पहुचाये रहीं । फत्तेवाल आँखा अस्पताल का नेपालगञ्ज मे सुरु करावै मे यनकै हर सम्भव सहयोग रहा ।

आज औतारदेवी चौधराइन हम्मन के बीच मे नाही हिन लेकिन महेन्द्र वहुमुखी क्याम्पस, नेपाल कै ऊ ८० विद्यालय जवने कै वन शुरुवात कराइन । भेरी अञ्चल अस्पताल जवन कि पश्चिमी नेपाल के स्वास्थ्य के क्षेत्र के प्रमुख अस्पताल होय । यहि अस्पताले से आजौ हजारौ हजार लोग सेवा पावत हैं, आजौ हम्मन के बीच मे है । यी सब आजौ वनके यश औ कीर्ति कै झण्डा फहराये हैं ।

(क) औतारदेवी चौधराइन के नाँव के साथे जुड़ा चौधरी शब्द जाति के अनुसार होय कि उपनाम होय?

(ख) 'नारायण शिक्षा प्रसार योजना' कै शुरूवात के कराइस ?

(ग) नारायण शिक्षा प्रसार योजना के अन्तरगत कैलाली कञ्चनपुर से लइके पुरूब के वीरगञ्ज तक कै विद्यालय चलत रहें ?

(घ) नेपालगञ्ज मे कवने साल मे नारायण प्राथमिक विद्यालय कै स्थापना भै ।

(ङ) औतार चौधराइन के समाज सेवा शिक्षण के क्षेत्र के साथै आउर कवने कवने क्षेत्र मे रहा ?

लिखाई

१. पाठ का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

छोट कै लरिका जवन कि अपने यिहां से रोज १० किलोमिटर पयदर चलिके पढ़े जाय । उहौ नङडै गोड़े । वहि समय वहि क्षेत्र मा पढ़ाई कै व्यवस्था ना के बराबर रहा । पढ़े के बाद वहि लरिका का अच्छा से अच्छा नोकरी मिलत रहा । तब्बो ऊ लरिका ऊ सब छोड़िके अपनही घरे छोटछोट लरिकन का बोलाइ के पढ़ाइव सुरु किहिस ।

जानत हौ, ऊ के रहा ? वन रहें एक गरीब व्यापारी कै लरिका मङ्डल मास्टर । यनकै वास्तविक नाँव मङ्डलप्रसाद गुप्ता रहा । मङ्डल कै जनम विक्रम सम्वत १९६२ साल जेठ २१ गते नेपालगञ्ज सहर मा भै । आज काल्हि नेपालगञ्ज बाँके जिला औ भेरी अञ्चल कै

सदरमुकाम होय । मङ्डल के पिता कै नाँव रघुवरप्रताप शाह औ महतारी कै नाँव अन्जनी शाह रहा । वहि समय नेपालगञ्ज मा पढ़ै लिखै के कवनो व्यवस्था नाही रहा । वन रोज नेपालगञ्ज से १० किलोमिटर दूर रुपैडिहा पढ़ै खातिर जाँय औ फिर लउटि के आवैं । उहौ पयदर औ नङ्डै गोड़े । यी रुपैड़िहा भारत मे परत है । वनकै सारा पढ़ाई भारत मे भै ।

वहि समय पढ़ा लिखा मनई का अच्छा से अच्छा सरकारी नोकरी मिलत रहा । लेकिन पढ़ै के बाद वन जानत हौ काव किहिन ? वन छोट छोट लरिकन का अपनही किहां बोलाइके पढ़ावै लागें । बाद मे मङ्डल अपनही बूता पर एक विद्यालय कै स्थापना किहिन । नाँव परा एम.पी. स्कुल । जब वि.सं. २०१८ साल मे तत्कालीन महाराजाधिराज श्री ५ महेन्द्र नेपालगञ्ज मा आयें । वही समय यी विद्यालय नेपाल सरकार का हस्तान्तरित भै । तत्कालीन राजा महेन्द्र मङ्डल मास्टर से कुछ माङ्य के कहिन । वन वहि समय बहुत कुछ माङि सकत रहे । वहि समय मङ्डल मास्टर राजा महेन्द्र से काव कहिन, "सरकार यी हाथ देय के भर जानत है, लेय के नाही जानत है ।"

शिक्षा औ समाज सेवा के खातिर मङ्डल मास्टर का सरकार से गोरखा दक्षिणबाहु कै उपाधि मिला ।

एम.पी. स्कुल कै अध्यक्षता औ जिम्मेवारी वन जिन्दगी भर सम्हारे रहि गयें लेकिन यी सबके साथेन अपने घरे लरिकन का पढ़ावै कै काम नाही छोड़िन । यइसन दृढ निश्चयी औ शिक्षा सेवी व्यक्ति कै मृत्यु वि.सं. २०४५ साल सावन १० गते भै ।

(क) मङ्डल मास्टर कै वास्तविक नाँव काव रहा ?

(ख) मङ्डल मास्टर अपने बलबूता पर कवन विद्यालय खड़ा किहिन् ?

(ग) यी विद्यालय कवने सालि मे नेपाल सरकार का हस्तान्तरित भै ?

(घ) मङ्डल मास्टर राजा महेन्द्र से काव कहिन ?

(ङ) मङ्डल मास्टर का सरकार से गोरखा दक्षिणबाहु कै उपाधि कवने योगदान के खातिर मिला ?

२. पाठ के पचवाँ अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।

३. विश्वनाथ पाठकजी के जीवन से कइसन शिक्षा मिलत है ?

४. निम्न लिखित खाली जगह पूरा कइकै साहित्यकार भवानी भिक्षु शीर्षक कै जिवनी तयइयार करा जाय ।

साहित्यकार भवानी भिक्षु ... जनम विक्रम सम्बत १९७१ साल जेठ महिना । कपिलवस्तु जिल्ला ....सदरमुकाम तौलिहवा .....जनमस्थान .....।

भवानी भिक्षु .... वास्तविक नाँव भवानी प्रसाद गुप्ता..... । देवी से बिन्ती.... बाद यनकै जीवन बचा.... । यही नाते....नाम मे भिक्षु जोड़ि..... । ... भवानी प्रसाद गुप्ता भवानी भिक्षु .... ।

भिक्षु कै पढ़ाई घरही से शुरू ..... ।१२ बरिस के .....उमिर मे ....हिन्दी साहित्य ....कुलभूषण परीक्षा द्वितिय श्रेणी ....पास .... । ....पहिला कविता प्रताप नाँव कै हिन्दी पत्रिका .... । वि.सं. १९९३ साल .... "वियोग रात्री" शीर्षक के कविता ...भिक्षु कै नेपाली साहित्य लेखन यात्रा शुरू ....। विक्रम सम्बत १९९५ साल के शारदा पत्रिका .... पहिला नेपाली भाषा मे कथा .... । येकर शीर्षक "मानव" ... ।

वि.सं. १९८७ साल ...भवानी भिक्षु .... बापे के साथे काठमाण्डू ....काठमाण्डू आवै.... भाषा सेवी ऋद्धिबहादुर मल्ल ...कवि सिद्धिचरण श्रेष्ठ .... सम्पर्क ... । यहि सम्पर्क ...भिक्षु का नेपाली साहित्य लेखन ...खातिर विशेष हौसिला .... । भवानी भिक्षु कुछ समय ....शारदा पत्रिका कै सम्पादक के रूप ...काम ...। वि.सं. २००८ साल .... वि.सं. २०१३ साल .... सूचना विभाग ...महानिर्देशक ... ।

वि.सं. २०१४ साल ... नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान (तत्कालीन रायल नेपाल एकेडमी) .... स्थापना .... । वह ... भिक्षु ....साहित्य विभाग के सदस्य ..रूप ...राखा ... । वन ... ६ बरिस तक .....रहिके काम किहिन । भवानी भिक्षु प्रज्ञा प्रतिष्ठान ....आजीवन सदस्य ..... । वन्है साझा ....मदनपुरस्कार .... वि.सं. २०२६ साल ...त्रिभुवन प्रज्ञा पुरस्कार ..... । वि.सं. २०३८ साल वैशाख ४ गते.....यहि संसार से विदा लिहिन । भवानी भिक्षु कै लिखा .....मध्ये गुनकेशरी, मैया साहेब, पर्दापछाडि आदि ..... ।

५. पाठ के आधार पर विश्वनाथ पाठक के व्यक्तित्त्व औ कृतित्त्व पर चर्चा करा जाय ।

व्याकरण

पदसङ्गति

१. नीचे दिहा उदाहरण पढ़िकै पदसङ्गति कै पहिचान किहा जाय ।

लिङ्ग गत पदसङ्गति : सीता घरे गईं । राम घरे गयें ।

वचन गत पदसङ्गति : एक खसी है । दुइ खसी हैं । ढेर खसी हैं ।

पुरुष गत पदसङ्गति : हम अपनही काम करब । तुँ खुद काम करा जाय । ऊ अपनै काम करी ।

आदर गत पदसङ्गति : बप्पा आवा है । बप्पा आय हैं । तुँ आए हौ । आप आय हौ ।

२. नीचे के अनुच्छेद का लिङ्ग गत पदसङ्गति, वचन गत पदसङ्गति, पुरुष गत पदसङ्गति औ आदर गत पदसङ्गति के अधार पर मिलाइकै लिखा जाय ।

रङ्ङ विरङ्डी कपड़ा पहिरे मुँह मे रङ्ङ, अबीर, गुलाल पोते लरिके, मेहरारू औ मर्द । सड़किन पर हँसत, गावत औ नाचत लोगन कै टोली ! ढोल झांझ मजीरा के धुन पर होरी गावत लोग ! एक दुसरे के मुह पर अबीर, गुलाल लगावत लोग ! गाँव के गल्लिन मे उडत गुलाल औ हवा मे गूजत आवाजि !

होली है भाइ होली है !
होली माता देव असीस ... ... ।

यही आवाजि के बीच मा हमरे लोगन कै टोली होली खेलत हैं । रामू, श्यामू, अब्बास, रामजियावन, बच्चू सब लोग पिचकारी मे रङ्ङ भरिके सबका नहुआवा जात हैं । हम्मन के आगे बड़का भइया कै टोली है । यी लोग ढोल, झाझ, मजीरा बजावत औ फगुआ गावत आगेआगे चलत हैं । हम वन लोगन के पाछे आपन गोलि बनाय कै पिचकारी से सबका सरोबर किहा जात हैं । वह दिने हम सब गाँव मे सबके यिहां जावा जात हैं । छोट बड़ा सब एक दुसरे का रङ्ङ, अबीर लगावत हैं । होली खेलत है औ जेकरे किहां जवन बना हैं, ऊ खात हैं । कवनो छुवाछुत नाही । यहि दिने छोट बड़ा सब मिलिकै होली खेलै जात हैं । आज के दिने ऊँच, नीच, धनी गरीब मे कवनो अन्तर नाही होत हैं । सबके यिहां जावा जात हैं औ सामूहिक रूप से फगुआ गावा जात हैं ।

३. पदसङ्गति मिलाइकै अपने यिहा के कवनो सामाजिक व्यक्तित्त्व कै बयान करा जाय ।

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

१. भगवान गौतम बुद्ध कै परिचय बुँदा गत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा मा पेश करा जाय ।

२. अपने गाँव के वाड सदस्य के बारे मे पुछिकै अनुच्छेद लिखा जाय ।

पाठ
४

हमार गाँव

- विक्रमणि त्रिपाठी

१. हमार गाँव, जवने मे हमार लरिकाई बीता । ऊ गाँव जवने के माटी मे हम चलै के सिखेन । क ख ग घ पढ़ै के सिखेन । जहाँ के ताल तलइया मा नहाँयन । जहाँ के बगियन मे आम, इमली, बेल, जामुन, तुरेन-खायन । आज हम वही गाँव के बीच में खड़ा हन । मन मे एक आशा है शिवधर बाबा, रामधनीन काका, मकबूल बाबा औ रामलोटन काका के साथे हाथ मे हाथ मिलाय कै कुछ काम करी ।

२. हम सोचित हन कि गाँव मे रहिके काम करै मे हमरे सामने कवन कवन बाधा अड़चन हैं । फिर सोचित हन हर बाधा, हर अड़चन अपने साथे समाधान लइके आवत है फिर यी तो आपन गाँव होय । यिहाँ के हर बाधा, हर अड़चन से तो हम परिचित हन । लेकिन लाख कोसिस के बादौ हमार मन गाँव मे रहै के तयार नाही होत है । हम सोचै लागित हन जानकारी मे आवै के बाद कै बाधा अड़चन से तो लड़ा जाय सकत है । लेकिन, यिहाँ तो अन्जान किसिम कै बाधा अड़चन बहुत हैं । यहि किसिम के वाधा अड़चन का हम बहुत बारीकी से समझै के कोसिस करित हन । थोर बहुत समझि मे आवत है । अइसन लागत है यकरे मूल जरि मे कवनो रोग है ।

३. हम्मै आज के गाँव के बारे मे पूरा जानकारी नाही है । हम सोचित हन प्रश्न यतना आसान नाई है, जेतना लागत है । सब से मुस्किल बात तो यी है कि बचपन मे जवने गाँव का हम देखे रहेन, जवने कै संस्कार हमरे रगरग मे मिला है । ऊ आज से एकदम फरक है । आज कै गाँव तो ऊ गाँव होय, जहाँ लोग अपने स्वार्थ मे बटा हैं । लोग एक दुसरे से इर्ष्या करत हैं । विरोध औ बाझाबाझ करत हैं । गाँव समाज के बारे मे सोचै खातिर केहू के

फुर्सति नाही है । यहि स्थिति मे सब का साथ लइकै गाँव समाज करतिन काम करब बड़ा कठिन लागत है । फिर मन मे बिचार उठत है । समस्या तो समस्या होय । चाहे छोट होय या बड़ा । हरेक समस्या आपन समाधान लइन कै आवत है । अपनही गाँव से पराजित होइकै भागब तो आउर लाज कै बाति होय ।

४. यही उधेड़बुन मे फँसा हम घरे लउटि आइत हन । सन्झा होइ चुका है । हाथ गोड़ धोइकै अबहिन खटिया पर बइठै जात रहेन । गोड़इत काका कै आवाजि काने मे परा । बहुत दिन बाद यहि किसिम कै आवाजि कान मे परै के नाते चउकन्ना होय गयेन ।

५. "बाबू भइया लोग आज स्कुल महिया बइठकी है । सब छोट वड़ा वहिं जुटा जाय ।" गोड़इत काका बोलत जात हैं ।

६. वन्है यी बतावै के जरुरी नाई है, कि के बोलाये है ? काहे कि सब जानत है गावँपालिका अध्यक्ष जी यी बइठकी बोलाये होइहैं । नवकू हेडमास्टर साहेब अध्यक्षजी से कहे होइहैं गाँव के लोगन का बोलाय देव तो यी डुग्गी पिटवाय गै । सुनै वाले सुनिन लिहिन बकिर सुनाई यहि किसिम से भय कि एक कान मे परा तो दुसरे कान से निकरी गै । काहे से सब के मन मे यिहै रहै के जाई, के होय यहि धन्दा कै अगुवा !

७. हमरे मन मे यहि किसिम के सामुहिक बइठकी मे सामिल होय के इच्छा जाग । हम घर से निकरेन । लेकिन, रास्ता मे जवने किसिम कै बाति लोगन से सुनेन । ऊ सुखद नाई रहा । केहू कहै अध्यक्ष जी दुसरे पार्टी कै होंय । यहि नाते नाही जाब । केहू कहै जब हमार लड़िके यहि स्कुल मे पढ़तै नाई हैं तो हम का करै जाई । केहू के यहि नाते परहेज रहै कि वहिं जुटै वालन मे वनहू रहिहैं जेसे वनकै दुश्मनी है । यी सब सुनिकै दुःख लाग । यी लोग तो गाँव, समाज के उत्थान कै बाति नाही । पार्टी, द्वेष झगड़ा कै बाति करत रहें । यहि स्थिति मे गाँव मे बइठकी कइसै होई । यी बाति जवने रूप मे हम्मै दुःखी बनावत रहा । वही रूप मे वहि बइठकी मे सामिल होय खातिर हम्मै उत्साहित करत रहा ।

८. हमार जाडर तो लोगन कै बाति सुनिकै पहिलेन घटि गा रहा । बइठकी मे पहुचै के बाद तो मरिन गै । आठदस लोग बइठि कै बाति करत रहैं । बतियै बाति मे पता चला कि पण्डितजी कै भइसि छुटाय गय रही, तो खोजत खोजत आइ गै रहें । चौधरी बाबू का लरिका कै फीस देय के रहा, यह नाते आय रहें । गाँवपालिका अध्यक्ष का तो औहिके रहा । विरोधी पार्टी कै गाँवपालिका उपाध्यक्ष जी यहि नाते आय रहे कि अध्यक्ष जी कुछ गड़बड़ न करैं । शङ्का कुछ यहि किसिम से रहा कहूँ सरकारी पइसा न बाटै खातिर आय होय औ वहिमे वन के

गोलि कै लोग पीछे रहि जांय । बाकी लोग अइसन रहें । जे रोज हेडमास्टर बावू किहाँ सन्झा के घूमै आवत रहें । बइठकी शुरु भै । बिना कवनो भूमिका बिना बान्हे हेडमास्टर बाबु बोलि पड़े, "अब यहि गिरापरा स्कुल का बनि जाय के चाहीं । दश कै लाठी एक कै बोझ । जब तक आप लोग बनावै खातिर तयार नाही होबो, तब तक सरकार के ओर से येका बनावै खातिर एक पइसा नाही आई । यही नाते चन्दा औ सहयोग उठाय कै येका बनवावै कै शुरुवात कइ दिहा जाय "

९. हेडमास्टर साहेब कै बाति सुनिकै सब चुप होइ गयें । बहुत देरि बाद पण्डित जी कहिन "हेडमास्टर बाबु कै कहनाव तो आप लोग सुनवै किहेव । अब आपौ लोग कुछ बोला जाय ।"

"बोलौ हो अध्यक्ष जी ।" चौधरी साहेब बोलि परें, "कुछ बोलौ भाई"।

१०. "गाँवपालिका अध्यक्ष बाद मे बोलि हैं । पहिले आप लोग बोला जाय न, उपाध्यक्ष जी" अध्यक्षजी उपाध्यक्ष के ओर देखिके कहिन ।

११. "सारे गाँव कै काम होय । हम अकेलै बोलिकै काव करब ? सारे गाँव का बोलावो ।" उपाध्यक्ष जी बोलि परें ।

१२. "बोलाये तो रहेन । सारे गाँव का बोलाये रहेन । बकिर कहाँ आये ? आप लोग कहौ तो बाति करा जाय" हेडमास्टर बाबू कहिन ।

१३. "हमरे विचार से तो स्कुल बनि जाय के चाहीं । अब आप लोग जइसन सोचौ ?" उपाध्यक्ष जी कहिन ।

१४. "अरे भला यी के कही, कि न बनै । अच्छा अब यी बताबो कइसै बनी । कइसै चन्दा वसूला जाई ?" अध्यक्ष जी कहिन ।

१५. "यी कवन मुश्किल कै बाति है ? जइसै चन्दा उठै वहि मेर से उठावा जाय । पुरनका नाँव कै सूची सचिव जी के लगे होबै करी न ।" पण्डितजी आपन राय दिहिन ।

१६. यतनेन मे अध्यक्ष बोलि परें,"अरे सूची औ चन्दा तो बाद कै बाति है । पहिले एक समिति बनै के परा ।"

१७. "तो बनि जाय अध्यक्षजी के अध्यक्षता मे एक समिति" चौधरी जी कहिन । "यी कइसे होई ? हर जगही अध्यक्षजी । यी तो होइन नाही सकत है । दुसरे दिन सारे गाँव का बोलावो तब समिति बनावा जाई ।" उपाध्यक्ष जी कहिन । "ठीक है तो दुसरेन दिन सारे गाँव के लोग से छलफल किहा जाई," अध्यक्ष जी कहिन औ वहिँसे चलि दिहिन ।

१८. धीरेधीर अउरो लोग जाय लागे । यहि किसिम से बइठकी बिना कवनो निर्णय किहे खतम होइ गै । सारा मामिला टाँयटाँय फिस्स होत देखान । लोगन कै व्यवहार देखिकै हमार गाँव मे रहिके काम करै कै इच्छा एक किसिम से मरिन गै । हम्मै लाग अबहिनो तक यिहाँ के लोगन मे काम करै कै इच्छा तनिको भर नाइ है । इर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ औ अधकचरी राजनिति के जाल मे हमार गाँव फसि चुका है । शिक्षा जेस अति जरूरी क्षेत्र मे लोगन का राजनीति करत देखिकै हमार मन फाटि गवा । हम दुसरेन दिन शहर लउटि आयन ।

१९. चार महीना बाद हम्मै फिर कुछ जरुरी काम से गाँव आवै के परा । गाँव मे पता चला स्कुल बनावै खातिर बहत्तर हजार रुपया जमा होइ चुका है । यी समाचर हमरे खातिर बहुत नवा रहा । यी ओसे ठीक उल्टा रहा । हम यही समाचार कै वास्तविकता जानै के कोसिस किहेन । सारा मामिला जानै के बाद पता चला सारा जादु हेडमास्टर बाबू के मेहनत कै रहा । मेहनत कै जादू गाँव के लोगन मे विश्वास पयदा कै दिहे रहा । गाँव के लोगन का लाग यी सही आदमी हैं कुछ करिहैं । यी बाति भर करै वाले नाही, योजना बनाइकै काम करै वाला हैं, चरित्रवान हैं । एकएक पाई कै हिसाब रखि हैं औ यी स्कुल बनवइ हैं । गाँव के लोग अपनेन जुटिकै यतना पइसा बटोरिन रहा ।

२०. हेडमास्टर बाबू कै यी काम गाँव कै लोगन कै मन जीति लिहे रहा । बिना कवनो लोभ हेडमास्टर बाबू काम शुरु कइ दिहे रहें । चार कामदार बराबर अपनेन काम करत रहें । मास्टर होइकै यतना मेहनत ? लोगन के मन मे मास्टर के रूप मे जवन वनकै छाप बना, वहिमे वनकै मेहनत चार चाँद लगाय दिहे रहा । गाँव मे घटा यी नवाँ घटना देखिके हमार आँखि खुलिगै । हम आपन पूरान सोचाई बदलै के मजबूर होइ गयन । यहि घटना से हम्मै पता चला खाली पल्थी मारे बइठिकै औ आदेश से गाँव मे काम कराइब असम्भव है । मैदान मे उतरिकै सच्चाई औ इमान्दारी के साथ काम करै के आजौ सम्भव है । खुद सुरुवात कइके दुसरे का उत्साहित करै वाला चरित्र औ प्रभावित करै वाला आर्दश आजौ राहि देखावत है । उत्साह भरै औ आगे बढिकै काम करै वालेन का चाहे समाजसेवी कहा जाय या अउर कुछ कहा जाय । यी लोग जवने गाँव, समाज, देश मे हैं ऊ निश्चित रूप से दिन दूना रात चउगुना तरक्की करी ।

शब्दार्थ

लरिकाई : बचपन

समाधान : निकास

अड़चन : व्यवधान

अन्जान : जानकारी बिना कै

संस्कार : अवगुण, दोष, कमजोरी आदि हटाइकै परिष्कार करै वाला काम

उधेड़बुन : आत्म चिन्तन

हेडमास्टर : प्रधानाध्यापक

डुग्गी : सूचना, हल्ला

सामूहिक : समूह कै

परहेज : हानिकारक औ अहितकर चीज कै सेवन न करब, संयम से रहब ।

उत्थान : उन्नत औ समृद्ध बनावै वाला क्रिया

उत्साहित : उत्साह भरा, हउसिला मिला

टाँयटाँय फिस्स : असफल

मन फाटि गवा : दुखित होब

चरित्रवान : सदाचारी

प्रसिद्ध : मशहूर

तरक्की : प्रगति

अभ्यास

सुनाई

१. निबन्ध कै दुसरा अनुच्छेद साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) यिहाँ के हर बाधा, हर अड़चन से तो हम परिचित नाही हन ।

(ख) यिहां तो अन्जान किसिम कै बाधा अड़चन बहुत हैं ।

(ग) हम सोचित हन प्रश्न यतना आसान नाई है, जेतना लागत है ।

(घ) आज कै गाँव तो ऊ गाँव होय, जहाँ लोग समाज के स्वार्थ मे बटा हैं ।

(ङ) गाँव समाज के बारे मे सोचै करती केहू के फुर्सति नाही है ।

२. निबन्ध के अन्तिम अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

(क) हेडमास्टर बाबू कै कवन काम गाँव के लोगन कै मन जीति लिहे रहा ?

(ख) हम आपन पूरान सोचाई बदलै के काहे मजबूर होइ गयन ?

(ग) कइसन चरित्र आजौ गाँव के खातिर आदर्श है ?

(घ) कइसन समाज, गाँव वा देश दिन दूना रात चउगुना तरक्की करी ?

३. नीचे दिहा पाठ का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ उत्तर बतावा जाय ।

अवधी समुदाय के महिला लोग का अपने आप पर खुद आत्मविश्वास जगावै के चाहीं, चेतना जगावै के चाहीं । हम महिला होई तौ हम कउनो काम काहे नाही कै पाइब ? 'हम सब काम कै लेब' जइसन चेतना औ आत्मविश्वास अपने भीतर जगावै के चाहीं । महिला होय के नाते 'हम ऊ काम नाही कै पाइब जइसन एक पुरुष कइ सकत है ?' यी सोच हटावै के चाहीं । साथैसाथ यकरे खातिर समाज औ परिवारो का साथ देय के चाहीं । यहि सबलोग अपने अपने परिवार का सिरिफ चेतनशील बनाय दिहिन । परिवारो अपने विटिया, पतोह का तोहरे सब कै सकत हिउ जेस विश्वास जन्माय सकैं तौ आत्मविश्वासी बनि सकत हीं ।

वइसै तौ हमरे विचार मा महिला लोग पुरुष के तुलना मा मानसिक रूप से ज्यादा सबल होत हीं । लेकिन, हमरेन के समाज मा लोग कै नजरिया यकरे विपरीत रहत है । यी हम्मै सही नाही लागत है । उदाहरण के रूप मे देख सका जात है एकल महिला हीं तब्बो अपने बालबच्चेन कै पालन पोषण करत हिन । घर के परिवारो कै रेखदेख कै लेत हीं । यकरे अलावा घर औ बहरे दूनौ कै जिम्मेवारी निर्वाह कइ लेत हीं । जबकी यिहै जिम्मेवारी एक पुरुष पर पड़ि जाय तौ ढङ्ग से नाही कइ पावत हैं । यी सब आसपास के समाज मा देखै के मिलत है ।

यही नाते हम समाज औ समाज के सब महिला लोग का यी कहै चाहित हन । कउनो काम छोट नाही होत है । हमरेन का पूर्ण विश्वास के साथ वोका पूरा करै के चाहीं औ अपने मा आत्मविश्वास जगावै के चाहीं ।

(क) अवधी समाज के महिला लोगन मे कइसन चेतना औ आत्मविश्वास जगावै के चाहीं ?

(ख) घर औ बहरे दूनौ कै जिम्मेवारी के निर्वाह कइ लेत हीं ?

(ग) महिला लोगन का आगे बढ़ै मे केत कै कमी है ?

(घ) लेख के अनुसार कइसै अवश्य सफलता मिली ?

(ङ) महिला लोगन मे आत्मविश्वास जगावै के खातिर काव करै के चाहीं ?

४. पाठ कै अन्तिम अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से उच्चारण कइकै उदाहरण के अनुसार लिखा जाय ।

लरिकाई -ल रि का ई

अन्जान, हेडमास्टर, उपाध्यक्ष, व्यवहार, बहत्तर

२. "निबन्ध मे लेखक हेडमास्टर कै प्रयास से विशेष प्रभावित है" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

३. "अइसन चरित्र आजौ गाँव के खातिर आदर्श है ।"यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

४. आप अपने का कइसै चिन्हावा जाई । अपने बारेमा बुदाँगत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा में पेश किहा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा पचवाँ अनुच्छेद तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति, यति औ लय मिलाइकै पाठ कै तिसरा अनुच्छेद सस्वर वाचन करा जाय ।

३. नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

बहुत पहिलेकै बाति होय । अयोध्या के राजा वोक्काक के पहिली रानी कै मृत्यु भै । वनसे चार बेटवा औ पाँच बिटिया रहें । राजा दूसर बियाह किहिन औ दुसरिउ रानी से एक बेटवा भयें । दुसरी रानी अपने बेटवा खातिर राजगद्दी कै दावी किहिन । बूढ़ राजा वनके मोहमाँया मे परिकै, वनकै माग पूरा करै के बाध्य होइ गयें । यही नाते राजा पहिली रानी

से जन्मा वेटवा औ विटियन का कोशल राज्य से देश निकाला कइ दिहिन । अब राजकुमार औ राजकुमारी लोग अपने सहयोगिन के साथे बिकराल जंगल कै रास्ता होत उत्तर दिशा के ओर चलें । चलतैचलत, उलोग एक निर्जन जङ्गल मे आइकै पहुँचे । वहीं कपिल नाँव के एक ऋषि कै आश्रम रहा । वहि आश्रम के नकचेरवै भागीरथी नदी बहत रही । जवने का आज काल्हि वाणगंगा नदी कहि जात है । कपिलमुनि के आदेश पर राजकुमार लोग वहि जङ्गल का काटि कै एक नगर बसाइन । जवन कपिलबस्ती के नाँव से जाना जाय लाग । आज घरि वहिका कपिलवस्तु के नाँव से जाना जात है ।

(क) राजा वोक्काक के पहिली रानी से कै लरिके रहें ?

(ख) राजा वोक्काक के दुसरी रानी से कै लरिके भयें ?

(ग) राजा वोक्काक पहिली रानी से जन्मा वेटवा औ विटियन का काहे देश निकाला कइ दिहिन ?

(घ) वाणगंगा नदी कै पूरान नाँव काव होय ?

(ङ) केकरे आदेश पर राजकुमार लोग जङ्गल काटि कै कवने नगर का बसाइन ?

लिखाई

१. पाठ के अन्तिम अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।

२. "हमार गाँव" निबन्ध कै मुख्य सनेश काव होय, लिखा जाय ?

३. हमार गाँव शीर्षक पर अपने गाँव के बारे मे दुइ अनुच्छेद लिखा जाय ।

४. निबन्ध का पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) के का आज के गाँव के बारे मे पूरा जानकारी नाही है ?

(ख) गोड़इत काका कै कवन आवाजि लेखक के कान मे परत है ?

(ग) बइठकी मे पहुचै के बाद लेखक कै मन काहे मरि गै ?

(घ) गाँव मे घटा कवन घटना देखिके लेखक कै आँखि खुलिगै ?

(ङ) कइसन चरित्र आजौ गाँव के खातिर आदर्श है ?

५. दिहा प्रश्न कै विवेचनात्मक जवाफ लिखा जाय ।

(क) विद्यालय भवन बनावै कै सारा मामिला काहे उलझत जात रहा ?

(ख) कइसन समाज, गाँव वा देश निश्चित रूप से दिन दूना रात चउगुना तरक्की करी ?

व्याकरण

सर्वनाम

१. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ सर्वनाम शब्द पहिचान कइकै कापी मे उतारा जाय ।

छोटमोट गाँव मे छोटै झोपड़िया रहा । ऊ बहुत नीक लागत रहा । वही झोपड़िम फुलदेव औ इन्द्रावती दुइ परानी रहत रहें । फलदेव बहुत गरीब रहें । छोटेन मइहां उनकै बाप महतारी परमधाम होय गवा रहें । बेचारू फुलदेव गाँव कै लड़िकेन के संघरी खेलैं । जब सन्झा होय तब गाँवकै लड़िके सब अपने अपने घरे जाँय । बापमहतारी कै प्यार से मुग्ध रहैं । लेकिन, वन बेचारू का सुकुरसुकुर रोवैं के सिवाय कुछ हाथे नाही आवै । गाँव कै बदमास लरिके फुलदेव कै कोई बोलैया न होय के नाते मारैं पीटैं । वन्हरे उनका रोवावैं । फुलदेव छोट होय के नाते काम धन्धा करै के नाही जानैं । कब्बो यनके वरौनि के तरे तौ कब्बो वनके वरौनि के तरे जाँय । हप्ता मे मुस्किल से दुइ तीन दिन खाय के पावैं ।

करतै धरत फुलदेव सयान भयें । गाँव कै अगुवा औ जवार कै महतौ बुधई किहां गाय चरावै लागें । सूति उठिकै ऊ आँखि मिजतै पहाड़ेप झुर्रा (घुर्रा) कातै जाँय । एक खेप घुर्रा लाइ कै भात खातै भरेम गाय लइकै बनका जात रहें । सन्झक जून जब गाय बन से लउटैं तब वनका बोझभर लकड़ी लावै के परै । जहिया बोझभर लकड़ी नाही लावैं तहिया बेचारू खाहुक नाही पावत रहें ।

२. नीचे दिहा अनुच्छेद पढ़ा जाय औ नामयोगी शब्द पहिचान कइकै कापी मे उतारा जाय ।

हम काठमाडौं से बस पर चढ़िकै तौलिहवा जाइत हन । हम नारायणघाट से आगे बढ़ित हन । लम्माचवड़ा पुल्ह पर बस चलत है । नीचे के ओर नदी कै तेज धार बहत है । वहि पार कै कागज कारखाना देखाय लागत है । हम कागज कारखाना देखत आगे बढ़ित हन् । यही बीचे बस एक दुकानि पर रुकत है । बस के भित्तर से हम निकरित हन् । दुकानि पर पहुचित हन् । कुछ देर अगोरै के बाद हम दुकान तक पहुचित हन । दुकानि मे सन्तोला बड़ा सस्ता है । हम झोराभर सन्तोला खरीदित हन । हम कुछ कम पइसा देय चाहित हन । ऊ हमरे हाथ से झोरा लइ लेत है । हम वकरे माग अनुसार पइसा दीत हन । पइसा पावै के बाद ऊ हमार झोरा लउटावत है । हम झोरा लइके बस मे बइठित हन । बस तौलिहवा मे घर के लगे रुकत है । हम बस से झोरा उतारि कै घर के आगे धरित हन ।

३. हमार गाँव पाठ से पाँच ठु नामयोगी शब्द खोजिकै लिखा जाय ।

४. नीचे के अनुच्छेद से संयोजक औ निपात का खोजिकै अलगअलग तालिका मे लिखा जाय ।

बुधई महतौ कै महतिन बहुत खरखर रहीं । वनके आगे केहुकै जोर नाही चलै । एक तौ छोट लड़िका, दुसरे ओर बोझभर लकड़ी औ तिसरे हरहट गाय, लब्ब से तिहाई खाय लागैं । लोग हां हां करै लागें । बेचारा फुलदेव मारा गै कहिकै कहबौ करैं । केहू दुसरेव कै गाय भइसि चरे होंय, तब्बो यनही बेचारू परैं । किसान लोग वनका बहुत गरियावैं । नवजवान लोग आवैं तौ बेचारू कै कनवैं अइठ देंय । फुलदेव कै कनवौ पाकि गवा । यइसै बहुत दुःख से परेशान होतै लड़तैभिड़त वयँ जवान भयें ।

वनकै वियाह तैं होइ गै । वनकै ससुर गाय भइस पाले रहें । एक हरकै जोड़िया बयल, दुइ ठउर मनराजी भईस, छ/सात जिउ गाय औ चार ठउर नाटा वनके दुवारे पर दूमत रहें । वनके एक लड़िका औ उहै इन्द्रावती नाँव कै बिटिया रही ।

५. हमार गाँव पाठ से सर्वनाम, संयोजक औ निपात खोजिकै अलगअलग तालिका मे लिखा जाय ।

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

१. कक्षा के विद्यार्थिन कै चार समूह बनावा जाय । एक समूह का सर्वनाम, दुसरे समूह का नामयोगी, तिसरे समूह का संयोजक औ चउथे समूह का निपात शब्द कै सूची तयार करै के कहा जाय ।

२. अपने गाँव मे होत रहा विकास निर्माण के बारे मे घरपरिवार मे पुछिकै अनुच्छेद लिखा जाय ।

पाठ
९

पारम्परिक हुनर सम्बर्द्धन कै आवश्यकता

१. 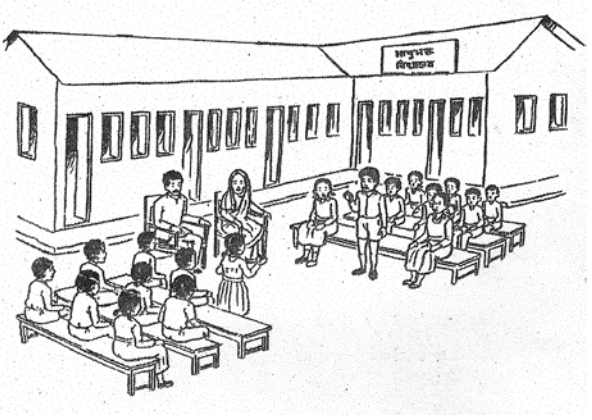

(आज मंगल माध्यमिक विद्यालय नेपालगंज मा वक्तृत्व प्रतियोगिता है। प्रतियोगिता मा कक्षा ९ मा पढ़ै वाले चार जने विद्यार्थी भाग लिहे हैं। विद्यालय कै प्रधानाध्यापक रामलाल पासी प्रतियोगिता कै अध्यक्षता किहे हैं। प्रमुख अतिथि के आसन पर विद्यालय व्यवस्थापन समिति कै अध्यक्ष आसिया खातुन हीं। समय सचेतक के रूप मे कक्षा ९ कै विद्यार्थी नरेन्द्र पाण्डेय हैं। निर्णायक मण्डल में अवधी नेपाली औ अङ्ग्रेजी विषय कै तीन शिक्षक हैं। शिक्षक औ विद्यार्थिन कै विशेष उपस्थिती है। नरेन्द्र पाण्डेय उदघोषण करत कहत हैं।)

२. उदघोषक : सबसे पहिले हम यिहां उपस्थित हरेक महानुभाव लोगन कै स्वागत करित हन। अब हम अध्यक्षजी के अनुमति से यहि कार्यक्रम का आगे बढ़ावै चाहित हन्। आज के वक्तृत्वकला कै विषय होय, 'पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन कै आवश्यकता'। प्रतियोगिता में भाग लेय वाले लोगन का यहि नियम का पालन करै के परी।

(क) हरेक वक्ता का पाँच मिनेट कै समय दिहा जाई। चार मिनेट के बाद सचेतना खातिर घण्टी बजावा जाई। पाँच मिनेट होतै अन्तिम घण्टी बजी। अन्तिम घण्टी बाजै के बाद वक्ता का आपन कथन रोकै के परी।

(ख) समाज औ राष्ट्र विरोधी भावना फइलै औ व्यक्तिगत आक्षेप लागै के किसिम कै विचार न पेस करा जाई।

(ग) कवनो किसिम कै लिखित सामाग्री प्रयोग नाही मिली।

(घ) निर्णायक मण्डल कै निर्णय अन्तिम मानि जाई।

३. अब हम रामकुमार शर्मा जी का पारम्परिक हुनर सम्बर्द्धन कै आवश्यकता विषय के पक्ष मे आप विचार राखै खातिर अनुरोध करित हन ।

४. सभाध्यक्ष महोदय, प्रमुख अतिथि जी, निर्णायक मण्डल, गुरूजी औ सङ्गीसङ्हाती लोग,

५. आज के वक्तृत्व प्रतियोगिता कै विषय 'पारम्परिक हुनर सम्बर्द्धन कै आवश्यकता' होय । हम यहि विषय के पक्ष मे आपन विचार राखै चाहित हन ।

६. पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन औ प्रवर्द्धन का ध्यान मे राखिकै आगे बढ़ब आज कै जरूरत होय । यी हुनर मानव जीवन का, वनके आसपास के प्राकृतिक स्रोत साधन का जीवनोपयोगी बनावै खातिर जरूरी प्रविधि पर आधारित होत है । यही कै प्रयोग कइकै हम्मन कै पुर्खा जरूरी सामानन का बनाइन औ अपने दैनिकी का सजिल बनावै खातिर प्रयोग मा लाइन ।

७. यहिसे वनही भर कै जीवन सजिल नाही भवा । गाँव भरे कै लोग वनकै बनावा सामान से आपन दैनिकी सजिल बनाइन । उदाहरण के रूप मे रामू काका बगिया से काठ काटि कै लावत हैं । बढ़ई काका वही काठ से हर औ जोठा बनावत हैं । कुदारि औ हसुवा कै बेट बनावत हैं । लोहरू काका लोहा से हर मे लगावै वाले फार, मिस्टरी औ हसुवा बनावत हैं ।

८. यही किसिम से कोहरू काका गगरी औ दीया बनावत हैं । बट्टा औ छीपा बनावत हैं । जवने का गाँव कै लोग लाइकै पानी भरिन, पानी पीन औ सामानो धरै खातिर प्रयोग करत हैं ।

९. कोइरी काका तरकारी उब्जावत है औ गाँवघर कै लोग लाइकै बनावत खात हैं । यही किसिम से गुप्ता काका बजारि से खिर्चीमिर्ची लावत हैं औ गाँवघरमा बेचत हैं । अलगू काका मरा जानवर कै चमड़ा काढ़ि कै लावत हैं, वोकार प्रशोधन कइकै जूता, चप्पल, पेटी झोरा बनावत हैं ।

१०. यही किसिम से गाँव कै लोग धान, गोहूँ, दलहन औ तेलहन उब्जावत हैं । जवने का दइकै ऊ लोग अपने खातिर जरूरी सामान बदलि कै लावत हैं ।

११. सभाध्यक्ष महोदय, यी तो कुछ उदाहरण भर होंय । यी हरेक उत्पादन पारम्परिक हुनर पर आधारित उत्पादन है । यकरे खातिर जरूरी कच्चा पदार्थ अपनही गाँवघर मे पयदा होत रहा । येसे गाँवघर कै पइसा गावैं घर मे रहि जात है ।

सचेतना खातिर घण्टी

१२. लेकिन आपन यिहै विशेषता पर ध्यान न पहुचै के नाते यी पारम्परिक उत्पादन धीरेधीरे हम्मन से दूर होय लात है । आवै वाले दिन मे यहमा अउर कमी आवै वाला स्थिति है ।

१३. यी काव देखावत है कि अपने यिहाँ मिलै वाला प्राकृतिक स्रोत साधन के उपयोग मे विविधता कै स्वरूप निरन्तर रूप मे घटत जात है औ परनिर्भरता बढ़त जात है । जवने कै प्रत्यक्ष प्रभाव आज राष्ट्रिय तह पर देखै के मिलत है । आज हमरेन के देश कै अधिकांश अन्तर्राष्ट्रिय मुद्रा यही सब का खरिदै खातिर विदेशै जात है । यही नाते पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन औ प्रवर्द्धन का ध्यान मे राखिकै आगे बढ़ब जरूरी है ।

अन्तिम घण्टी

१४. रामकुमार शर्मा जी आज के विषय के पक्ष में बहुत सारा जानकारी हम्मन के बीचे लाइन् । यही सन्दर्भ मे अब हम शतीष पाण्डेय का पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन आज कै आवश्यकता विषय के विपक्ष मे आपन विचार राखै खातिर बोलावै चाहित हन् ।

१५. सभाध्यक्ष महोदय, प्रमुख अतिथि जी, निर्णायक मण्डल, गुरूजी औ सङ्गीसङ्हाती लोग,

१६. आज के वक्तृत्व प्रतियोगिता कै विषय 'पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन आज कै आवश्यकता' होय । हम यहि विषय के विपक्ष में आपन विचार राखै चाहित हन ।

१७. शर्माजी के अनुसार पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन औ प्रवर्द्धन का ध्यान में राखिकै आगे बढ़ब आज कै जरुरत होय । यी हुनर मानव जीवन का वनके आसपास पावा जाय वाले प्राकृतिक स्रोत साधन का जीवनोपयोगी बनावै खातिर जरूरी प्रविधि पर आधारित होत है । यही कै प्रयोग कइकै हम्मन कै पुर्खा जरूरी सामानन का बनाइन औ अपने दैनिकी का सजिल बनावै खातिर प्रयोग मा लाइन । यही का सही बनावै खातिर वन तमाम तर्क आप लोगन के बीचे पेश किहिन ।

१८. लेकिन हम्मन का यी नाही भुलाय के चाहीं कि आज कै युग विज्ञान कै युग होय । आज हम्मन के खातिर अच्छा से अच्छा सामान बनावै वाले तमाम कम्पनी अलग अलग जगही स्थापित किहा जाय चुकीं हीं । यतनै भर नाही येका बनावै मे, आज विश्व स्तर के जनशक्तिन का यी कम्पनी खोजि खोजि अपने यिहा लाइकै काम करावै मे कवनो कोरकसर नाही छोड़त हिन । साथै तयार सामान अपनही व्यवस्था मे हमरेन के घर तक पहुचाय देत हिन ।

१९. यइसनहे कम्पनी से तयार समान एक ओर आवश्यकता के अनुसार सहज औ उपयोगी हैं तो देखहु मे सुन्नर हैं । यहि किसिम से काव कहा जाय सकत है कि आज हम्मन का राष्ट्रिय स्तर तक भर नाही विश्व स्तर पर एक दुसरे से प्रतिस्पर्धा है । हर आदमी अपने खातिर जरुरी सामान का गुणस्तर का ध्यान में राखिकै खरीदत है ।

सचेतना खातिर घण्टी

२०. यही नाते हमरे अपने सामान का उत्पादनकर्ता मुखी नाही प्रयोगकर्तामुखी बनाइब जरूरी है । यकरे खातिर पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन आज कै आवश्यकता का खाली ध्यान मे राखिकै आगे बढ़े यी लक्ष्य पुरा नाही होई ।

२१. शतिश पाण्डेयजी आज के विषय के विपक्ष मे बहुत सारा जानकारी हम्मन के बीचे लाइन । यही सन्दर्भ मे अब हम कविता गुप्ता का पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन आज कै आवश्यकता विषय के पक्ष में आप विचार राखै खातिर बोलावै चाहित हन् ।

२२. सभाध्यक्ष महोदय, प्रमुख अतिथि जी, निर्णायक मण्डल, गुरूजी औ सङ्गीसङ्हाती लोग,

आज के वक्तृत्व प्रतियोगिता कै विषय 'पारम्परिक हुनर सम्बर्द्धन कै आवश्यकता' होय । हम यहि विषय के पक्ष मे आपन विचार राखै चाहित हन ।

२३. हमनही के कक्षा कै साथी शतिश पाण्डेय जी आधुनिक संसाधन के आवश्यकता पर जोर देत कुछ विचार राखिन । हम वहपर कवनो तर्क नाही करै चाहित हन् । लेकिन हम्मन के लिए हम्मन के माटी से उपजा कवनो चीज दीर्घकालिक रूप मे फाइदा दइ सकत है कि आधुनिक उद्योग दइ सकत है ? कवने किसिम से हमरे अपने पइसा का विदेश जाय से रोकि सका जात है ? हम्मन कै पइसा कइसै गाँवै घर मे सुरक्षित होय सकत है । यहि पर सोचब जरूर आज कै जरूरत होय । जइसन कि हमरे जाना जात है, हम्मन के देश मे अलग अलग किसिम कै पेशागत जातिय समाज रहत हैं । यहि मध्ये तराई मधेश क्षेत्र मे मुस्लिम समुदाय के साथै यादव, कुर्मी, ब्राह्मण, तेली, धोवी, चमार, कोइरी, सन्यासी, धानुक, पासी,सोनार, केवट, बनिया, मल्लाह, कलवार, कोहार, नाँऊ, कानू, हलवाई, राजपूत, कायस्थ, बढई, बरई, कहार, लोध, राजभर, चिडीमार, माली, लोहार, नुनिया, धरिकार, पत्थरकट्टा लगायतका जाति रहत हैं तो यही किसिम से पहाड़ औ हिमाली भुभागौ में अलग अलग जातिकै पेशाकर्मी अपने पारम्परिक हुनर का हाथ में समेटे जीवन का आगे बढ़ावत हैं ।

२४. यी पेशागत लोकसमाज विगत मे समृद्ध होय के बावजूद वर्तमान मे दलित-गैरदलित मे विभाजित हैं । वर्तमान में स्थानीय प्राकृतिक स्रोत साधन प्रयोग कइकै स्थापित भवा

पारम्परिक आय आर्जन प्रणाली छिन्न भिन्न होइ चुका है । साथै राज्यद्वारा स्थापित भवा प्रणाली अपने उद्देश्य अनुसार सफल रूप मे काम नकरै के नाते पेशागत क्षेत्र मे सक्रिय अधिकांश लोग अपने पारम्परि पेशा से दूर होइ चुका हैं वा वनकै पारम्परिक पेशा समेत समाप्त होत जात है ।

२५. होय के तो यी जातिय पेशन का समयानकूल बनावै खातिर अलगअलग किसिम कै तालीम हमरे यिहाँ कै घरेलु कै तालीम केन्द्र औ घरेलु कै जिल्ला स्थित कार्यालय के साथै स्थानीय निकाय मार्फत सञ्चालित भवा मेडपा नामक कार्यक्रम मार्फत निरन्तर रुपमा सञ्चालित हैं । लेकिन यहि किसिम से सञ्चालन मे रहा यी हरेक तालिम कै कार्यक्रम अबहिन तक यी लोगन तक नाही पहुचि पा हैं । जवने के नाते विगत कुछै दशक पहिले तक अपनही पेशा के माध्यम से शान के साथ जीवनयापन करै वाले यी पेशागत जाति आज दुसरे किहा नोकर बनिकै काम करै के वाध्य हैं । जबकि अपने पारम्परिक पेशा पर तत तत समाज कै नैसर्गिक अधिकार होय कै विश्वव्यापी मान्यता है ।

सचेतना खातिर घण्टी

२६. यी लोगन के पारम्परिक हुनर से जुड़ा पेशन का समयानुकुल बनावै कै आजौ प्रशस्त सम्भावना है । येसे राज्य का विदेशी मुद्रा आर्जन करहू कै सम्भावना प्रशस्त है । यकरे खातिर अपनै पेशा मे वा उपयुक्त अन्य कवनो तालिम मार्फत ऊ लोगनै के पेशा से जुड़ा नवा पेशागत हुनर सिखाइकै प्रोत्सहान । औ, खुद के स्रोत औ साधन के मार्फत जीवनयापन के वातावरण कै सृजना करै कै प्रशस्त सम्भावना है । यही नाते पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन आज कै आवश्यकता होय । यहिसे बृहत स्तर पर गाँवन मे रोजगारी कै सृजना होइ सकत है ।

अन्तिम घण्टी

२७. कविता गुप्ताजी आज के विषय के पक्ष मे बहुत सारा जानकारी हम्मन के बीचे लाइन । यही सन्दर्भ मे अब हम सानिया खातुन जी से पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन आज कै आवश्यकता विषय के विपक्ष मे आप विचार राखै खातिर बोलावै चाहित हन् ।

२८. सभाध्यक्ष महोदय, प्रमुख अतिथि जी, निर्णायक मण्डल, गुरूजी औ सङ्गीसङ्हाती लोग, आज के वक्तृत्व प्रतियोगिता कै विषय 'पारम्परिक हुनर सम्बर्द्धन कै आवश्यकता' होय । हम यहि विषय के विपक्ष मे आपन विचार राखै चाहित हन् ।

२९. हमनही के कक्षा कै साथी कविता गुप्ता जी पारम्परिक हुनर कै परिचय देत वोसे होय वाले फाइदा औ वोका कइसै लागू किहा जाय सकत है, यहि बारे मे आपन कुछ विचार राखिन । हमार यहि सन्दर्भ मे वनसे कवनो मतभेद नाही है ।

३०. लेकिन का यतनही से हम्मन कै हर जरूरत पुरा होइ जाई ? यहपर ध्यान दइकै काम करही में हम्मन कै हित है । आज पारम्परिक पेशा से जुड़ा कवने पेशा का वनकै लरिका करै चाहत है ? ऊ काहे अपने बाप दादा के पेशा का छोड़िकै विदेश जाइकै केहू कै नोकर बनै चाहत है ? का यी काम ऊ खुशी खुशी करत है ? आप हमसे पुछा जाई, तो हम कहब नाही । आज वकरे पेशा से जुड़ा कच्चा पदार्थ स्थानीय सरकारी तन्त्र कवनो न कवनो बहाना से दुसरे का दइ चुका है ।

३१. जनावर मरै के बाद निकलै वाले छाला कै ठेक्का कइ चुका है । माटी का खोदि कै लावै वाला जगही केहू दुसरे के नाव में नापी होइ चुका है वा केहू का ऊ जमीन लीज पे दिहा जाय चुका है ।

३२. माटी से बना सामान का पकावै खातिर जरूरी लकड़ी, जवन की ऊ नकचेरे के जङ्गल से बेरोकटोक लइ आवत रहा । आज वहि तक ओकर पहुच तक नाही है । बढ़ई काका कै उहै हाल है । आज वनहू कै पहुच यहि जङ्गल तक नाही है । कोइला के अभाव मे लोहरू काका कै भाथी बन्द होइ चुका है ।

३३. अब बतावा जाय अपने बलबूता पर का यी लोगन के पहुच आसानी से यहि कुल पर फिर से स्थापित होइ पाई ? उत्तर है नाही, जब नाही होइ पाई तो दिनै में यइसनहे सपना का देखै कै कवन जरूरत है जवन पुरै न होइ पावै । यकरे विकल्प मे हम्मन का आधुनिक उद्योग पर आधारित हुनर का बढ़ावा देबै एक मात्र निकास होइ सकत है ।

सचेतना खातिर घण्टी

३४. यही नाते हम अन्त मे काव कहै चाहित हन कि नवाँ नवाँ उद्योग के स्थापना पर जोर दिहा जाय आधुनिक से आधुनिक साधन कै प्रयोग किहा जाय । जीवन का सरल बनावा जाय । यिहै आज कै माग होय । आज कै जरूरत होय । धन्यबाद ।

३५. उदघोषक : महानुभाव लोग, आप लोग यहि प्रतियोगिता मे सहभागी लोगन कै विचार सुना गै । एक से एक तर्क का यी लोग आप हम्मन के सामने राखिन । अब कुछै देर मे निर्णायक मण्डल आपन निर्णय सुनइबै करी । यकरे साथै प्रमुख अतिथी आपन मन्तव्य रखिहैं, साथै

अन्तिम मे सभाध्यक्ष महोदय अपने मन्तव्य सहित यहि सभा कै विसर्जन करिहैं । आप लोग नतीजा औ मन्तव्य सुने के बादै घरे जावा जाई । यही अनुरोध के साथ हम कार्यक्रम सञ्चालक नरेन्द्र पाण्डेय का बिदा दिहा जाय । नमस्कार ।

शब्दार्थ

वक्तृत्त्व :	वोलयक, भाषण करैक गुण
सचेतक :	सवाचेत/सावधान करावै वाले
वक्ता :	बोलै वाले/भाषण करै वाले
व्यक्तिगत :	निजी
जीवनोपयोगी :	जियै खतिर आवश्यक
खिर्चीमिची :	दैनिकी उपभोग्य सामान
उब्जाइन :	पैदा किहिन
उत्पादन :	उपज
कच्चा पदार्थ :	अर्निमित/अपक्व वस्तु
परनिर्भरता :	दुसरे कै सहारा
पारम्परिक उत्पादन :	स्थानीय ज्ञान औ हुनर पर आधारित उपज
अर्न्तराष्ट्रिय मुद्रा :	विदेश कै रूपया
सम्बर्द्धन :	बचाइब/जोगाईब
प्रवर्द्धन :	बढ़ावा
स्थापित :	प्रतिष्ठित
प्रतिस्पर्धा :	मुकाबला
गुणस्तर :	वस्तु मे रहा गुण कै अवस्था
उत्पादनकर्ता :	पैदा करै वाले
प्रयोगकर्ता :	उपभोग करै वाले
दीर्घकालिक :	लम्मे समय तक कै
पेशाकर्मी :	उद्यम करै वाले
प्रणाली :	व्यवस्था

जीवनयापन :	जिन्दगी पालन/जियब
नैसर्गिक :	जन्मजात
बेरोकटोक :	बिना कवनो अवरोध
निर्णायक मण्डल :	फैसला करै वाले लोग

अभ्यास

सुनाई

१. वक्तृत्त्व प्रतियोगिता मे रामकुमार शर्माजी कै विचार साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन औ प्रवर्द्धन का ध्यान मे राखिकै आगे बढ़ब आज कै जरूरत होय ।

(ख) हम्मन कै पूर्खा जरूरी सामानन का नाही बनाइन बजारि से खरीदिन ।

(ग) रामू काका बगिया से काठ काटि कै लाइन ।

(घ) लोहरू काका हर में लगावै वाले फार, मिस्टरी औ हँसुवा बनाइन ।

(ङ) यी हरेक उत्पादन हम्मन के अपने हुनर पर आधारित उत्पादन रहें ।

२. वक्तृत्त्व प्रतियोगिता मे शतिश पाण्डेयजी कै विचार साथी से सुनिकै दिहा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

(क) मानव मे रहा पारम्परिक हुनर केह पर आधारित होत है ?

(ख) हम्मन कै पुर्खा केतकै प्रयोग कइकै अपने खातिर जरूरी सामान का बनाइन ?

(ग) आज के युग मे हम्मन के आसपास स्थापित कम्पनी हम्मन का कइसै सुविधा देत हिन ?

(घ) आज हम्मन मे एक दुसरे से प्रतिस्पर्धा कवने स्तर पर है ?

(ङ) आज अपने सामान का कइसन बनावै कै जरूरत है ?

३. पाठ के अन्तिम अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ उदाहरण के अनुसार लिखा जाय ।

सचेतक-स चे त क

व्यक्तिगत, परनिर्भरता, सम्बर्द्धन, दीर्घकालिक, बेरोकटोक

२. "विगत कुछै दशक पहिले तक अपनही पेशा के माध्यम से शान के साथ जीवनयापन करै वाले यी पेशागत जाति आज दुसरे किहाँ नोकर बनिकै काम करै के वाध्य हैं । जबकि अपने पारम्परिक पेशा पर तत तत समाज कै नैसर्गिक अधिकार होय कै विश्वव्यापी मान्यता है ।" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल कइकै निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

३. पारम्परिक हुनर कै सम्बर्द्धन आज कै आवश्यकता विषय पर आप अपने विचार का पक्ष मे राखै चाहा जात है कि विपक्ष मा ? अपने विचार का बुँदागत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा मे पेश किहा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा पचवाँ अनुच्छेद का तेजी से पढा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति, यति औ लय के साथ पाठ के तिसरे अनुच्छेद कै सस्वर वाचन करा जाय ।

३. वक्तृत्त्व प्रतियोगिता मे कविता गुप्ताजी कै विचार साथी से सुनिकै दिहा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

(क) आज के करे पेशा से जुड़ा कच्चा पदार्थ स्थानीय सरकारी तन्त्र कवनो न कवनो बहाना से दुसरे का दइ चुका है ?

(ख) केह पर सोचब आज कै जरूरत होय ?

(ग) पेशागत लोकसमाज विगत मे समृद्ध होय के बावजूद वर्तमान मे केहमा केहमा विभाजित हैं ?

(घ) आज पारम्परिक पेशा कै अवस्था कइसन है ?

(ङ) आज पेशागत जाति दुसरे किहाँ नोकर बनिकै काहे काम करै के वाध्य हैं ?

लिखाई

१. पाठ के अन्तिम अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।

२. "पारम्परिक हुनर सम्बर्द्धन कै आवश्यकता" कै मुख्य सनेश काव होय, लिखा जाय ?

३. "पारम्परिक हुनर सम्बर्द्धन कै आवश्यकता" के विपक्ष मे दुइ अनुच्छेद लिखा जाय ।

४. वक्तृत्त्वकला मे पेश भवा विचार का पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) शर्माजी के अनुसार के का ध्यान मे राखिकै आगे बढ़ब आज कै जरुरत होय ?

(ख) आज कै युग केतकै युग होय ।

(ग) शतिश पाण्डेय जी केत के आवश्यकता पर जोर देत कुछ विचार राखिन ?

(घ) कविता गुप्ता जी केतकै परिचय देत औ के से होय वाले फाइदा औ वोका कइसै लागु किहा जाय सकत है, यहि के वारे मे आपन कुछ विचार राखिन ?

(ङ) सानिया खातुन के अनुसार आज कै माग औ आज कै जरूरत का होय ?

५. दिहा प्रश्न कै विस्तृत रूप मे जवाफ लिखा जाय ।

(क) केह पर ध्यान न पहुचै के नाते हम्मन के यिहाँ होयवाले पारम्परिक उत्पादन हम्मन से धीरेधीरे दूर होय लागें ?

व्याकरण

सर्वनाम

१. नीचे के वाक्यन मे रहा क्रियापद का चीन्हि कै रेखाङ्कित किहा जाय औ वोका कापी मे लिखा जाय ।

धान दउनी चलत रहै । बड़ी खरही मजुर देखतै देखत उल्झि देत रहैं । सावित्रीदेवी अपने दूनौ लरिकन का दउरी पर नजर राखे रहैक मारे लाई रहैं । कवनो असामी कुछ गड़बड़ न कइ लेंय, लरिके रहिहैं तो देखे रहिहैं, यही सोच के खरहिप साल ओढ़े बइठ गईं । मजूर सब ताल मिलाये एक रस अपने अपने काम मा लागि रहैं । चारौ लङ्ग दउरी औ मनईन से भरा पूरा खरिहान देखिकै उनका आपन दिन याद आवै लाग । कवन कवन मुसीबत उनकै खोपड़िप गुजरा, एक-एक दिन उनकै आँखिक सामने आवत रहै । उनका याद रहै जब उकै ससुर भगौती प्रसाद चौधरी कै जमाना रहै, तब का मजाल कवनो घर कै मेहरारू बहरे

निकरै । नौकर चाकर से घर भरा रहत रहै । जाड़े मा लढ़िया जङ्गल जात रही, जलावनो कै कवनो दुःख ना रहै । धान कै बड़े बड़े बखार अगनम लगाये जात रहें । पूरी बखरी दुआरा मुहार फूल जस फुलिहान लागत रहै । अब देखौ कस दिन आय गवा । यहि सोचतै उनकै दूनौ आँखि भरि आई ।

२. नीचे के वाक्यन मे रहा क्रियायोगी का चीन्हि कै रेखाङ्कित किहा जाय औ वोका कापी मे लिखा जाय ।

ईश्वरदीन गोहरउतै कहिस, अरे भउजी खरिहाने भरेक पशु कै गोबर बटोर डारे हन, कन्डवा न पथिहौ औ मजूरन का कुछ चनौ-चबेना चाहीं ।' सावित्रीदेवी पर दुखन कै कइयौ पहाड़ काटै के परा । लेकिन कवनो यस वस रास्ता कै सहारा नाय लिहिन । अपने मनका समोसतै झुर्रियान देहिम जोर लगवतै उठीं, 'हाँ भइया, लरिकवै यही थिर हैं, देखे रहेव, हम गोबर पाथे डारित हन, पानी कवनो से भराय लिहेव औ सुनौ घरे चले जाव, पुजवा वाले घरमा चना औ भुजिया कै चाउर धरा है । भुजवा कै भार बरत होई, भुजाय कै लइ आव । हम हिंयै हन, लरिकवन का कवनो से कहि दिहेव, देखे रही । कहूँ पशु पाहिन थिर न चले जांय । बडकउवा का देखेव, बड़ा डबडब है ।'

गाँवभरेम अपने पीढ़िम सब से बड़ा रहै, उनकै बड़ा लरिका । जीकै नाँव परि गा बड़कउवा । लेकिन उकै नाँव हेमचन्द्र औ छोटकउवा कै भूभा रहै ।

अबही हालिनतालिन थोरै दिन भवा, उनकै छोट ससुर राय बहादुर चौधरी बाटि कै अलग कै दिहिन रहै । सावित्री देवी कै ससुर भगौती प्रसाद बुढ़ै रहैं, यही से उनकै अंश मा परी बड़ी बखरी । बड़कउवा कै बाप ज्यादा दिन तक नाय जीयें, यही से परिवारमा कुछ लोग दबी दबाई जबान से उनका कुलच्छिनौ कहैम परहेज नाय करत रहैं ।

३. नीचे दिहा विस्मयाधिवोधक शब्दन कै प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

रे, अरे, हे, हे राम, ओ, आहा, वाह, छि, धिक्कार, स्याबस, धन्यवाद, विचरा, ओहो

४. नीचे के वाक्य से क्रियापद, क्रियायोगी औ विस्मयादिबोधक शब्द का खोजिकै अलग अलग तालिका मे लिखा जाय ।

(क) राम भात खात हैं ।

(ख) हरि पाठ पढिकै घरे गवा है ।

(ग) हम लोग गृहकार्य करे हन् ।

(घ) आज हमरे घरे न मामा आये न मामिन आईं ।

(ङ) ऊ सरासर चला गै ।

(च) रामकुमार बहुतै सज्जन हैं ।

(छ) राधिका तूँ/तुम अउरौ ऊपर जाव ।

(ज) बाप रे बाप ! केतना बडा साँप है ।

(झ) हे भगवान ! हमका यी अँधेरिया रात मा बदमासन से बचावो ।

५. नीचे दिहा वाक्यन का एक्कै वाक्य मे संश्लेषण करा जाय ।

(क) यी बड़के बाबु कै बेटवा सेवक होंय । यन सङ्हरिहन के साथे घरे जात हैं । (सरल वाक्य)

(ख) उ बडवार काम कइ सकत है । जे बड़ा है । (मिश्र वाक्य)

(ग) हरिया धान बोइस । हम कुछु नाही किहेन । (संयुक्त वाक्य)

६. नीचे दिहा वाक्यन कै विश्लेषण करा जाय ।

(क) हरी औ राम घरे गयें ।

(ख) शादी मा न वैंडबाजा रहा न नौटंकी रहा ।

(ग) कल्लु बहुत गरियाइन बकिर हम कुछु नाही कहेन ।

सिर्जनात्मक कार्य/ परियोना कार्य

नीचे दिहा विषय पर आपन विचार प्रस्तुत किहा जाय ।

१. दहेज नाही शिक्षा चाहीँ

२. आप के गाँव वर्ष्मान अवस्था सुधार करै के खातिर काव करै के परी, यहि विषय मे निवेदन लिखिकै कक्षा मे देखावा जाय ।

पाठ
६

चिठ्ठी

खजुरा, बाँके

२०७६/५/१७

आदरणीय भाई साहेब,

सादर प्रणाम ।

१. आपलोगन के आशीर्वाद से यिहाँ सब कुशल मङ्गल है । आशा है, आपौ लोग उहाँ आराम से होबो ।

२. आपकै चिठ्ठी पायन । चिठ्ठी पढ़िके वहूँ के कुशल मङ्गल कै जानकारी मिला, खुसी लाग । चिठ्ठी मे लिखा गा है कि बहिनी कै पढ़ाई छोड़ाय देवा जाई । अब वनकै बियाह कइ देब जरूरी देखात है । यह वारे मे हम आपसे कुछ आउर अनुरोध करा चाहित है ।

३. हमार विचार है कि बहिनी कै पढ़ाइ न छोड़ावा जाय । हमरे समाज में महिला शिक्षा नगण्य है । आप हम्मै पढ़े खातिर बहरे पठवा गै । आपै बहिनी कै पढ़ाई रोकि देवा जाई तो गाँव कै लोग का कहिहैं । जहा तक बियाह कै प्रश्न है, पढ़े के वाद अउर अच्छे घर में बहिनी कै बियाह होइ सकत है ।

४. आर्थिक पक्ष मे जरूर समस्या है । यी हमरे परिवार कै कमजोर पक्ष होय । यकरे खातिर जल्दी से जल्दी हम्मन का दलहन, तेलहन, तरकारी कै खेती औ दुग्ध उत्पादन पर विशेष ध्यान देय के परी । जवने से हमरे परिवार भरकै आम्दानी नाही बढ़ी, राज्य के ओर से विदेश जाय वाला पइसौ कै बचत होई । यही नाते समस्या के समय मे, घबड़ाय कै नाही, हिम्मत से काम करब ज्यादे उचित देखात है । कुछ दिन के वाद हमहू सहयोग करै वाला होइ जाब ।

५. हमरे लोगन का यिहौ देखै के परा कि बहिनी कक्षा-५ के परिक्षा मे जिला भर मे पहिली भई हैं । वनकै पढ़ाई बढ़ावै से वनकै हिम्मत बढ़ी ।

६. आप जानत हौ कि आज के जमाना मे शिक्षा कै बड़ा महत्त्व है । हम्मै पढ़ाइ कै आप खाली एक परिवार का शिक्षित बनावै मे सहयोग कइ सका जात है । लेकिन बहिनी का पढ़ाये, अन्जानै मे सही दुइ परिवार का शिक्षित बनावै में सहयोग पहुची । यतनै भर नाही, समाजौ

के विकास मे आपके यहि प्रयास से महत्त्वपूर्ण योगदान होई । काहे कि पढ़ै लिखै के बाद समाज के विकास खातिर हम वतना समय नाही दइ पाइब, जेतना समय हमार बहिन देई, साथै येसे एक आउर फाइदा यी होई कि गाँव कै बाकिउ लोग आप कै देखीदेखा अपनेअपने बिटियन का उच्च शिक्षा देवै लगिहैं । यहू किसिम से आप समाज का शिक्षित बनावै में विशेष सहयोग पहुचावा जाई । यिहै कारण होय कि सरकार आज काल्हि बिटियन के पढ़ाई पर बिशेष ध्यान दिहे है ।

७. हम्मै विश्वास है कि लाख समस्या के बादौ आप बहिनी कै पढ़ाई का अवश्य आगे बढ़ावा जाई । अन्त मे बाबा, आजी औ माताजी का साष्टाङ्ग प्रणाम औ बहिनी का सप्रेम स्नेह ।

आप कै भाई
राम प्रसाद कोहार

प्रेषक राम प्रसाद कोहार काठमाडौँ, नेपाल	प्रापक अभय प्रसाद कोहार काठमाडौँ, नेपाल टिकट

घरायसी पत्र लिखै कै तरिका :

(क) चिठ्ठी/ई-मेल लिखै के कागज के उप्पर दहिने भाग मे जगही कै नाँव औ मिति लिखा जात है । जवने से चिठ्ठी/ई-मेल खोलतै यी पता चलि जात है कि चिठी/ई-मेल कहा से औ कब लिखा गाहै ।

(ख) वोसे नीचे कागज के बाँये ओर थोरै कै जगही छोड़िकै नाता अनुसार कै सम्बोधन औ बोसे ठीक नीचे अभिवादन सम्बन्धी शब्द लिखा जात हैं ।

(ग) विषय-प्रवेश करै से पहिले कुशलक्षेम कै औपचारिकता पूरा किहा जात है । फिर लिखा जाय वाले विषय पर केन्द्रित रहिके प्रसंग का अलगअलग अनुच्छेद मे बाटि कै लिखा जात है ।

(घ) पत्र/ई-मेल लिखै के उद्देश्य होत है । उद्देश्य अनुसार फरकफरक गद्य खण्ड मे विषयवस्तु कै विकास किहा जात है ।

(ङ) अन्त मे पत्र/ई-मेल कै समापन खण्ड राखा जात है, यह मे दर्जा अनुसार कै अभिवादन आदि सामिल किहा जात है ।

(च) पत्र/ई-मेल के अन्त मे प्रापक कै नाता के अनुसार सम्वन्ध लिखिके हस्ताक्षर किहा जात है ।

(छ) पत्र/ई-मेल लिखै के बाद वोका लिफाफा मे बन्द कइके लिफाफा के दहिने ओर पावै वाले (प्रापक) कै पता औ बाये वोर भेजै वाले (प्रेषक) कै पता लिखा जात है ।

(ज) घरायसी पत्र/ई-मेल कै सम्बोधन, अभिवादन, शिष्टाचार, प्रापक से सम्बन्ध आदि का निम्नानुसार किहा जात है ।

१. मिति

२. चिठ्ठी/ई-मेल लिखा जाय वाले जगही कै नाँव

३. सम्बोधन

४. शिष्टाचार/अभिवादन

५. कुशलता कामना के साथ विषय प्रवेश

६. चिठ्ठी/ई-मेल कै उत्तर शीघ्र पावै कै आशा सहित ।

७. प्रापक से सम्बन्ध कै उल्लेख

८. प्रेषक कै हस्ताक्षर

९. प्रेषक कै नाँव औ पता

नाता/सम्बन्ध	**सम्बोधन**	**अभिवादन/शिष्टाचार**	**प्रापक कै नाता**
बाबा, आजी, नाना, नानी	परम आदरणीय, पुज्यनीय, पुज्य	पाँव लागी, सादर प्रणाम, सादर चरण स्पर्श	आप कै पोता, आप कै नाती
माता, पिता, मामा, मामी, काका, काकी	परम आदरणीय, पुज्यनीय, पुज्य	पाँव लागी, सादर प्रणाम, सादर चरण स्पर्श	आप कै बेटवा, आप कै भयने, आप कै भतीजा
सास, ससुर, जेठ, जेठानी, गुरू आदि	परम आदरणीय, पुज्यनीय, पुज्य	पाँव लागी, सादर प्रणाम, सादर चरण स्पर्श	आप कै पतोह, आप कै बहिन, आप कै शिष्य

मेहरारू, मेहारू, प्रेमिका, सार, सारि आदि	प्रिय, प्रियतमे, प्राणेश्वरी	मधुर स्मृति, शुभाशीष, आर्शिवाद	तोहार/तुम्हार, मात्र तोहार/तुम्हार, खाली तोहार/तुम्हार
बड़ा भाई	आदरणीय बड़े भाई साहब	सादर नमस्कार	तोहार/ तुम्हार छोट भाई
सङ्गी, साथी	प्रिय, ...जी, स्नेही	नमस्कार	हितैषी, शुभचिन्तक, मित्र, मित्रवर आदि

शब्दार्थ

नगण्य : कम से कम, न्युन

आर्थिक पक्ष : रुपया पइसा सम्बन्धी

उत्पादन : पयदा

महत्त्वपूर्ण : जादा उपयोगी

योगदान : देन

उच्च शिक्षा : माध्यमिक से उपर कै शिक्षा

साष्टाङ्ग : श्रद्धा के साथ कइ गवा प्रणाम

सम्बोधन : पुकार

अभिवादन : नमस्कार

औपचारिकता : दुनियादारी से बन्हा सामाजिक नियम

प्रसंग : सम्बध, लगाव

अनुच्छेद : अभिव्यक्ति कै कवनो एक खण्ड,लेख के बुँदा मध्ये कवनो एक

प्रापक : पावै वाले

प्रेषक : पठवै वाले

शिष्टाचार : सभ्य ब्यवहार

हस्ताक्षर : दस्तखत

अभ्यास

सुनाई

१. चिठ्ठी कै दुसरा औ तिसरा अनुच्छेद का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) अब वनकै वियाह कइ देब जरूरी देखात है ।

(ख) हमरे समाज में महिला शिक्षा उच्च है ।

(ग) आपै बहिनी कै पढ़ाई रोकि देवा जाई तो गाँव कै लोग का कहिहैं ।

(घ) हमार विचार है कि बहिनी कै पढ़ाइ छोड़ाय दिहा जाय ।

(ङ) पढ़ै के वाद अउर अच्छे घर में बहिनी कै वियाह होइ सकत है ।

२. नीचे दिहा गद्यांश का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ उत्तर बतावा जाय ।

हम्मन कै शिक्षा प्रणाली कइसन होय के चाहीं ? मेहरारू जाति का शिक्षा देय से केतना लाभ होत है । मेहरारू औ मर्द मे कवने किसिम कै समानता होय के चाहीं ?यहि बारेमा सहशिक्षा के विषय मे हम्मन के बीचे विद्यमान शिक्षा प्रणाली कै विवेचना करब जरूरी है ।

अङ्ग्रेज लोग भारतीय लोगन के खातिर जवने नीति शिक्षा कै व्यवस्था किहिन, ऊ दूषित रहा । सोरह बरिस कै परिश्रम से एम.ए. । दश वर्ष तो भाषै के जानिफकारी मे बीतत है । अलगअलग विद्यार्थी कै रूचि, सउक, दिमाग अलग अलग होत है । यही नाते ऊ जवन पढ़ै सिखै औ जानै चाहत है, वोका उहै पढैं, सिखैं, जानैं का देय के चाहीं । यहि विषय मे महतारी, बाप का कवनो किसिम कै नियन्त्रण न करैं । विद्या के विषय मे ऊ स्वतन्त्र रहै । येकर सुनिश्चितता होय के चाहीं ।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली कै वृहत दोष यिहै होय । विश्वविद्यालय यी विषय अनिवार्य है, कहिकै तोकि देत है । चाहे ऊ विषय रूची के अनुकुल होय या प्रतिकुल । विद्यार्थी का विवश होइकै, वहि विषय का पढ़हिक परत है । लाखौ लरिके इच्छा कै विषय पढ़ि न पावै के नाते विद्यालय से भागा हैं, अपने का नष्ट कइ डारे हैं । एक ओर विश्वविद्यालय कै यइसन निर्दयी दबाब है, दुसरे ओर संरक्षक कै प्रभाव है । बालक मास्टर बनै चाहत है, संरक्षक पण्डित बनावै चाहत है । बालक संगीतज्ञ बनै चाहत है । संरक्षक सुब्बा बनावै चाहत हैं । बालक कवि बनै कै इच्छा राखत हैं । संरक्षक कप्तान बनावै कै इच्छा पाले हैं ।

यहि संघर्ष मे कथंकदाचित बालक जीता, तो ऊ सफल होइकै निकरत है । हारिगै तो वोसे असफल मनई फिर दूसर केहु नाही रहत ।

(क) हरेक विद्यार्थी कै दिमाग कइसन होत है ?

(ख) विद्यार्थी का काव काव करै मे छूट देय के चाहीं ?

(ग) कवने चीज कै सुनिश्चितता होयक चाहीं ?

(घ) लाखौ लरिके कवने चीज कै सुनिश्चितता न होय के नाते विद्यालय से भागत हैं ?

(ङ) कवने संघर्ष मे बालक जीता, तो ऊ सफल होइकै निकरत है ?

३. हम्मै विश्वास है, कि लाख समस्या के बादौ आप बहिनी कै पढ़ाई का अवश्य आगे बढ़ावा जाई, अन्त मे लेखक यी काहे लिखिन ?

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोलौ औ साथी का बोलै के कहा जाय ।

उत्पादन उत् पा दन

नगण्य, सम्बोधन, अभिवादन, प्रापक, शिष्टाचार

२. चिठ्ठी के चउथा अनुच्छेद ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ खाली जगही मे कवन शब्द राखा जाय, बतावा जाय ।

(क) यी हमरे परिवार कै कमजोर पक्ष होय । (सबल/कमजोर)

(ख) यकरे खातिर हम्मन का .....के साथे तरकारी खेती औ दुग्ध उत्पादन पर ध्यान देय के परी । (धान/दलहन तेलहन)

(ग) जवने से हमरे .....भरकै आम्दानी नाही बढ़ी, राज्य से विदेश जाय वाला पइसौ कै बचत होई । (परिवार/समाज)

(घ) यही नाते ..... के समय मे, घबड़ाय कै नाही, हिम्मत से काम करब ज्यादे उचित देखात है । (फाइदा/समस्या)

(ङ) कुछ दिन के वाद.....सहयोग करै वाला होइ जाब । (हमहू/वनहू)

३. लेकिन बहिनी का पढ़ाये, अन्जानै मे सही दुइ परिवार का शिक्षित बनावै मे सहयोग पहुची । यतनै भर नाही, समाजौ के विकास मे आपके यहि प्रयास से महत्त्वपूर्ण योगदान होई । यहि विषयपर बुदागत रूप मे छलफल कइकै कक्षा में पेश करा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा छठवे अनुच्छेद का तेजी से पढ़ा जाय औ ऊ पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति यति औ लय के साथ पाठ के चउथे अनुच्छेद कै सस्वर वाचन करा जाय ।

३. पाठ मे दिहा चिठ्ठी का सस्वर वाचन कइकै कक्षा मे सुनावा जाय ।

४. नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

विश्व मे खाली नेपाली औ भारतीय समाजै यइसन समाज है जहाँ नारी का सर्वाधिक सम्मान दिहा गा है । यहि समाज मे यन्है लक्ष्मी, सरस्वती औ दुर्गा माना गा है । लेकिन, आज के अपने स्थितिके खातिर खुद नारिउ कुछ हद तक जिम्मेवार हीं ।

हमरे समाज मे नारी जहाँ एक ओर प्रेयसी औ प्रेरणदायी हीं, तो दुसरे ओर गँवार के नाँवो का ढोवत हीं । एक ओर माई कहिकै वनकै पूजा किहा जात है तो दुसरे ओर राक्षसी औ डायन कहिकै वन्है बिष्टा खियावा जात है । यकरे साथै दहेज के नाँवो पर वनकै बलि चढ़ावा जात है ।

आज के जमाना मे फेशन, सिनेमा, कपड़ा, जेवर औ सौन्दर्य प्रसाधन नारी का ढेर आकर्षित किहे है । अपने व्यक्तित्व विकास के जगही यी लोग यही सब पर ध्यान दिहे हिन् । यी लोग परिस्थिती औ चुनौती के सामने मूड़ निहुराय लिहे हिन् । आज कै अधिकांश नारी आत्मसमर्पण कइकै गम्भीर अध्ययन से दूर भागत हिन । यी लोग खीसा कहानी पढ़िकै भ्रमित होइ गा हिन । अपने व्यक्तित्त्व के बारे मे सोचै कै जरूरतै नाही बूझत हिन ।

आज कै नारी परम्परा औ आधुनिकता के क्षितिज पर खड़ा होइकै कवनो नारी आचार संहिता के अगोराई मे हिन, जवन वनके व्यक्तित्व मे बदलाव लावै औ वनकै सामाजिक मान्यता पुनर्स्थापित कइ सकै ।

वास्तव मे नारी का अइसन होय के चाहीं, जइसै नाल से बन्हा कमल कै फूल या नाल से बन्हा ऊ फूल जवन आपन सौरभ फइलावत रहत है । वही किसिम से यदि आज कै नारी अपने मर्यादा मे रहिकै आपन भावना, आपन श्रद्धा, आपन स्नेह, आपन ममता अपने परिवार के साथै सारे मानव समाज मे बाटैं तो मानव से महामानव बनि सकत हिन ।

(क) नेपाली औ भारतीय समाज मे नारी का कवने रूपमे माना जात है ?

(ख) आज के जमाना मे नारी का काव ढेर आकर्षित किहे है ?

(ग) आज कै नारी के से दूर भागत हिन ?

(घ) आज कै नारी केत के अगोराई मे हिन ?

(ङ) नारी अपने भीतर कइसन व्यवहार लाइकै मानव का महामानव बनाय सकत हिन ?

लिखाई

१. पाठ के आधार पर नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) यी चिठ्ठी के के का लिखिस है ?

(ख) राम प्रसाद कोहार यी चिठ्ठी कवने उद्धेश्य से अपने बाबुजी का लिखिन ?

(ग) राम प्रसाद कोहार के अनुसार घर कै आर्थिक समस्या कइसै हटि सकत है ?

(घ) राम प्रसाद कोहार के अनुसार वनके बहिनी कै हिम्मत कइसै बढ़ी ?

(ङ) राम प्रसाद कोहार पढ़ि लिखिकै समाज के खातिर वहि किसिम के योगदान काहे नाही दइ सकत हैं जवने किसिम से वनकै बहिन दइ सकत हिन ?

२. "हम्मै पढ़ाई कै आप खाली एक परिवार का शिक्षित बनावै मे सहयोग कइ सका जात है । लेकिन बहिनी का पढ़ाये, अन्जानै मे सही दुइ परिवार का शिक्षित बनावै मे सहयोग पहुची ।" यहि बारे मे समूह मे छलफल कइकै व्याख्या सहित लिखा जाय ।

३. विद्या धन सब से बड़ा धन होत है, यहि बारे मे साथी का ई-मेल लिखा जाय ।

४. नीचे दिहा शब्द का वाक्य मे प्रयोग कइकै लिखा जाय ।

समाज, कमजोर, आम्दानी, हिम्मत, महत्त्व, सहयोग, सरकार

५. नीचे दिहा वाक्यन का शुद्ध कइकै लिखा जाय ।

आप जानत हौ के आज के जमाना मे शिक्षा कै बड़ा महत्त्व है । हम्मन पढ़ाइ कै आप खाली एक परिवार का शिक्षित बनावै के सहयोग कइ सका जात है । लेकिन बहिनी का पढ़ाये, अन्जानै मे सही दुइ परिवार का शिक्षित बनावै मे सहयोग पहुचै । यतनै भर नाही, समाज कै विकास में आपके यहि प्रयास से महत्त्वपूर्ण योगदान है । काहे कि पढ़े लिखै के बाद समाज के विकास खातिर हम वतना समय नाही कइ पाइब, जेतना समय हमार बहिन देई, साथै येसे एक आउर फाइदा यी होइ कि गाँव कै बाकिउ लोग आप कै देखादेखी अपनेअपने बिटियन का उच्च शिक्षा देवै लगिहैं ।

६. यी चिठ्ठी पढ़िकै आप का कइसन शिक्षा मिला, लिखा जाय ?

७. सप्रसङ्ग व्याख्या करा जाय ।

(क) जवने से हमरे परिवार भरकै आम्दानी नाही बढ़ी, राज्य के ओर से विदेश जाय वाला पइसौ कै बचत होई ।

व्याकरण

पदसङ्गति

१. नीचे लिखा वाक्यन का ध्यानपूर्वक देखा जाय ।

(क) हमरे लोग पाठ पढबै । (सामान्य भविष्यत काल)

(ख) तोहरे लोग पढ़तै होबौ । (अपूर्ण भविष्यत काल)

(ग) हमरे लोग पढ़ि चुका होबौ । (अपूर्ण भविष्यत काल)

यहि उदाहरण के आधार पर कवन वाक्य भविष्यत काल कै कवन पक्ष होय ?

(क) वय भात खइहैं ।

(ख) वय खातै होइहैं ।

(ग) तोहरे लोग घरे जाबौ ।

(घ) सुधा किताब से पाठ पढ़ी ।

(ङ) आप लोग खाय चुके होबौ ।

(च) तोहरे लोग जातै होबौ ।

(छ) काका लिखि चुकी होइहैं ।

२. भविष्य काल कै हरेक पक्ष कै चार/चार वाक्य लिखा जाय ।

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

१. गाँव के सामुदायिक विद्यालय मे गुणस्तरीय शिक्षा प्रवर्द्धन मे सहयोग के खातिर काका का चिठ्ठी लिखा जाय ।

२. शिक्षा कै गुणस्तर कइसै बढ़ि यहि विषय मे जानकारी लइकै अनुच्छेद लिखा जाय ।

पाठ
७

भक्तिकालीन कविता

सुन्दर काण्ड (रामचरित मानस)

१. चौपाई

निसिचरि एक सिंधु महुँ रहई । करि माया नभु के खग गहई ॥
जीव जंतु जे गगन उड़ाहीं । जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं ॥
गहइ छाहँ सक सो न उड़ाई । एहि बिधि सदा गगनचर खाई ॥
सोइ छल हनूमान कहँ कीन्हा । तासु कपटु कपि तुरतहिं चीन्हा ॥
ताहि मारि मारुतसुत बीरा । बारिधि पार गयउ मतिधीरा ॥
तहाँ जाइ देखी बन सोभा । गुंजत चंचरीक मधु लोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाए । खग मृग बृंद देखि मन भाए ॥
सैल बिसाल देखि एक आगें । ता पर धाइ चढ़ेउ भय त्यागें ॥
उमा न कछु कपि कै अधिकाई । प्रभु प्रताप जो कालहि खाई ॥
गिरि पर चढ़ि लंका तेहिं देखी । कहि न जाइ अति दुर्ग बिसेषी ॥
अति उतंग जलनिधि चहु पासा । कनक कोट कर परम प्रकासा ॥

२. छन्द

कनक कोट बिचित्र मनि कृत सुंदरायतना घना ।
चउहट्ट हट्ट सुबट्ट बीथीं चारु पुर बहु बिधि बना ॥
गज बाजि खच्चर निकर पदचर रथ बरूथिन्ह को गनै ॥
बहुरूप निसिचर जूथ अतिबल सेन बरनत नहिं बनै ॥
बन बाग उपवन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं ।
नर नाग सुर गंधर्ब कन्या रूप मुनि मन मोहहीं ॥

कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं ।

नाना अखारेन्ह भिरहिं बहु बिधि एक एकन्ह तर्जहीं ॥

करि जतन भट कोटिन्ह बिकट तन नगर चहुँ दिसि रच्छहीं ।

कहुँ महिष मानषु धेनु खर अज खल निसाचर भच्छहीं ॥

एहि लागि तुलसीदास इन्ह की कथा कछु एक है कही ।

रघुबीर सर तीरथ सरीरन्हि त्यागि गति पैहहिं सही ॥

३. दोहा

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।

अति लघु रूप धरौं निसि नगर करा जायं पइसार ॥

शब्दार्थ

निसिचरि :	राक्षस
नभु :	आकाश
खग :	पंक्षी
गगन :	आकाश
बिलोकि :	देखिकै
गगनचर :	आकाश मे उड़ै वाले जीवजन्तु
कपि :	बानर
बारिधि :	समुन्द्र
मतिधीरा :	धैर्यवान
चंचरीक :	भवरा
तरु :	पेड़
सैल :	पहाड़
खग :	जीवजन्तु

दुर्ग :	कोट, किला
उतंग :	जलउफान, तरङ्ग
जलनिधि :	समुन्द्र
कनक कोट :	सोना कै किला
चउहट्ट :	चौराहा
पदचर :	पयदर चलै वाले
बरूथिन्ह :	समुह, गोलि
जूथ :	समूह, गोलि
बापीं :	पोखरा, तलाव
अखारेन्ह :	अखाड़ा
कोटिन्ह :	ढेर, ज्यादा
रच्छहीं :	रक्षक
भच्छहीं :	भक्षक
पैहहिं :	मिली

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ मे दिहा चौपाई का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) सिंधु मे एकठु देवता रहत रहा ।

(ख) गगन मे उड़ै वाले जीवजन्तु के छाँही पकरि कै ऊ वन्है रोकत औ खात रहा ।

(ग) हनुमानजी वकरे छलका जानि गयें औ वोका मारिकै समुन्द्र पार किहिन ।

(घ) वहिपार कै बन नानाकिसिम कै फलफूल, जीवजन्तु, मृग आदि से सुशोभित रहा ।

(ङ) एक विशाल पेड़ देखिकै हनुमानजी बिना कवनो डेरके वहपर चढ़ि गयें ।

२. **पाठ मे दिहा कविता का ध्यानपूर्वक सुनिकै वोका दोहरावा जाय ।**

३. **पाठ मे दिहा छन्द का ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।**

बोलाई

१. **नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय ।**

सिंधुचंचरीक, बिसेषी,उतंग, सुंदरायतना, चउहट्ट, गंधर्ब, भिरहिं, कोटिन्ह, सरीरन्हि

२. **"कविता मे लङ्का कै रूप देखिके हनुमानजी विशेष प्रभावित है" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय ।**

३. **हनुमानजी लघु रूप बनाय कै लङ्का मे हलै के काहे निश्चय किहिन ? यहि बारे मे बुँदागत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा मे पेश किहा जाय ।**

पढ़ाई

१. **पाठ मे दिहा दुसरे अनुच्छेद का तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।**

२. **गति,यति औ लय के साथ पाठ मे दिहा कविता कै सस्वर वाचन करा जाय ।**

३. **नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ अर्थ बतावा बतावा जाय ।**

पुर रखवारे देखि बहु कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि नगर करौं पइसार ॥

लिखाई

१. **पाठ के पहिले अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।**

२. **पाठ के दुसरे अनुच्छेद कै सप्रसङ्ग व्याख्या करा जाय ।**

३. **कवि हनुमानजी के लङ्का यात्रा कै वर्णन कहाँ से लइकै कहा तक किहे हैं, विस्तारपूर्वक लिखा जाय ।**

४. **नीचे दिहा शब्दन कै वर्णविन्यास चलनचल्ती के अनुसार ठीक कइके लिखा जाय औ वाक्य बनावा जाय ।**

सिंधु, जीव जंतु, गुंजत, चंचरीक,बृंद, लंका, उतंग, सुंदरायतना, गंधर्ब, पैहहि

५. गोस्वामी तुलसीदासजी कविता मे कवने कवने चीज कै वर्णन करत हैं ? विस्तृत रूप मे लिखा जाय ।

व्याकरण

१. नीचे दिहा उदाहरण का पढ़िकै वाक्य परिवर्तन के आधारन का सम्झा जाय ।

सि.नं.शुद्ध प्रयोगकैफियत

(क)	भाई आय ।	पुलिङ्ग
(ख)	बहिनी आई ।	स्त्री लिङ्ग
(ग)	वन बड़ा विद्वान हैं ।	एक वचन
(घ)	वन लोग बड़ा विद्वान हैं ।	वहु वचन
(ङ)	हम पढ़ित हन ।	प्रथम पुरुष
(च)	तुम पढ़त हौ ।	मध्यम पुरुष
(छ)	ऊ पढ़त है ।	उत्तम पुरुष
(ज)	राम किताब पढ़िहैं ।	करण
(झ)	राम किताब नाही पढ़िहैं ।	अकरण
(ञ)	ऊ आ है ।	निम्न आदर
(ट)	बप्पा आए हैं ।	सामान्य आदर
(ठ)	आप आए हौ ।	उच्च आदर

२. कोष्ठ मे दिहा सङ्केत के आधार पर नीचे के वाक्य का परिवर्तित किहा जाय ।

(क) बुआ भात खात हिन । (पुलिङ्ग)

(ख) हमार भयवै विद्यालय गयें । (एक वचन)

(ग) तुम सबदिन पढ़त हौ । (प्रथम पुरुष)

(घ) श्याम घरे जइहैं । (अकरण)

(ङ) आप आए हौ । (सामान्य आदर)

३. नीचे दिहा उदाहरण का पढ़िकै काल औ पक्ष के आधारन का सम्झा जाय ।

काल / पक्ष	भूत	वर्तमान	भविष्यत
सामान्य	हमरे लोग भात खायन ।	हमरे लोग भात खाइत है ।	हमरे लोग भात खाबै ।
अपूर्ण	हमरे लोग खातै रहेन ।	हमरे लोग खातै हन ।	आप लोग खातै होबै ।
पूर्ण	हमरे लोग खाय भै रहेन ।	हमरे लोग खाय भए हन ।	तोहरे लोग खाय चुके होबौ ।
अभ्यस्त	हमरे लोग खात रहेन ।		

४. नीचे दिहा वाक्य का पक्ष के आधार पर जोड़ा मिलावा जाय ।

(क) ऊ लोग पाठ पढ़िन् ।	पूर्ण भूतकाल
(ख) आप लोग पाठ पढ़ि भै रहेव ।	अभ्यस्त भूतकाल
(ग) आप लोग पाठ पढ़त रहेव ।	सामान्य वर्तमान काल
(घ) तोहरे लोग पढ़त हौ ।	पूर्ण वर्तमान काल
(ङ) गुड्डी पढ़ि चुकी हीं ।	अपूर्ण भविष्यत काल
(च) हमरे लोग पढ़तै होबै ।	सामान्य भूतकाल

५. उपसर्ग से शब्द निर्माण कै कुछ सूची यहि प्रकार से हैं:

उपसर्ग	आधार शब्द	व्युत्पन्न शब्द
अ (अभाव, निषेध)		
अ	ज्ञान	अज्ञान
अ	योग्य	अयोग्य
अति (ढेर/बेसी)		
अति	अधिक	अत्यधिक

अति (उच्च/श्रेष्ठ)

अति	कार	अधिकार

अन (निषेध)

अन	पढ	अनपढ

अनु (पीछे, क्रम, विशेष)

अनु	शासन	अनुशासन

अप (खराब, तुच्छ, उल्टा)

अप	मान	अपमान

६. नीचे दिहा शब्द मे से उपसर्ग औ आधार पद का अलगअलग कइकै लिखा जाय ।

अकाल, अजय, अधिराज्य, अनमोल, अनुमान, अपाङ्ग

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

१. प्रकृति पर आधारित कविता का लिखिकै गुरूजी का देखावा जाय ।

२. तुलसीदास रचित सुन्दरकाण्ड मे केकर वर्णन है, जानकार व्यक्ति से पुछिकै लिखा जाय ।

पाठ
८

स्वाधीनता के खातिर

कृष्ण बम मल्ल

१. देहरादुन कै रक्षा के खातिर खटा नायक जङ्गध्वज अपने मेहरारू औ लरिकन के साथे सात महीना पहिलेन से आइकै यिहाँ रहत रहें । वन अपने मेहरारू का मातङ्गी कहिकै बोलावत रहें । वन कै नाँव अउर चाहे जवन रहा होय, लेकिन हम्मन का मातङ्गी कहत अच्छा लागत रहा । वन अपने मर्दे के उमिर कै लगभग ३२ बरिस के आसपास कै रही होइहैं । वन कै लरिका नरध्वज आठ बरिस कै रहा ।

२. वन लखन थापा, कालु पाण्डे औ पृथ्वी नारायण शाह कै खीसा नरध्वज का सुनावत रहीं । छोटै मे वन अपनेव ईश्वरी महारानी, जोहरा बाई औ पन्ना धाई कै वीर गाथा अपने माई के मुँह से सुने रहीं । वन अपने का एक योद्धा कै मेहरारू मानत रही । अइसन मेहरारू के द्वारा कइ जाय वाले काम मे निपुण रहीं । जन्मभूमि के स्वाधीनता का प्राण से प्यारा औ प्राण कै आहुती के योग्य समझत रहीं ।

३. यहर कुछ समय पहिले कप्तान वलभद्र पाँच सौ सिपहिन के साथे देहरादुन कै नालापानी किला मे खलङ्गा बचावै गा रहें । अवध कै नबाब किहाँ से कम्पनी सरकार अढ़ाई करोड रूपया असुलिकै सन् १८१४ कै मई १९ तारिख से युद्ध कै घोषणा कइ चुका रहा । बलभद्र देखतैदेखत जङ्गल कै गोलिया गुल्ली औ पहाड़ कै पाथर जमा किहिन । औ, वहि जङ्गल का एक छोट के किला मे बदलि दिहिन । वहि गढ़ का बनाँवै मे जङ्गध्वज कै कार्य कुशलता देखिकै मन्त्रमुग्ध होइ चुका रहे । मातङ्गी वहि गढ़ का नेपाली कै शान के रूप मे जानत रही । युद्ध के खातिर किला बन्दी कै जरूरत के बारे मे अपने आठ बरिस कै लरिका नरध्वज का समझावै कै प्रयास करत रहीं ।

४. अक्टुबर २४ तारिख के दिने युद्ध कै बिना सूचना दिहे अङ्ग्रेजी फौज नेपाली भूमि देहरादुन मे हला । शत्रु कै अचानक हलै से जनता यहर वहर चला गयें । मेहरारू, लरिके, असहाय, अपाङ्ग औ बूढ़ गढ़ कै शरण लिहिन । माताङ्गिउ अपने बेटवा के साथे किला के भीतर पहुचीं । अङ्ग्रेज सेना बलभद्र से आत्मसमर्पण करै के कहिस । बलभद्र अङ्ग्रेज के चिठी का फारि कै फइकि दिहिन । वन कहिन "हमरे नेपाली जीत या मृत्यु दुइयै चीज जानित हन । चिठीपत्री के जाल मे हमरे फसै वाला नाही हन ।" औ वनकै सिपाही चिल्लाने "गिरिराज श्री ५ महाराजधिराज कै जय ।"

५. वहि शब्द से बन औ पर्वत भर नाही कापे मातङ्गी कै मनौ बहुत हर्षित भै । वन के विशाल आँखिन से हर्ष कै आँसु निकरि परा । वन मनहीमन वलभद्र कै प्रशंसा किहिन । वन वहि समय सारे जन्मभूमि के फौज का एकदम फुर्तीला देखिन । सैकड़ौं सिपाहिन के बीच मे खड़ा अपने मर्दे का वन अर्जुन जेस मानिन ।

६. वलभद्र कै उहै सनेश अङ्ग्रेज का गै ।

७. मातङ्गी से सटिकै खड़ा नरध्वज पुछिस, "ये माई ! यी कम्पनी सरकार कहाँ रहत है ।"

८. मतङ्गी कहिन "कलकत्ता मे ।"

९. "काहे कम्पनियै मे नाही रहतें ?"

१०. "कम्पनी कहै वाला कवनो जगही नाही, कम्पनी तो बजार होय ।"

११. "तब अङ्ग्रेज बजार कै राजा होय तो ?"

१२. "हम तो नाही जानित, अपने दादै से पूछो ।"

१३. "दादा तो, अङ्ग्रेज कै तो पूछ तक नाही होत, कहत हैं ।"

१४. ठीकै तो कहत हैं । अङ्ग्रेजौ हमरहिन घत मनई होंय, कम्पनी कै सरकार होय ।"

१५. वकरे बाद नरध्वज चुपाय गै ।

१६. अक्टूबर २५ तारिख बीता औ २६ तारिख के दिने जनरल जिलेप्सी खुद आये । गढ़ पर चढ़ाई करै के खातिर स्थानीय व्यवस्था मिलावै लागें । नेपाली सेना शत्रु कै मुकाबिला किला के भितरै रहिकै करै कै निश्चय किहिस । अउर तीन दिन आय औ गै ।

१७. "सुनौ मातङ्गी कम्पनी सेना चार समूह बनाय कै किला पर आक्रमण करै के खातिर बिल्कुल तयार है । अपने औ बेटवा का बढ़िया से देखभाल किहेव ।"

१८. "नाथ हम्मन के चिन्ता न किहा जाय । शत्रु कै सेखी उतारिकै यी समय नेपाली कै नाक बचाये राखै कै होय । मेहरारू औ बेटवा के सुर्ता मे अपने कर्तव्य का न भुलावा जाय ।"मातङ्गी आग्रह किहिन ।

१९. "हम नेपालिन कै कर्तव्य का होय, मातङ्गी ?" मुस्कुराय कै जङगध्वज सवालि किहिन ।

२०. वन जवाफ दिहिन,"उहौ हम्मै सम्झावै के परी ? नेपाली कै कतर्व्य देश कै स्वतन्त्रता के खातिर प्राण कै बलि होय ।"

२१. "भुलाय कै नाही, लेकिन तुहैं अपने कर्तव्य कै याद करावत हम यहि प्रश्न कै उच्चारण किहे हन ।" जङ्गध्वज आपन बाति जोड़िन ।

२२. "हम धन्य हन, जवन अइसन कर्तव्यशील मर्दे कै मेहरारू होई ।" हर्ष से गदगद होइकै मातङ्गी कहिन औ वन लोहे कै बड़वार खुखुरी उठाय कै पति के हाथे मे थम्हाय दिहिन । तब नरध्वज कहिस "माई एक खुखुरी हमहू का देव । हमहू शत्रु कै मूड़ काटब ।"

२२. अत्यन्त हर्षित होइकै जङ्गध्वज कहिन,"जइसै माई वइसै बेटवो लागत है ।"

२३. मातङ्गी लजाय कै वही का जोड़त कहिन "ऊ गोत्र तो बापेन कै होय न ।"

२४. तब महतारी औ बाप मिलिकै नरध्वज के करिहांई मे खुखुरी लटकाय दिहिन ।

२५. यतनही मे गढ़ कै नगारा बजा । छाती फुलाय कै गोरखानाथ कै जय पुकारत एकेक नेपाली सिपाही अपने अपने जगही कै सुरक्षा के खातिर पहुचि गयें । अङ्ग्रेज के तोप कै गर्जन औ बन्दूकि के धाँय धाँय से पर्वत शिला गुञ्जायमान होय लागें । तोप कै जवाफ तोप औ बन्दुकि कै जवाफ बन्दुकियै से गढ़ौ से दिहा जाय लाग । बलभद्र नायक जङ्गध्वज का योग्य मानिकै मूल दरवाजा के सुरक्षा मे राखे रहें । जङ्गध्वज के हाथे मे बन्दूकि, करिहयांई मे खुखुरी औ बगलि मे तोप रहा । लेकिन अङ्ग्रेज सेना बीस गुना बड़ा रहा औ ऊ लोगन के लगे अस्त्रैशस्त्र कै प्रचुरता रहा । नेपालिन मे देशप्रेम औ हिम्मत रहा । यही दूनौ के बीच मे नालापानी कै युद्ध रहा ।

२६. वहि दिने दुपहर तक अङ्ग्रेज के गोलाबारी से ढेर नेपाली वीर गति पाय चुका रहें । आपन प्यारा सेना प्राण हाथे मे लइकै लड़त देखिकै मातङ्गी के खुसी कै सीमा नाही रहा औ यदि शत्रु किला के नकचेरे आइ जात रहें तो देवालि पर चढ़ि कै पाथर बरसावै वालन मे वनहू रहिन । घायल सिपाही औ लरिकन का पानी, दूध औ खयका कै व्यवस्था मिलावै कै काम वनहू करिन । वनकै नरध्वजौ यी कुलि काम मे अपने ओर से सहयोग करत रहैं । महतारी औ बेटवा कै ऊ कुलि सेवा बलभद्र मनहीमन खुब सराहना किहे रहें ।

२७. गढ़ के आगे खुद जिलेप्सी कै मोर्चा से अङ्ग्रेज आगे बढ़ै कै हिम्मत नाही कइ पावत रहें काहे कि जङ्गध्वज कै तोप औ बन्दूखि कै निसान से सैकड़ौं अङ्ग्रेजी सिपाही मरि चुका रहें । वही किसिम से जिलेप्सी कै वही दिने नालापानी गढ़ कब्जा करै कै अनुमान बिफल होत जात रहा ।

२८. दिन दुरकै के बाद किला मे एक बड़ा छेद जिलेप्सी बना देखिन । गढ़ के भित्तर हलै के खातिर यी उचित मवक्का रहा, लेकिन गोली कै मार औ खुकुरी के धार कै डेर से अङ्ग्रेजी फउजि

आगे बढ़ै कै हिम्मत नाही कइ पावत रहें । लेकिन, जिलेप्सी ऊ मवक्का हाथ से निकरै नाही देय चाहत रहें । यही नाते एक हाथ मे तरवार औ दुसरे हाथे मे टोप पकरि कै सेना का आगे बढ़ै के खातिर गोहरावै लागें । यहर बलभद्रौ अपने किला के भीतर छेद बन्द करै के खातिर यथोचित ब्यवस्था करै लागें । किला के भतिर कै मेहरारू औ लरिके ढेला पाथर उठाय कै वोकर मरम्मत करै के खातिर आपन सहयोग करत रहैं । मातङ्गी औ नरध्वजौ वहीं रहें ।

२९. तोप ठीक से चलावै कै आदेश दइकै जङ्गध्ज अपनेव शत्रु के उप्पर बन्दूकि कै उपयोग करत रहैं । अपने नकचेरवै कै एक सिपाही मरि चुका रहा । शत्रु कै निसान बूझि पाये जङध्वज कै गोली एकदम सफल होइ सकत रहा । वन यकरे खातिर यहरवहर देखत के अपने लरिक नरध्वज का पाथर ढोवत देखिकै कहिन,"ए बाबु हमरे दहिने ओर कै छेद से देखिकै बता तो दुष्मन कहा हैं ?" बापे कै आज्ञा पउतै हाथे कै पाथर गिराय कै दहिने ओर के भीति के छेद से देखिकै नरध्वज कहिस, "ए दादा देखो तौ ऊ वहि बड़के पेड़ के पीछे एक दुश्मन है । तब ऊ बन्दुकि कै अवाजि सुनिस औ चिल्लातै गिरा..गिरा.. लेकिन दुसर.. दुसर.. । वहि पेड़ के आगे के गड़ही मे दुसरे दुश्मन कै मूड़ देखात है ।"

३०. ऊ फिर बन्दूकि कै आवाजि सुनिस औ वहि दुश्मन का पीछे के माथ गिरत देखिस । वकरे बाद दनादन दनादन गोली छुटै लागें । किला के आगे लगातार तोप के गोला गिरै के नाते धूरि के कुहिरा छाई गै । आगे तनिकौ नही देखात रहैं । लेकिन, जङ्गध्वज अन्दाजी दुश्मन पर निसाना मारत रहैं । वन कै तोप लगातार गड़गड़ात रहै । वहिं धूरिकै मोट पर्दा के पीछे शत्रु जरूर आगे बढ़ा होई, यी वन्है विश्वास रहा । यहिनाते नरध्वज का यी सूचना देय के खातिर पठवै के हिसाब से वन बन्दुकि कै कुन्दा आगे से हटाय कै देखिन । लेकिन, नरध्वज वहि समय अपने महतारी के कोखि मे देखाय परा । माथे पर बड़ा कै गोली चोट लइकै ऊ मरि चुका रहा । अपने लरिका कै ऊ अवस्था देखिकै एक छिन अवाक रोवधिन्हा आवाजि मे वन कहिन, "मातङ्गी, यी हम का किहेन ?"

३१. मातङ्गी अपने का सम्हारि कै कहिन,"नरध्वज हमार पुत्र भर नाही, गौरव रहा । यही छोटै उमिर मे देश के खातिर हमरे आँखि के आँसु कै शोभा देत है । आप योद्धा होव, पुत्र कै शोक करै कै अवस्था नाही है । दुश्मन आगे बढ़ि चुका हैं । जन्मभुमि कै स्वाधीनता खतरा मे है । एक एक छिन बहुमूल्य है । पुत्र कै नाही, दुश्मन कै खबर लेय कै समय है । हम मदत के खातिर बेटवा कै जगही लेब, आप संहार करौ ।

३२. फिर कोखि से मृत पुत्र का बगले धइकै वन वही देवालि के छेद से देखै लागीं । धूरि कै अम्बर फटि चुका रहा । शत्रु आगे बढ़ै के प्रयास मे रहैं । वन कहिन "देखा जाय, ऊ एक

हाथ मे टोप औ दुसरे हाथ मे तरवारि लिहे अङ्ग्रेज इसारा से अपने फउजि का आगे बढ़ै के खातिर उत्साहित करत है । ऊ फउजि बड़ा है, लेकिन यदि हमरे हिम्मत न हारा जाय तो ऊ लोगन का भगाय सका जात है ।"

३३. जङगध्वजौ देखिन जिलेप्सी वहि फउजि कै नेतृत्व कइकै आगे बढ़त रहैं । वन दनादन गोली बरसावै लागें । वन के तोप से गोला जल्दीजल्दी उड़ै लाग । खुद बलभद्र वही पहुचिकै कहै लागे शत्रु का हौसिला कमजोर करै कै समय यिहै होय । हमरेन के एक एक साथिन का डटिकै दुश्मन कै मुकाबला करै के परी, दुश्मन भागी । हम्मन कै विजय होई । फिर किला से बन्दूकि औ तोप कै गोली भर नाही, बाण, भाला औ पाथर से शत्रु के उपर प्रहार करै लाग ।

३४. मातङ्गी शत्रु कै निसाना बतावैं । वन के पति औ अउर सिपाही वहि पर निसाना मारैं, लेकिन दुश्मन आगे बढ़तै रहैं औ मरतै रहैं । गढ़ के भीत्तर से बन्दूकि औ तोप कै आवाजि के साथे जय गोरखनाथ औँ जय काली कै नारा लागै लाग । नेपाली सिपाही आउर जोसिला होत गयें । मातङ्गी कै आवाजि बढ़त गै । अङ्ग्रेज कै सिपाही गिरत गयें, लेकिन जिलेप्सी अबहिनौ आपन मुराद पूरा करै चाहत रहें ।

३५. मातङ्गी अपने आसपास के सिपाहिन का सुनाइन,"ऊ हाथ मे टोप लिहे औ तरवारि नचावत आगे बढ़ै वाले अङग्रेज का खतम करै के परी । यहि समय ऊ सड़कि के दहिने किनारे है । वोकर खबर गोली से लेय के परी ।"

३६. तब आसपास के बन्दूकि कै धाँय धाँय शब्द वन के कान मे परा । तोप कै गर्जन सुनाय परा । गढ़ गरजा, देवालि थर्रान । वन कहिन,"ऊ देखौ वहि अङ्ग्रेज के हाथे कै टोप गिरि गै । वकरे दहिने हाथे से तरवारि छुटि गै । ऊ.. ऊ गिरि गै । स्यावास भाई लोग ! अब हम्मन कै विजय निश्चित है । दुश्मन रुकि गयें, देखो, कुछ भगहू लागें । बोलौ साथी लोग गोरखनाथ की जय ! पशुपति नाथ की जय औ फिर अति भयङकर आवाजी से गढ़ गुञ्जनयमान होइ गै । वहि खुसीयाली मे मातङ्गी मूड़ उठाय कै अपने पति के ओर देखिन । लेकिन वाह रे दइउ, वन कै पतिदेव बन्दूखि के कुन्दा मे मूड़ धइ कै सदा के खातिर आँखि बन्द कइ चुका रहें । वन वीर गति पाय चुका रहें । मातङ्गी उठि कै अपने मर्दे के लगे जाय चाहत रहीं, लेकिन वन के लगे कै दूसर सिपाही पूछिस "दिदी, काहे चुप होइ गयउ ? वहि छेद से देखिकै दुश्मन कै स्थिति बतावा जाय । हम एकएक कै खतम कइ देब ।

३७. मातङ्गी कै आँखि फिर वही छेद पर डटि गवा । वन कहिन, "बाबु लोग दुश्मन भागै लागें, वन लोगन कै हौसिला टुटि चुका है, बरसावो गोली । फिर ऊ लोगन मे लउटै कै हिम्मत न रहै ।

३८. वकरे बाद तोप औ बन्दूकि कै चाल दुइ गुना बढ़ि गै औ आउर तेज चोखलहर बाण औ भाला कै प्रहार दुश्मन पर होय लाग । शत्रु पलायन कइ गयें । मातङ्गी का सन्तोष मिला, लेकिन अपने बगलि मे मृत बेटवा औ मर्दे कै लाश परा रहै । पति प्रेम औ वात्सल्य वन मे भरमार रहै, लेकिन जन्मभुमि के स्वाधीनता कै सुरक्षा वनकै उच्च ध्येय रहै । यही नाते मातङ्गी आपन आँखि दुश्मन से नाही हटाइन । वन फिर कहिन, "गोर्खाली भाई लोग दुश्मन भागत है, अब ऊ लोगन मे लउटै कै हिम्मत नाही है । लेकिन, देखौ ऊ सड़कि के बीचोबीच एक तोप देखाय परत है । अब वोका खतम करै के परी औ गढ़ के भीत्तर से वहि तोप पर निसाना तो मारि गै, लेकिन वोसे पहिलेन मातङ्गी औ वनके परिवार कै मृत देहिं समेत लोप होइ गै ।

३९. अङ्ग्रेज वहि दिने गढ़ के ओर आँखि उठाय कै देखै कै हिम्मत नाही कइ पाइन ।

शब्दार्थ

स्वाधीनता :	अपने अधीन
कम्पनी सरकार :	अङ्गरेज सरकार
स्वतन्त्रता :	कवनो मेर कै शासनिक बाधा रहित उचित काम औ व्यवहार करै पावै वाला अधिकार
कर्तव्यशील :	काम प्रति निष्ठावान
उपयोग :	सही प्रयोग
जन्मभुमि :	जनम स्थान
गौरव :	इज्जत, सम्मान
थर्रान :	बल या वोकरे प्रहार से उठा कम्पन
गुञ्जनयमान :	चहुओर आवाज फइलाव
खतम :	नाश
पलायन :	भागि जाव
वात्सल्य :	मातृस्नेह, मातृप्रेम
ध्येय :	उद्देश्य
लोप :	हेराय

अभ्यास

सुनाई

१. कथा कै पहिला औ दुसरा अनुच्छेद का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) जङ्गध्वज अपने मेहरारू का मातङ्गी कहिकै बोलावत रहें ।

(ख) जङ्गध्वज कै लरिका नरध्वज सात बरिस कै रहें ।

(ग) मातङ्गी लखन थापा, कालु पाण्डे, पृथ्वी नारायण शाह कै खीसा नरध्वज का सुनावत रहीं ।

(घ) देखतैदेखत बलभद्र वहि जङ्गल का एक छोट कै किलै मे बदलि दिहिन ।

(ङ) बलभद्र अङ्ग्रेज के चिठी का फारि कै फइकि दिहिन ।

२. नीचे दिहा पाठ का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ उत्तर बतावा जाय ।

शनिचरा पर पढ़ै लिखै के चढ़ा जोस देखिकै फुलमतिया का आश्चर्य लाग । किंगरिया (कंकाली) लोगन के बीच मे जनम लइके पढ़ै के कहत है, यी शनिचरा । हमरे लोगन महिसे केतना लोग पढ़ा लिखा हैं रे ? यी कइसन गजब कै बात निकरा । किङ्गरिया लोगन के बीच कै यी शनिचरा । मालिक लोगन के लरिकन बिटियन जेस स्कुल जाय के कहत है ।

फुलमतिया कल्पना करत ही । शनिचरा साफ कपड़ा पहिरिकै स्कूले जात है । क ख ग पढ़त है । शनिचरा स्कुल मे पढ़त है । अफिस मे बाबु होत हैं । ऊ किसिमकिसिम कै सपना देखत ही । फुलमतिया का आपन जीवन धन्य लागत है । आउर चाहे जवन होय, वोकर शनिचरा पढ़ी । अवश्य पढी । शनिचरा पढ़िलिखिकै बाबु होइ गै तो वोकर बुढ़ापा आनन्द से बीती । बेटवा होबौ भगियै होय, मोह ममता के जोस मे ऊ शनिचरा का छाती से चिपकाय कै चुम्मा लेत ही ।

शनिचरा पयदा होत के फुलमतिया का महतारी कै मोह बाहेक आउर कवनो सपना नाही रहा । लेकिन अब शनिचरा कै बालसुलभ जिज्ञासा औ वकरे भीत्तर कै इच्छा देखत के दुसरेन किसिम कै संस्कार देखाय लाग है ।

वोकर चालचलन विचित्र किसिम कै है । ऊ अपने का मालिक लोगन के लड़िकन से तुलना करत है । फुलमतिया का लागत है यी शनिचरा पक्कै कवनो श्राप पावा देवता होय । यही नाते ऊ यहि नारकीय जीवन मे नवाँ औ अजीब जीवन खोजत है । नाही तो अबहिनौ फुलवा, टिकुटी किंगरिया के लरिकन जेस उहौ घूरे घूरे, नादा नादा खयका खोजत फिरत ।

(क) किंगरिया (कंकाली) लोगन के बीच मे जनम लइके शनिचरा काव करै के कहत है ?

(ख) फुलमतिया शनिचरा से काव पूछिस ?

(ग) फुलमतिया काव दृढ निश्चय करत ही ?

(घ) शनिचरा अपने का केसे तुलना करत है ?

(ङ) फुलमतिया का अपने लरिका का देखिकै कइसन लागत है ?

३. पाठ के अन्तिम अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक सुनिकै अपने शब्द मे बतावा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ साथी का सुनै के कहा जाय जाय ।

स्वाधीनता- स्वाधीनता

मन्त्रमुग्ध, लङ्गड़, आत्मसमर्पण, विल्कुल, बहुमूल्य

२. "अङ्ग्रेज वहि दिने गढ़ के ओर आँखि उठाय कै देखै कै हिम्मत काहे नाही कइ पाइन ।" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय ।

३. आप यहि कथा का कइसै कहा जाई । बुँदागत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा मे पेश किहा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा सोह्वाँ अनुच्छेद का तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. **गति, यति औ लय के साथ पाठ के पच्चिसवाँ अनुच्छेद कै सस्वर वाचन करा जाय ।**

३. **नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।**

वहि गाँव मे हरिश्चन्द्र के अकेल बिटिया रही सौम्यदर्शना । रूप औ गुण कै धन अथाह रहा । नाम अनुसार ऊ केहु कै मन मोहि लेत रही । लेकिन अपने रूपसी होय के तनिकौ भर वहिमा नाजनखड़ा नाही रहा । गुरुकुल के समय बाहेक बाणगंगा नदी कै किनारा, सङरहिन के साथे आरण्य विहार औ दिव्यध्वज के हवेली हिरनी के चाल से एक किहे रहत रही । दिव्यध्वज कै मइया सुभद्रादेवी, पूरे चौहद्दी कै महतारी जेस रहीं । ढेकहरी से जब बियाह होइकै आ रही, तब वन मात्र तेऱ्ह साल कै रहीं । तब्बै से अजिया सास मायादेवी औ सास चन्द्रप्रभा के सामिप्य मे रहिकै घर गृहस्थी कै सारा हुनर सिखि कै निपुण होइ गै रहीं । घर भीत्तर औ बहरे कै काम करै वालेन कै कमी नाही रहा । तब्बो वयँ पछिलहरवै से देर राति तक काम मे व्यस्त रहत रहीं । घर कै हरेक सदन औ विभाग कै कुञ्जी के वनके बटुवा मे रहत रहा । पति मकरध्वज घर के कुञ्जी के साथसाथ घर से जुड़ा आपन सारा कर्तव्य से हाथ समेटि लिहिन रहा । सौम्यदर्शना का देखिकै उनकै आपन बालापन याद आय जात रहा । वहिसे जब सौम्यदर्शना उनके हियाँ आवत रही तब उनका समय बीता पतै नाही चलत रहा । उनहु सौम्यदर्शना का प्यार से सौम्या कहत करत रहीं औ अपनै बिटिया जेस मानत रहीं ।

(क) सौम्यदर्शना के लगे काव रहा ?

(ख) सौम्यदर्शना का देखत के सुभद्रा काव याद आय जात रहा ?

(ग) सुभद्रा के बटुवा मे काव रहत रहा ?

(घ) सौम्यदर्शना का वय प्यार से काव कहत रहीं ?

लिखाई

१. **पाठ के अन्तिम अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।**

२. **"स्वाधीनता के खातिर" कथा कै मुख्य सनेश काव होय, लिखा जाय ?**

३. **कथा कै पात्र मातङ्गी कै चरित्रचित्रण करा जाय ।**

४. **कथा का पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।**

(क) मातङ्गी अपने का कइसन समझत रहीं ?

(ख) बलभद्र अङ्ग्रेज के चिठ्ठी का फारै के बाद काव कहिन ?

(ग) मातङ्गी सैकड़ौ सिपाहिन के बीच मे खड़ा अपने मर्दे का कवने रूप मे देखिन ?

(घ) अङ्ग्रेज सेना औ नेपाली सेना कब भवा रहा ?

(ङ) पति का सदा के खातिर आँखि बन्द कइ चुका देखै के बादौ मातङ्गी काव किहिन ?

५. सप्रसङ्ग व्याख्या करा जाय ।

(क) पति प्रेम औ वात्सल्य वन मे भरमार रहै, लेकिन जन्मभुमि के स्वाधीनता कै सुरक्षा वनकै उच्च ध्येय रहै ।

व्याकरण

सर्वनाम

१. नीचे वर्तमान काल कै कुछ वाक्य दइ गा हैं । वोका भूतकाल मे बदलि कै लिखा जाय :

(क) गोपाल लिखत हैं ।

(ख) तोहरे लोग पढ़त हौ ।

(ग) हमरे लोग पढ़तै हन ।

(घ) फुआ पढ़तै हीं ।

(ङ) आप लोग खाय भए हौ ।

(च) भरत पढ़ि भवा है ।

(छ) बिटिया खाय चुकी हीं ।

२. नीचे दिहा वाक्य कवन काल कै होय पहिचानिकै अलग अलग तालिका मे लिखा जाय :

(क) राम सीता औ अब्दुल साथी होंय ।

(ख) ऊ लोग आज पढ़ावा पाठ कै अभ्यास करत है ।

(ग) ऊ लोग बीचबीच मे मुस्कुरात हैं ।

(घ) घर मे से अम्मा कहत हीं ।

(ङ) तोहरेलोग का करत हौ ?

(च) आस्था कहत हीं ।

(छ) अम्मा हमरे अबहिन पढ़तै हन ।

(ज) अब्दुलौ अबहिन पढ़तै हैं ?

(झ) नाहीं, अब्दुल पढ़ि चुके हैं ।

ञ) वन घरे जात हैं ।

३. पाठ के दुसरे अनुच्छेद मे से कम से कम चार वाक्य का सामान्य वर्तमान काल मे बदलि कै लिखा जाय ?

४. नीचे के वाक्यन से विशेषण औ क्रियापद का पहिचानिकै अलगअलग तालिका मे लिखा जाय ।

(क) सीता बढ़िया कलाकार होंय ।

(ख) अकबर बुद्धिमान हैं ।

(ग) ऊ आदमी लम्मा है ।

(घ) करम हुसेन दुबर हैं ।

(ङ) राम कै घर बड़ा है ।

(च) शीला विद्यालय गई हैं ।

(छ) किसान खेत जोतत हैं ।

(ज) श्याम सड़कि पर गिरि पडा ।

(झ) कमल के घरे मोटर है ।

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

१. कवनो एक ऐतिहासिक कथा सुनिकै अपने शब्द मे लिखा जाय ।

२. सुगौली सन्धी के बारे मे पुछिकै अनुच्छेद लिखा जाय ।

पाठ
९

अवधी लोक जीवन औ पर्यावरण

-हंसावती कुर्मी

१. जीवन औ पर्यावरण बीच आदि कालै से बहुत घनिष्ट सम्बन्ध पावा जात है । घनिष्ट सम्बन्ध यहि से कहि सका जात है कि, छोट या बड़ा कवनो किसिम कै परिवर्तन या उथलपुथल पर्यावरण मा देखाय के बाद वहिकै प्रत्यक्ष असर जीवन पर परत है । जवने कै दृष्यावलोकन हमरे अपने जीवन के हरेक क्षण मे आवत औ जात है ।

२. वास्तव मा पञ्च महा भूत- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु औ आकाशमण्डल कै समन्वित रूप, जवने का हमरे पर्यावरण के नाँव से जाना जात है । यिहै अपने अनन्त स्वरूप के माध्यम से समस्त जन-समाज हेतु सुरक्षा कवच कै काम करत है । नदी, ताल, जङ्गल, वनसम्पदा औ सम्पूर्ण प्राकृतिक बैभव मानव का समय समय पर विषदयुक्त बनावत रहत है । सम्पूर्ण जनमानस जवने का लोक कै उपनाम दिहे है । वय लोगन कै दुःखसुख, उल्लास-वेदना, हासपरिहास होय । चाहे जन्म औ मरण से सम्बन्धित समस्त रीतिरिवाज के बहुरंगी स्वरूप का पर्यावरण अपने इन्द्रधनुषी छटा से प्रभावित करत आवा है । यही नाते लोकजीवन मा पर्यावरण कै विशेष महत्त्व है ।

३. अवध के गावँन मा प्रवेश करत के बागबगैचा, पोखरा, मन्दिर, खेती योग्य फसल से लहलहात समथर मैदानी भूभाग कै अदभूत प्राकृतिक नजारा कै अवलोकन करै के मिलत है । वहि लोकजीवन कै अध्ययन किहा जाय तो वय लोगन के हरेक सास मा पर्यावरण से जुटा उतार चढ़ाव मिलत है । जवने का पर्यावरण लोक रीतिरिवाज के नाँव से मानव जीवन पर अनौपचारिक अंकुश लगाये रहत है ।

४. अवधी जनजीवन औ पर्यावरण के बीचे विशेष सम्बन्ध देख सका जात है । बच्चा जब महतारी के गर्भ मा रहत है । वही समय पर, कीरापतंग मारब, नदी नारा पार करब बढ़िया नाही माना जात है । कहूँ कहूँ तो यी पूर्ण रूप से वर्जित है । अइसन मान्यता है कि जलराशि पार करत के भावी शिशु का समस्या होय सकत है औ मृत्यु कै सम्भावना बनि जात है । नवजात शिशु के जन्मोपरान्त जच्चा औ बच्चा के लगे गोबर से बना कण्डा सुलगाय दिहा जात है । जवने के धुवाँ से बाह्य हानिकारक तत्त्व कै प्रवेश अर्थात समावेश नाही होइ पावत है । लेकिन, यहिमे सावधानी अपनाइब जरुरी होत है । अइसन हरेक संस्कार पर्यावरण का

आधार मानि कै किहा जात है । यहि लोक गीत के माध्यम से यी स्पष्ट होत है कि वास्तव मा जीवन के हरेक हिस्सा मे पर्यावरणै कै सहारा रहत है ।

५. द्वारे पर से सासु आईं यहर वहर करैं, खुदुर बुदुर करैं हो

बउहर कहाँ बाटै कण्डा, नियाइ मै अगिन जलाइ देतिउँ रे

६. नवजात बच्चा का सर्दी खोखी भये पर सेंहुड के पाता कै प्रयोग किहा जात है । फोड़ाफुन्सी, पाका भये पर नीब कै पाता औ छाली कै प्रयोग विशेष रूप से किहा जात है । जवन अति उत्तम दवाई होय । यकरे साथसाथ अनेक किसिम कै वनस्पति औ कीरा का दवाई के रूप मा प्रयोग किहा जात है ।

७. अवधी समुदाय मा गावा जाय वाले हरेक ऋतु गीत मा पर्यावरण कै वर्णन किहा मिलत है । जवन यिहै स्पष्ट करत है कि यहिंकै जनजीवन प्रकृति के एकदम से जुड़ा है औ यी समुदाय प्रकृति प्रेमी है । ऋतु गीतन मा चाहे चइता होय या कजरी वा सावनी सब मा अवधी जनजीवन औ पर्यावरण कवने किसिम से भूमिका निर्वाह किहे हैं औ लोकजीवन का कवने ढंग से प्रभावित किहे हैं । वोका लयात्मक रूप से देखै का औ सुनै का मिलत है । उदहारण के खातिर कुछ गीत मा पर्यावरण कै दृश्य यहि मेर से देखायमान है-

(१) सावन की बरसे बदरिया मइया कै भीजै चुनरिया

अमवा के डारी पे छाई हरियाली, कोयलिया कुहकै बनि मतवाली

बदरा मे चमकै बिजुरिया, मइया कै भीजै चुनरिया ।

(२) नदिया के इरे तीरे पाकी हीं इमिलिया, उपरा भँवरा मड़राय

भँवरा के हाथे गोड़े पठयेव सन्देशवा मोरे बिरना मोहि लइ जायँ

कइसै आई बहिनी रे तोहरे देशवा तोहरे देशे जंगल अँधेर

जंगल कटाई बिरन बंगला छवइबै मोरे बिरना मोहे लइ जाव

(३) फूलन कै वर्णन करत गावत हीं-

अरे रामा बेला फूलै आधी रात, चमेली भिन्सारे रे हारी

झांझर गेंडुवा गंगाजल पानी,अरे रामा बलमा घुँटै आधी रात

८. यहिंके हरेक संस्कारगत क्रियाकलाप मा पर्यावरण कै प्रयोग किहा जात है औ यकरे बिना येका अपूर्ण माना जात है । हरेक संस्कार औ कर्मकाण्ड मा यहिंके लोगन मे यहि मेर कै जनविश्वास है कि जब शरीर पञ्चतत्त्व से बना है तो हरेक अवसर पर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु औ आकाशमण्डल के समन्वित रूप कै प्रयोग करब जरूरी है । जवन हम्मन के जन्म से लइकै मृत्य तक कइ जाय वाले हरेक संस्कार औ कर्मकाण्ड के अवसर पर प्रयोग होत है । कुछ उदाहरण अइसन है :

मानव जीवन अभूतपूर्ण बन्धन होय । विवाह जहाँ दुइ आत्मा कै मिलन होत है । ऊ तब तक पूर्ण नाही होत जब तक गेंडुवा के अनवरत जल से थारा नाही भरि जात है, औ महतारी बाप पाँव पूजि कै कन्या दान नाही करत हैं ।

उदाहरण- हाथे मा पानी भरा गेंडुवा कुसै केरी डाभ

मड़ये मा काँपै कवन रामा, कन्यादान कइसै मैं देउँ ।

९. यही किसिम से कुँआ पूजन, बगिया पूजन, पहाड़ पूजन, सिआर का नेवता देब, गौ दान, माटी छूअब, सगरा नहाय, हरदी लेपन आदि सब संस्कार पर्यावरण से सम्बन्धित हैं । पूजा के खातिर बनावा जाय वाला कलश कै वर्णन करत के यहि किसिम से गावा जात है-

कलसा तौ भल सुन्नर, नाहीं जानौ कवने गुन रे

नाही जानौं कुम्हरा के गढ़बे, तौ नाही जनौ माटी के गुना ।

१०. यही किसिम से घर मे संस्कारगत कार्यक्रम के अवसर पर चाहे चर होंय या अचर, सबका नेवता दिहा जात है । जवने का आमंत्रित करत यहि किसिम से गावा गा है-

आँन्ही पानी ! तुमहूँ नेवतौ तीनि दिवस जनि आयो ।

खाई ! लड़ाई तुमहु का नेवतौ तीनि दिवस जनि आयो ।

११. संस्कार से पहिले गंगा स्नान, तुलसी पूजन, पीपर पूजा, भूमि पूजन भर नाही वनस्पति, नवग्रह का नमन कइकै अपने काम कै शुरूवात किहा जात है । प्रसाद बनावत के तुलसी दल अवश्य डारा जात है । पूजा कै प्रसाद तयार करत के पञ्चामृत -(दूध, दही, घिऊ, मधु, औ भेली से बना मिश्रित रूप) कै प्रयोग किहा जात है । सबका देय से पहिले गाय का खियावै कै चलन है । भाँदौ महीना मे परै वाला तिनछठ्ठी पूजा करत के कुश, पराँस, महुवा, चना, तिन्नी कै चाउर, दही, हरदी, गुड़(भेली) कै प्रयोग किहा जात है । यही किसिम से अवधी महिलन कै महान पर्व करवा चउथ कै पूजा करत के सुहाग रक्षाहेतु गेंडुवा मा

गड़रा कै सींकि डारि कै, दीया बारि कै, रात के चन्द्रमा कै दर्शन करै के बादै पूजा किहा जात है । पितृपक्ष मा पितृलोग का तिल, जल दइकै वयँ लोगन का तृप्त किहा जात है । वइसै तौ कब्बौ पीपर पूजा, बरगद कै पूजा, अँवरा के पेड़ के नीचे खाना बनाय कै खाब, आम कै पूजा लगायत कै काम हर हमेशा चला करत है ।

१२. वृक्ष वर्णन तथा उनकै विशेषता यहिंके सँस्कृति मा औ लोक जीवन मा यहि मेर कै सम्बन्ध नह औ मांस कै है । यिहां कोटि कोटि देवता रहत हैं, जेकां स्थान–स्थान पर ग्रामीण जनमानस के द्वारा कल्पित किहा गै है औ जेकर पूजा अधिक विस्तृत क्षेत्र तक प्रचलित नाही रहत है । यहाँ तक कि कुछ देवता अइसन हैं जेकर पूजा एक गाँव मा होत है, लेकिन पड़ोस के गाँव मा नाही होत है । अवधी समुदाय मे अइसने देवतन कै सँख्या बहुत है । यी कवनो पेड़ पर, कवनो चउतरा पर, कवनो टीला पर, सड़क पर या चौराहा पर, बगिया मे, घर या गाँव के पीछे वा आगे कल्पित किहा जात हैं । सम्पूर्ण अवधी गाँवन मा स्थानीय देवता का नाँव अंकित करै के होय तौ सैंकड़ौ पृष्ठ रंगि सका जात है । वय दुरात्मा वा सदात्मा दूनौ कोटि कै हैं । यहिमा योगीबीर, ननकूदास, पहलवान, बीर, निमिहा वीर, ढेलहा बाबा, चौकिया वीर, अवसान देवी, आसारानी, दशारानी, गरज बीबी आदि प्रमुख होयँ ।

१३. अवधी लोकमानस मा पेड़-पौधा वा वनस्पतिउ कै देव कल्पना से बंचित नाही हैं । अवधी जनजीवन मे पेड़–पौधा वा वनस्पति मा देवात्मा कै निवास मानि जात है । अतः यहि पेड़-पौधा कै पूजा देव रूप मा किहा जात है । वय लोग का कष्ट पहुचाइब । वनकै शाखा अथवा पाता तुरै के निषेध होत है । यहिमे पीपर कै वृक्ष, बरगद कै वृक्ष, अँवरा कै वृक्ष, पाकड़ कै वृक्ष, आम्र वृक्ष, गूलरि बृक्ष, नीब वृक्ष, अशोक औ तुलसी कै पौधा का देवता कै संज्ञा अभिमत किहा जात है औ पूजा किहा जात है ।

१४. अवधी जनमानस मा पशु-पंक्षिउ के प्रति पूजा भाव कै दृष्टि है । अतः यहि कोटि मा वहि मेर कै देवता आवत हैं, जवन अवधी लोक साहित्य मा पशु-पक्षी एवं सरीसृप रूप मे पूजित औ प्रतिष्ठित हैं । यहि मा गाय, घोड़ा, हाथी, वृषभ, मजोर, हंस औ नागदेवता आदि प्रमुख हैं । यिहाँ कै लोग उपकारी औ अपकारी दूनौ कोटि कै हैं ।

१५. अतः यहि किसिम से हमरे पूरे विश्वास के साथ कहि सका जात है । अवधी लोकजीवन औ पर्यावरण के बीचे घनिष्ट सम्बन्ध है । यकरे बिना यहिँकै जीवन कै कवनो पक्ष नाही पूरा होइ सकत है । कवनो न कवनो रूप मा हमरे हर हमेशा यकरे निकट होवा जात है । लोक जीवन मा प्रचलित रीतिरिवाज का जीवन्तता औ परिपूर्णता प्रदान करै के खातिर पानी कै सुखद उपयोग, कहूँ हवा कै झोंका, कहूँ प्रज्ज्वलित अग्नि, कहूँ वृक्ष, नदी ताल तौ कहूँ धरती

माता के रूप मा पर्यावरण आपन सक्रिय योगदान देत है । जब तक यहि धरती पर मानव औ मानवता रही तब तक पर्यावरण से जनजीवन कै सम्बन्ध नाही टुटि सकत है । यहिके नाते आज के समय मा पर्यावरण कै रक्षा करब हम सब कै दायित्व होय । जीवन के हरेक संस्कार, उत्सव, अवसर पर येकर प्रयोग करै कै मतलब येकर संरक्षण करब होय औ यिहै बात हमरेन का सँस्कृति कै महानता औ विशालता का सिखावत है ।

शब्दार्थ

परिवर्तन :	बदलाव
दृष्यावलोकन :	दृश्य का ध्यानपूर्वक देखब
पञ्च महा भूत :	पञ्चतत्त्व
समन्वित :	संयुक्त
बैभव :	धनदौलत, सुख सुविधा
इन्द्रधनुषी छटा :	सप्तरङ्गी छटा
अवलोकन :	ध्यानपुर्वक देखै कै काम करब
जन्मोपरान्त :	जन्मै के तुरन्त बाद
भिन्सारे :	भोरहें, सकारे
क्रियाकलाप :	कामधाम, गतिविधि
कर्मकाण्ड :	संस्कारगत वाध्यकारी काम
अनवरत :	लगातार
अभूतपूर्ण :	विशेष महत्त्वपुर्ण
चर :	चलायमान, जिवित
अचर :	अचल, स्थिर
मिश्रित :	मिलावटी
पितृपक्ष :	पितरपख्ख
तृप्त :	संतुष्ट
कल्पित :	मनगढ़न्त

अंकित :	चित्रित, लिखित
संज्ञा :	नाँव वा उपमा
सरीसृप :	घिसरि कै चलै वाले जानवर
वृषभ :	बर्ध, सांड़
उपकारी :	दयालु, सहयोगी
अपकारी :	असहयोगी
जीवन्तता :	प्राणशक्ति, ओज
परिपूर्णता :	अभिव्यक्ति कै पुर्णता
प्रज्ज्वलित :	जलत रहा

अभ्यास

सुनाई

१. निबन्ध कै दुसरा औ तिसरा अनुच्छेद का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) पृथ्वी,जल,अग्नि,वायु औ आकाशमण्डल के समन्वित रूप का हमरे पर्यावरण कहा जात है ।

(ख) नदी, ताल, जङ्गल,वन-सम्पदा औ सम्पूर्ण प्रकृति मानव का विषदयुक्त बनावत रहत है ।

(ग) अवधी जनजीवन औ पर्यावरण के बीचे कवनो सम्बन्ध नाही है ।

(घ) नवजात शिशु के जन्मै के बाद जच्चा औ बच्चा के लगे धुनी सुलगाय दिहा जात है ।

(ङ) अवधी समाज के हरेक संस्कार का पर्यावरण कै आधार मानि कै किहा जात है ।

२. नीचे दिहा पाठ का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ उत्तर बतावा जाय ।

जहाँ बइठि कै लिखित हन, वकरे आगे पीछे, दहिने, बायें शिरीष कै अनेक पेड़ हैं । जरत घाम मे जब कि धरती निर्मम अग्निकुण्ड बनि जात है । शिरीष नीचे से उप्पर तक फूलन

से लदि चुका है । कमै फूल यहि किसिम के गरमी मे फुलाय कै हिम्मत करत हैं । कर्णिकर औ अमलतास (पलाश) के बाति नाही भुलान हन । उहौ अगलबगल मे बहुत हैं । लेकिन शिरीष के साथे अमलतास कै तुलना नाही किहा जाय सकत है । ऊ पन्द्रहै बीस दिन तक के खातिर फुलात हैं, बसन्त ऋतु कै पलाश के घत । कवीरदास का यहि किसिम से पन्द्रह दिन के खातिर लहकि उठब पसन्द नाही रहा । यिहौ काव कि दस दिन फूलै औ खंखड़ कै खंखड "दिन दस फूला फूलि कै खंखड भवा पलास" यइसन दुमदारन से तो लुड़रै भला ।

फूल होय तो शिरीष । बसन्त आवै के साथै लहकि उठत है औ अषाढ़ तक तो निश्चत रूप से मस्त बना रहत है । मन लागि गै तो भरे भादवों तक फुलात रहत है । जब उमस से प्राण उबलत रहत है औ लूह से हृदय सुखात रहत है । एकमात्र कालजयी अवधूत के जेस जीवन के आजेयता कै मन्त्र प्रचार करत रहत है । यद्यपि कवि लोगन के जेस हरेक फूल पाता का देखिकै मुग्ध होय लायक हृदय विधातौ मे नाही, लेकिन नितान्त ठूठौ नाही हन । शिरीष कै फूल हमरे मानस पटल मे कुछ कम्पन जरूर पयदा करत हैं ।

शिरीष कै पेड़ बड़ा औ छाँहींदार होत हैं । पुरान जमाना मे रईस जवने मंगलजनक पेड़ का अपने वृक्ष बाटिका कै छहरदेवाली के लगे लगावा करत रहें । वहमा एकठु शिरीषौं है (वृहत्संहिता ५५/३) अशोक, अरिष्ट, पुन्नाग औ शिरीष कै छाहीदार औ घना हरितमा से परिवेष्टित वृक्ष वाटिका अवश्य बहुत सुन्नर देखात होई । वात्सायन (कामसूत्र मे) बताये हैं कि बाटिका कै सघन छाँहदार पेड़ के छाँह मे झलुवा लगावा जाय के चाहीं ।

(डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शिरीष कै फूल के अवधी अनुवाद से)

(क) लेखक के दहिने बायें आगे पीछे केतकै पेड़ हैं ?

(ख) "दिन दस फूला फूलि कै खंखड भवा पलास ।" यहि वाक्य से आप काव समझा जात हौ ?

(ग) कवन फूल वसन्त से सुरू होइकै भर भाँदौ तक फुलात रहत है ?

(घ) रईस लोग कवने कवने पेड़न का मंगलकारी मानिकै बगियन मा लगावत रहें ?

(ङ) कवि लोगन के अनुसार कइसन पेड़न के छाँह मा झलुवा डारै के चाहीं ?

३. पाठ कै नववाँ अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ साथी का सुनै के कहा जाय ।

परिवर्तन - परिवर्तन

इन्द्रधनुषी, कर्मकाण्ड, पितृपक्ष, उपकारी, जीवन्तता

२. "हमरे विचार से जब तक यहि धरती पर मानव औ मानवता रही तब तक पर्यावरण से जनजीवन कै सम्बन्ध नाही टुटि सकत है ।" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत किहा जाय ।

३. आप अपने आसपास के वातावरण का कइसै चिन्हावा जाई । वोकरे बारे मा बुँदागत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा मे पेश किहा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा दशवाँ अनुच्छेद का तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति, यति औ लय के साथ पाठ के तिसरा अनुच्छेद कै सस्वर वाचन करा जाय ।

३. नीचे दिहा अनुच्छेद ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ खाली जगही मे कवन शब्द राखब उचित रही, बतावा जाय ।

ऊ विश्व मन्दिर होई कइसन ? एक अजीबो गरीब घर होई, ऊ । देखतै हरेर दर्शक कै तबीयत हरेर होइ जाई । रूची, विचार कै पूरा पूर ध्यान दिहा जाई ! भिन्नता मे अभिन्नता देखावै कै प्रयास किहा जाई । नक्शा कुछ यइसन होई, जवन हरेक के आँखि मे बसि जाय । कवनो एक खास धर्म सम्प्रदाय कै न होइकै ऊ मन्दिर हरेक धर्म सम्प्रदाय कै समन्वय मन्दिर ई । ऊ सबके खातिर होई, सबकै होई । वहिं बइठिकै सब सबके मनोभाव कै रक्षा कइ पइहैं, सब सबका सत्य, प्रेम औ करूणा कै अंश दइ पइहैं ।

वहि मन्दिर मे यइसन भावपूर्ण चित्र अङ्कित किहा जइहैं कि पाषण हृदय दर्शकौ का, वन से सत्य औ प्रेम कै कुछ कुछ अंश मिला करी । कवनो चित्र मे राज राजेश्वर राम गरीब केवट गुहराज का गले लगावत देखाय दिहैं तो कहूँ भीलनी के हाथे से, वोकर जूठ बइर खात देखा जइहैं । कहूँ सत्यवीर हरिश्चन्द्र, रानी तारा से लड़िका रोहित कै आधा कफन दृढता के साथ माङ्त होइहैं । कहूँ त्रिलोकेश्वर कृष्ण एक दीन दरिद्र अतिथि के धूरी पोता गोड़ का अपने

प्रेम आँसु से धोवत मिलिहैं, तो कहूँ उहै योगेश्वर बासुदेव घबड़ान अर्जुन का अनासक्ति योग कै सनेश देत होइहैं । साथै उहाँ आउर अइसन अनेक चित्र देखै के मिलिहैं । भगवान बुद्ध एक नगरवधु से भिक्षा लेत रहिहैं । कहूँ चिर्म रोगी के घाव का धोवत दयालु ईसा कै सुन्दर चित्र देखै के मिली औ कवनो चित्र मे उहै महात्मा संसार के पाप का अपने खून से धोवै खातिर सूली पर चढ़त देखाय परिहैं । प्रियतमा सूली का चूमै वाला मस्त मंसूरौ कै उहै मुस्कुरात चित्र नजर आई । कहूँ पीड़ा दिवानी मीरा अपने प्यारे सजन का चरणोदक समझि कै जहर कै प्याला प्रेम से पीयत होइहैं औ कवनो चित्र मे निर्बल सूर के बाहिं का झटकि कै ऊ नटखट नन्द नन्दन वहीं कहूँ लुकाय कै खड़ा होइहैं । एकठू आउर चित्र वहिं आप देखा जाई, खादी कै लङ्गोटी लगाये गान्धी एक ओर चर्खा चलावत होइहैं । वनहू के गोदि मे अछूत कै नंगधडंग लरिके खेलत होइहैं औ वन अपने मोहनी मन्त्र से विपक्षिउ लोगन के हृदय मे प्रेम औ सत्य का जागृत करत होइहैं, आउर केतनौ सजीव चित्र वहि मन्दिर मे बनावा होइहैं । हिमालय, गङ्गा, काशी, अयोध्या कै दृश्य आप देखा जाई । वहीं बौद्ध लोगन कै स्तूप औ बिहारौ देखाय परिहैं । काबा औ येरूसलम कै तीर्थौ वहि अङ्कित होइहैं । बड़े बड़े ऋषिन कै मस्त औलिया लोगन कै आकर्षित चित्र देखिकै आप आनन्द कै आकाश मे उड़ै लागा जाई ।

(वियोगी हरिके विश्व मन्दिर के अवधी अनुवाद से)

(क) नक्शा कुछ अइसन होई, जवन हरेक के ..... मे बसि जाय । (आँखि/मुह)

(ख) वहिं घर मे बइठि कै सब सबके ..... कै रक्षा कइ पइहैं । (मनोभाव/ स्वाभाव)

(ग) भगवान बुद्ध एक ..... से भिक्षा लेत रहिहैं । (देवता/बेश्या)

(घ) खादी कै लङ्गोटी लगाये ..... एक ओर चर्खा चलावत होइहैं । (नेता/गान्धी)

(ङ) वहि घर मे आप हिमालय, गङ्गा, काशी, अयोध्या कै ..... देखा जाई । (चित्र/दृश्य)

लिखाई

१. पाठ के बह्रवाँ कै सारांश लिखा जाय ।

२. "अवधी लोक जीवन औ पर्यावरण" निबन्ध कै मुख्य सनेश काव होय, लिखा जाय ?

३. "अवधी जन जीवन औ पर्यावरण" शीर्षक पर अपने गाँव कै वर्णन दुइ अनुच्छेद मे लिखा जाय ।

४. निबन्ध पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) केहमा कवनो किसिम कै परिवर्तन या उथलपुथल पर्यावरण मा देखाय के बाद वहिकै प्रत्यक्ष असर जीवन पर परत है ?

(ख) कवन चीज अपने अनन्त स्वरूप के माध्यम से जन-समाज हेतु सुरक्षा कवच कै काम करत है ?

(ग) जनमानस के हरेक सास मा पर्यावरण कै उतार चढ़ाव कइसै जान मिलत है ?

(घ) अवधी जनजीवन मे केहमा देवात्मा कै निवास माना गा है ?

(ङ) आज के समय मा केतकै रक्षा करब हम सब कै दायित्व होय ?

५. दिहा प्रश्न कै लम्मा जवाफ लिखा जाय ।

(क) अवधी लोकजीवन औ पर्यावरण के बीचे कवने कवने किसिम कै घनिष्ट सम्बन्ध है ?

व्याकरण

सर्वनाम

१. उदाहरण के आधार पर हरेक कारक औ विभक्ति कै प्रयोग कइकै एकएक वाक्य बनावा जाय ।

(क) कर्ता कारक औ प्रथमा विभक्ति कै प्रयोग

राम रावण का मारिन ।

(ख) कर्म कारक औ द्वितीया विभक्ति कै प्रयोग

हरि भात खात हैं । हरि तुहैं/तुमका बोलावत हैं ।

(ग) करण कारक औ तृतिया विभक्ति कै प्रयोग

पुस्तक से ज्ञान मिलत है । यइसन प्रेम राखौ/राखउ ।

(घ) सम्प्रदान कारक औ चतुर्थी विभक्ति कै प्रयोग

हम भाई का १० रूपया दिहेन । हम लिए चले आवो/आउअ ।

(ङ) अपादान कारक औ पञ्चम विभक्ति कै प्रयोग

छत पर से बिटिया गिर परी । कवने दिन से काम करिहौ ।

(च) सम्बन्ध कारक औ षष्ठी विभक्ति कै प्रयोग

हमार भाई अच्छा है । मोर बहिनिया पढ़ति हैं ।

(छ) अधिकरण कारक औ सप्तमी विभक्ति कै प्रयोग

किताब झोरा मे है । महतारी छतपर बइठी हैं ।

२. पाठ मा प्रयुक्त भवा विभक्ति शब्दन का कापी मे लिखा जाय ।

३. हरेक किसिम कै कारक प्रयोग कइकै एक अनुच्छेद लिखा जाय ।

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

१. अपने आसपास मिलै वाला वातावरणीय स्वरूप कै वर्णन करत दुइ अनुच्छेद लिखा जाय ।

२. आप के गाँव मे होय वाला साँस्कृतिक काम मे काव काव प्रयोग होत है केहु से पुछिकै लिखा जाय ।

पाठ १०

आयशा कै तीन दिन

१. आयशा खातुन बाँके जिला कै नेपालगञ्ज मे रहत हिन । वन एम.पी हाइस्कुल नेपालगञ्ज मे कक्षा ९ मे पढ़त हिन । आयशा हरेक दिन सुतै से पहिले आपन दिन भर के घटना से जुड़ा दैनिकी लिखै के बादै सुतत हिन । वनके द्वारा पुस १२, १३ औ १४ गते कै लिखा दैनिकी यिहाँ दिहा है ।

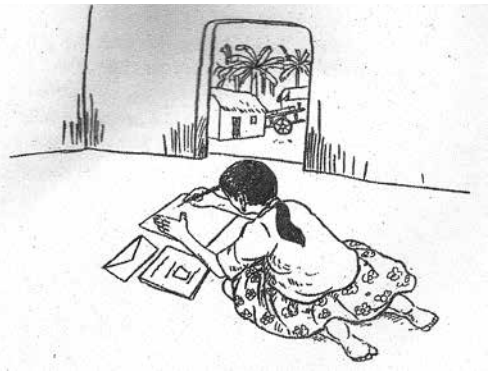

२०७६ पुस १२ गते

२. रोज जेस हम आजौ सबेरे ५ बजे उठेन । दैनिक क्रियाकलाप पुरा करै के बाद नेपाली औ गणित कै आज पढ़ाय जाय वाले पाठ का पढ़ेन । यी करत करत सात बजि चुका रहा । पाठ पढ़ै के बाद तरकारी काटै औ भात आदि बनावै मे भउजी का सहयोग किहेन । साढ़े आठ बजे भात खाय कै विद्यालय चलि दिहेन ।

३. विद्यालय मे अवधी लोकचित्रकला कै प्रदर्शनी चलत रहा । हमहू यहि चित्रकला मे सहभागी भा रहेन । हम अवधी लोकचित्रकला मे भित्ति चित्र अन्तरगत कोहबर कै चित्र का बनाये रहेन । हमार चित्र अवधी लोकजीवन पर आधारित रहै के नाते सब कै ध्यान यहि चित्र पर जात रहा । सब हमरे चित्र के बारे मा कुछ न कुछ जानै चाहत रहें । हमहू लोगन से पुछिकै यहि बारे मा जवन जानकारी जुटाय पाये रहेन । वइसै बताय देत रहेन । सुरूसुरू मे हम एक सामान्य चित्र के मानसिकता से यहि चित्र का बनाये रहेन । लेकिन, लोगन कै अपने चित्र के प्रति कै आकर्षण देखिकै हम एकदम उत्साहित होइ गयेन । यकरे पहिलेव हम यहि किसिम के प्रदर्शनी मे भाग लिहे रहेन । आज लोगन कै हमरे यहि चित्र प्रति कै आकर्षण देखिकै हमार उत्साह आउर बढि गवा है ।

४. एक बजे के आसपास पाण्डेय गुरूजी कै उद्घोष के साथ कार्यक्रम आगे बढ़ा । समापन कार्यक्रम कै अध्यक्षता प्रधानाध्यापक रामकिसुन मुराउ सर किहे रहें । यहि कार्यक्रम कै प्रमुख अतिथि नेपालगञ्ज उपमहानगरपालिका कै नगरपिता रामप्रसाद शाहजी रहें । अजय प्रसाद गुप्ता गुरूजी के स्वागत भाषण से शुरू भवा यहि कार्यक्रम मे अब यहि कार्यशाला मे

सहभागी लोगन कै बनावा चित्र मध्ये प्रथम, द्वितीय, तृतीय औ सान्त्वना पुरस्कार के घोषणा कै समय आय चुका रहा ।

५. सब से पहिले सान्त्वना पुरस्कार कै घोषणा भवा । राम प्रकाश चौधरी औ शर्मिला यादव यी पुरस्कार पाये रहें । अब पारी रहा तृतीय पुरस्कार कै, तृतीय पुरस्कार कै घोषणा भवा, वहूमा हमार नाँव नाही रहा । अब हमरे मन मा निराशा कै भाव आवै लाग । यही बीचे द्वितीय पुरस्कार पावै वाले राकेश कोइरी कै नाँव सुनाय गै । अब हमार धड़कन आउर बढ़ै लाग । अब फिर पाण्डेय गुरूजी माइक के लगे आइ चुका रहें । वन बोले के शुरू किहिन । हम प्रथम पुरस्कार के खातिर आपन नाँव सुनिकै चउँकि परेन । हमार कदम बड़े उत्सुकता के साथ मञ्च के ओर आगे बढ़ायेन ।

६. पहिला पुरस्कार मिले के बाद प्रमुख अतिथि के साथै मञ्चासीन हरेक महानुभाव हम्मै अपने मन्तब्य मे बधाई दिहिन । लेकिन जवन हम्मै सबसे ज्यादा प्रभावित किहिस । उ रहा प्रमुख अतिथि कै लोकचित्रकला पर वनकै विचार । वनके अनुसार लोकव्यवहार मे प्रचलित लोकचित्र मे सामाजिक औ धार्मिक दुनौ कै स्वरूप उपस्थित रहत है । जवने कै पुष्ट्याई के खातिर वन अलगअलग उदाहरण दिहिन । मञ्चीय कार्यक्रम खतम होय के बादौ सब हम्मै बधाई देत रहैं । हम्मै आज खुद पर बड़ा गर्व महशुस होत रहा ।

७. अब हम यी खुशखबरी का अपने अम्मा बाबूजी का सुनावै के आतुर रहेन । हमार कदम अबहिन घरके अङना मे पहुचही वाला रहा । अम्मा औ बाबूजी के बधाई कै अवाजि हमरे कान मे परा । आज हमरे खुशी कै ठेकान नाही रहा । हम अपने अम्मा औ बाबूजी से लिपटि कै अपने खुशी जाहिर किहेन । हमार मित्र मण्डलिउ आय रहें । कुछ देर हम अपने मित्रमण्डली के साथे खेलेन । फिर लउटि कै घरे आयेन औ गोड़ हाथ धोइकै पढ़ै बइठि गयेन । विद्यालय से आज कवनो गृहकार्य नाही रहा । यही नाते गणित औ विज्ञान कै काल्हि पढ़ाय जाय वाले पाठन का पढ़ेन औ खाना खाय खातिर अम्मा बोलावै लागीं । हाथमुँह धोवै के बाद भात खायेन औ फिर खटिया पर सुतै आइ गयेन ।

२०७६ पुस १३ गते

८. रोज जेस हम आजौ सबेरे ५ बजे उठै चाहत रहेन लेकिन आलस लागत रहै । यकरे बावजूद दैनिक क्रियाकलाप पूरा करै के बाद नेपाली औ अतिरिक्त गणित कै आज पढ़ाय जाय वाले पाठ का पढ़ेन । यी सब करतैकरत सात बजि चुका रहा । पाठ पढ़ै के बाद तरकारी काटै औ भात आदि बनावै मे भउजी का सहयोग किहेन । साढ़े आठ बजे भात खाय कै विद्यालय चलि दिहेन ।

विद्यालय मे आज सब हमरही ओर देखत रहैं । केहू बधाई देय तो केहू हमरे चित्र के बारे मा जानै चाहैं । हम सब से आर्शिवाद लेत औ मन्यवाद देतै अपने चित्रौ के बारे मे बताई । यिहै करतै पहिला घन्टी सुरू भवा । गुरुजी सबसे पहिले हम्मै बधाई दिहिन औ फिर पढ़ावै के सुरू किहिन । यिहै क्रम चउथी घन्टी तक चला । आज शुक्रवार रहा । चउथी घन्टी के बाद छुट्टी भवा । साथी लोग बजारि चलै के कहत रहें । हमहू सबके साथे बजारे गयेन । बजारि मे सबसे पहिले हमरे अपने अपने खातिर जरूरी कलम कापी आदि खरीदा गै । किताब कापी खरीदै के बाद सब लोग मिठाई के दुकानि पर पहुचा गै । हमरे रसमलाई औ समोसा खावा गै । मिठाई औ समोसा खाइकै अपने घरके ओर लउटा गै । रास्ता मा आज छुर्र खेलै कै कार्यक्रम बना । हमहू घरे पहुचिकै कपड़ा बदलेन औ खेलै खातिर बगिया के ओर चलि परेन ।

९. बगिया मे वादा के अनुसार सब साथी आय चुका रहें । खेल शुरू भै । हम्मन कै गोल का खानन मे हलिकै निकरै के रहा । पहिले खाना से तिसरे खाना तक आवतआवत खाली हम औ श्रीधर बचेन । बाकी कै सारा साथी मरि चुका रहें । अब हमरे चउथे खाना मे हलै कै प्रयास किहा जात रहा । यही बीचे चउथे खाना मे जात के मदन हमहू का छुइ लिहिन । तब तक कन श्रीधर चउथे खाना मे जाय चुका रहें । अब सब कै ध्यान श्रीधर पर रहा । अइसै चउथे खाना से बहरे निकरै के चक्कर मे श्रीधरौ का अकरम छुइ लिहिन ।

१०. हमरे आज कै छुर्र हारि गा रहेन । आज के हार कै दुःख काल्हि के खुशी के सुख से कम नाही रहा । बड़े दुःखी मन से सब से बिदा लइकै घरे आयेन । हाथमुँह धोइकै पढ़े बइठेन । आज गणित कै गृहकार्य ढेर रहा । बड़े मुश्किल से सारा गृहकार्य खतम किहेन । आज थकाई औ भूखि दूनौ लाग रहा । हाथमुँह धोइकै भात खायन औ बिस्तरा पर सूतै चलि गयेन ।

२०७६ पुस १४ गते

११. रोज जेस हम आज सबेरे ५ बजे उठेन । दैनिक क्रियाकलाप पूरा करै के बाद विज्ञान, नेपाली औ अङ्ग्रेजी कै आज पढ़ाय जाय वाला पाठ का पढ़ेन । यी करतैकरत साढ़े सात बजि चुका रहा । चाह पीयै के बाद हम बेह्वा के ओर चलि दिहेन ।

१२. हम बेह्वा मे गेना के फूल कै बीया बोये रहेन । वहि बीया से अब पेड़ निकरि चुका रहा । हम वहि पेड़न महिसे कुछ पेड़न का उखारि कै लायेन । वहि पेड़न का हम अपने अङ्गना के चारो ओर लगायेन । गेना के पेड़न का लगावतलगावत नौ बजि चुका रहा ।

१३. पेड़ लगावै के बाद हम साबुनपानी से बढ़िया से हाथमुह धोयन । हाथमुँह धोय कै भात खायन औ खेते के ओर चलि दिहेन । आज खेत मे आलु लगावा जात रहा । हमहू खेत मे पहुचतै बीया कै एक ढकिया उठायेन औ आलु कै बीया का बोवै लागेन । बीया बोवतैबोवत एक बजि गै । एक बजे घर से नहारी आय । आउर लोगन के साथै हमहू दुपहरिया खायेन । फिर खेत मे आलु कै कियारी पर माटी चढ़ावै कै काम शुरू भै ।

१४. रामाशीष काका सुइला से माटी चढ़ावत रहैं । अलगू औ सुहेला काकी माटी के आली का थपथपावै औ माटी का बराबर करै कै काम करत रहैं । हमहू वन्है सहयोग करै लागेन् । सारा काम करत करत चार बजि गै । काम खतम होय के बाद सबके साथै हमहू घरे आयेन । बढ़िया से साबुन पानी से हाथ गोड़ धोयेन । आज हमदिन भर काम किहे रहेन । पहिलाबाजी हम एक किसान से कइ जाय वाला मेहनत कै अनुभूति किहे रहेन । हम्मै आज बहुतै थका लाग रहा । अङना मे रहा खटिया पर लेटेन । पेड़े के छाँह मे पछुवा हवा कै झोका से हम्मै कब नीन आइ गै, पतै नाही चला । आँखि खुला तो आजी हम्मै जगावत रहैं । सन्झा होइकै चुका रहा । पानी से हाथमुँह धोयन् औ पढ़ै बइठि गयन् । पढ़त पढ़त नौ बजि गै । पढ़ै के बाद हाथमुँह धोइकै भात खायेन औ सुतै चलि गयेन ।

शब्दार्थ

लोकचित्रकला :	परम्परागत चित्र कै कला
प्रदर्शनी :	नुमाइस
कोहबर :	भित्ति चित्र कै एक किसिम, शुभ कार्य के अवसर पर बनाय जात है
मानसिकता :	मानसिक सोच
आकर्षण :	सुन्नर, खिचाव
कार्यशाला :	काम करै वाला जगह, कार्यक्रम के खातिर निश्चित कइ गवा जगह
सान्त्वना :	तसल्ली, प्रतियोगिता मे चउथा स्थान
उत्सुकता :	अधीरता, जिज्ञासा
मञ्चासीन :	मञ्च पे बइठे लोग
लोकव्यवहार :	परम्परागत सामाजिक व्यवहार

क्रियाकलाप :	गतिविधि
पुष्ट्याइ :	प्रमाणित करै के आधार
मित्रमण्डली :	सङ्गीसङ्हाती कै समूह
गृहकार्य :	घर कै काम, घरे करै खातिर विद्यालय से दिहा काम
ढकिया :	कास मूज से बना टोकरी
कियारी :	बीया बोवै खातिर तयार कइ गवा जमिन कै हिस्सा
सुइला :	कियारी बनावै औ भउरै के काम मे प्रयोग आवै वाला कृषी औजार

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ कै चउथा औ पचवाँ अनुच्छेद साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) समापन कार्यक्रम कै अध्यक्षता पाण्डेय सर किहे रहें ।

(ख) कार्यक्रम कै प्रमुख अतिथि नेपालगञ्ज उपमहानगरपालिका कै मेयर राम प्रसाद शाहजी रहें ।

(ग) राम प्रकाश चौधरी तृतीय पुरस्कार पाये रहें ।

(घ) द्वितीय पुरस्कार पावै वाले मे राकेश कोइरी कै नाँव सुना गै ।

(ङ) प्रथम पुरस्कार के खातिर आपन नाँव सुनिकै आयशा चउँकि परिन ।

२. २०७६ पुस १३ गते के दैनिकी का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ उत्तर बतावा जाय ।

(क) के का आलस लागत रहै ?

(ख) दैनिक क्रियाकलाप पूरा करै के बाद आयशा काव किहिन ?

(ग) विद्यालय पहुचै के बाद औ पहिला घन्टी शुरू होय से पहिले तक आयशा काव काव किहिन ?

(घ) बजार मे सबलोग काव काव खाइन् ?

(ङ) आयशा का आज के हार कै दुख काल्हि के खुशी के सुख से काहे कम नाही रहा ?

३. **पाठ कै नववाँ अनुच्छेद ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।**

बोलाई

१. **नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ साथी का ओसरपारी बोलै के कहा जाय ।**

मित्रमण्डली : मि त्र मण् ड ली

लोकचित्रकला, आकर्षण, सान्तवना, मञ्चासीनलोक व्यवहार

२. **"पहिलाबाजी हम एक किसान से कइ जाय वाले मेहनत कै अनुभूति किहे रहेन ।" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत किहा जाय ।**

३. **आप अपने एकदिन के दैनिकी का बुँदागत रूप मे सुनावा जाय ।**

पढ़ाई

१. **पाठ कै नववाँ अनुच्छेद तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।**

२. **गति, यति औ लय के साथ पाठ कै पचवाँ अनुच्छेद सस्वर वाचन करा जाय ।**

३. **२०७६ पुस १४ गतेके दैनिकी ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ खाली जगही मे कवन शब्द राखब उचित होई, बतावा जाय ।**

(क) ..... पीयै के बाद हम बेह्वा के ओर चलि दिहेन । (पानीवानी/चाह)

(ख) हम अपने ..... के चारो ओर वहि पेड़न का लगायेन । (अङना/दुवारे)

(ग) पेड़ लगावै के बाद हम ..... से बढ़िया से हाथमुँह धोयेन । (साबुनपानी/सर्फपानी)

(घ) आज खेत मे ..... लगावा जात रहा । (केरा/आलु)

(ङ) पेड़े के छाँह मे ..... हवा कै झोका से हम्मै कव नीन आइगै, पतै नाही चला । (पुरुवा/पछुवा)

लिखाई

१. **पाठ के अन्तिम अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।**

२. **"२०७६ पुस १२ गते" के दैनिकी कै मुख्य सनेश काव होय, लिखा जाय ?**

३. "शनिच्चर या कवनो छुट्टी के दिन कइ गवा काम कै वर्णन करत दैनिकी लिखा जाय।

४. आयशा कै दैनिकी पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय।

(क) आयशा कै उत्साह काहे बढ़ि गवा रहा ?

(ख) लोकव्यवहार मे प्रचलित लोकचित्र मे कवनकवन स्वरूप उपस्थित रहत हैं ?

(ग) आयशा कै कदम काहे बड़े उत्सुकता के साथ मञ्च के ओर आगे बढ़ि गयें ?

(घ) आयशा काव खेलै खातिर बगिया के ओर चलि परिन ?

(ङ) आयशा का काहे बहुत थका लाग रहा ?

५. सप्रसङ्ग व्याख्या करा जाय।

(क) लोक व्यवहार मे प्रचलित लोकचित्र मे सामाजिक औ धार्मिक दुनौ कै स्वरूप उपस्थित रहत हैं।

व्याकरण

१. आवश्यक विभक्ति कै प्रयोग कइकै अपने यिहाँ के कवनो मेला कै वर्णन किहा जाय।

२. खाली जगही मे उपयुक्त विभक्ति राखि के वाक्य पूरा किहा जाय।

(क) राम सीता ..... देखिन।

(ख) श्याम राम ..... बोलावत हैं।

(ग) किताब पढ़ै ..... ज्ञान मिलत है।

(घ) हम श्यामा..... कापी दिहेन।

(ङ) कवने दिन .... किताब लिखा जाई।

(च) .... बहिनिया पढ़त ही।

(छ) किताब टेबुल .... धरा है।

३. पाठ के अन्तिम अनुच्छेद मे प्रयोग भवा विभक्तिन का कापी मे लिखा जाय।

४. नीचे के वाक्य मे रहा द्वित्व शब्द का चीन्हि कै लिखा जाय :

(क) अलगु घरघर जाइकै सबका बताइन।

(ख) राम आगेआगे चलिकै सबका रास्ता देखाइन ।

(ग) राम के पीछेपिछ गाँव कै सब चलि दिहिन ।

(घ) श्याम के घरे ढेर गरगहना रहै ।

(ङ) सबेरे घुमै जातके छोटवार लाठी लइकै चलौ ।

(च) रामघाट के मेला खातिर घरही रोटीओटी बनाय लिहौ ।

(छ) काचकुच कचकुचवा कीन, जसकै मोटरी भुजयटा लीन ।

५. नीचे दिहा, पूर्ण, आंशिक औ अपरिवर्तित द्वित्व शब्दन कै प्रयोग कइकै वाक्य बनावा जाय ।

१. पूर्ण द्वित्व

शब्द	**द्वित्व प्रक्रिया**	**द्वरुक्त शब्द**
बूँद	बूँद +बूँद	बूँदबूँद
पानी	पानी + पानी	पनियैपानी
मीठ	मीठ +मीठ	मीठैमीठ

२. आंशिक द्वित्व

गहना	गहना + गहना	गरगहना
पैसा	पैसा +पैसा	परपैसा
छोट	छोट +छोट	छोटवार/छोट्कर
बड़ा	बड़ा + बड़ा	बड़वार

३. अपरिवर्तित द्वित्व

घर	घर+घर	घरवर
खर्च	खर्च+खर्च	खर्चबर्च
रोटी	रोटी+रोटी	रोटीओटी/रोटीसोटी
काँच	काँच+काच	काँचकुच

६. **उदाहरण के आधार पर नीचे दिहा प्रत्यय प्रयोग कइकै शब्द बनावा जाय ।**

धातु मूल	**+ प्रत्यय**	**= कृदन्त शब्द**	**धातु मूल**	**+ प्रत्यय**	**= कृदन्त शब्द**
अ	नाप् + अ	=	मांग	+ अ	= .....
अन	बच् + अन	=	खप	+ अत्	= .....
अन	चर् + अन	=	जल्	+ अन	= .....
अनी	चाट् + अनी	=			
अन्त	भिड् + अन्त	=	गढ्	+ अन्त	= .....
आ	सड् + आ	=			
आई	पढ् + आई	=	छाप्	+ आई	= .....
आव	चुन् + आव	=	घेर्	+ आव	= .....
औनी	जित् + औनी	=			
आन	ढल् + आन	=	काट्	+ आन	= .....
आनी	चल् + आनी	=	लाग्	+ आनी	= .....

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

१. कवनो एकदिन कै दैनिकी लिखिकै गुरुजी का देखावा जाय ।

२. अपने घर कै कवनो एक सदस्य कै दैनिकी लिखिकै कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय ।

पाठ
११

विवशता

-सच्चिदानन्द चौबे

१. 'बापू ।'.... घिसुवा पल्टिकै निहारिस, उकै बिटिया पारो पाछे खड़ी बोलावति रहै । माथेक पसीना पोछिकै पूछै लाग,'काव होय बिटिया ?'

२. 'बापू अम्मा पठइन है, धनुषा के बुखार चढ़ि आवा है, वहिके बदे घर मा कुल्ला भर दुधवो नाही है । भूख के मारे हाथ पाँव पटकि रहा है । अम्मा कहिन है जल्दी घरे आव ।'

३. गउवा मा सब पार्वती का पारो औ ध्यानचन्द का धनुषा कहिके बोलावत हैं । घिसुवा निरास होइके बड़े अनमने मन से बिटिया के ओर देखिस । हुदय कै पीड़ा माथे पर पसीना बनिकै झलकि उठी । अङ्गोछा से पसीना पोछिके फिर, घास काटै मा जुटि गा । शरीर ढाकै के बदे एकु धोती औ फटहा अङ्गोछा के अलावा उके पास अउर कवनो कपड़ा न रहै । घाम लागे पे अङ्गोछा मूड़े मा डारि लेत रहै । घाम से शरीर मा पसीना चुहचुहाय आवा । करिया बदन चमकि उठा औ ऊ अपने काम मा पारो का बिसरि गा । ओरखतओरखत जब पारो थकि गै तव फिर बोलाइस '"बापू । अम्मा जल्दी बोलाइन हैं ।"

४. पारो कै शब्द उकै एकान्त चिन्तन मा बाधा डारि दिहिस । खीझि कै बोला,"तय अबहिन हियैं खड़ी हस ? जा घरे । तोहरी अम्मा का बोलावै के अलावा अउरो कवनो काम है ? घासु न कटिबे तो पइसा कहाँ से आई ? पइसा के बिना धनुषा के बदे दूध औ दवाई कइसै लाइब ? जा अपनी अम्मा से बताय दिहे हम जल्दियै आय जइबै ।"

५. पारो रोवासी होइकै लउटि गै । घिसुवा फिर अपने काम मा जुटि गा । आजु उकै हाथ मसीन के माफिक चलै लाग । अपने धुनमा मगन घाम कब चला गा, पतै ना चला । मूड़ उठाय कै देखिस, दिन लहराय लाग है । एक दफे घासु के ओरिया निगाह फेरिस, अउरो दिन से आजु दुगुनी घास है । आपन परिश्रम कै फल देखिके उकै मुरझान चेहरा खिलि उठा । घासु कै गट्ठर बनाय कै, हसिया गट्ठरमा खोसिस औ बेचै के बदे बजरिया के ओर चलि परा । मन मा खुशी कै लड्डू फूटै लाग । आजु कै कमाई से धनुषा के बदे दूध औ कउनो नीक दवाई लेबै, जवने से बोखार जल्दी छुटि जाय । पारो के बदे कुर्ती औ सरख्खो के बदे ओढ़नी लेब बहुत जरूरी है । धनुषा का अङ्गरखा औ हमार धोतियौ फटि गा है, सो दुसरे फेरामा उहौ खरीद लेबै ।

६. कल्पना के तरङ्गमा बहत घिसुवा बजार कै दाह्े तक कब पहुचि गा, वहिका चेतै न रहा । शहर से हटिकै घरन कै एक लम्मी कतार है । उनका मकान कहौ चाहे कोठी वा बङ्गला कहौ, हियाँ मध्यम वर्ग कै डाक्टर, वकील, मास्टर आदि रहत हैं । कोई-कोई के घरके आगे फुलवारी औ घास कै लान बनी है । शुद्ध बयारि कै हियाँ कमी नाही है । अब शुद्ध हवा के साथै आजु के जुग मा शुद्ध दूध कहाँ से मिलै । यी तौ खरीदै से तो सम्भव नाही है । सो यी लाइन मा रहैं वाले बहुतेन के घरन मा गाय भइसि पाली गईं हैं ।

७. घिसुवा यही गली से जात रहै तौ मास्टर साहब कै नजर घासु कै गट्ठर मा पड़ी, मास्टर साहेब बरामदै से पुकारिन,'ये घिसुवा, कहाँ रहे यतना दिन, बहुत दिन बाद यहर फेरा भवा है । घिसुवा ठिठकि कै खड़ा होइ गा । बोझा मूड़े पर लादे तनिक मुँह घुमाय कै पूछिस,"घाँस लेबौ मास्टर साहेब ?" "लेब काहे नाही, बोल केतना पइसा लेबे ?" "अब का बताई महट्टर साहेब, दिनभर जरिजरिकै घास काटा है, अउर दिना से दुगुना है । अब जवन मुनासिब समझौ तवन आपै बताय दीन जाय ।"

८. "तो दश रूपया से ज्यादा का होई ?"

९. घीसू बड़े दयानीय आँखिन से देखिस । सोचै लाग दश रुपया मा तो आधा किलो दुधै भर होई, दवाई औ पारो कै कुर्ती, सलखो कै ओढ़नी कहा से खरिदबै, दिन भर के मेहनत कै फल खाली दश रुपया ? मजुरियो करित तो सत्तर अस्सी मिलि जात । भगवान भगियै अइसन बनाये है तौ काव कइ सकित हन ?

१०. मास्टर साहेब कुछ अउर बढ़ाय दीन जाय, नाही तो अन्ते देखी, हमका जल्दी है । बोहनी के समय मा भेगी न करौ ।

११. अच्छा चलौ पन्द्रह तौ लेबौ?

१२. ना होई बाबूजी, औ घिसूवा आगे बढ़ै बदे जइसै पाव उठाइस । मास्टर तो उड़त चिरइया चिन्हतै रहें, आजु कै घास अउर दिनन से दुना औ एकदम ताजा है । खरीद लेबै तौ चालिस से कम न मिली । दुइ दिनकै भरपुर चारा है । यिहै सोचि कै कहिन,"अच्छा भीतर लइ आव, बीसै लइ लिहेव ।"

१३. मरता का न करता ? सीधा मनई, दुसरे दवाई लइकै घरे जाय कै जल्दी, गाँवन कै गारी गलौज कै भाषा तो ऊ जानत रहै । पर शहर कै लच्छेदार, घुमाव वाली भाषा, ऊ नाही बुझत रहै । मास्टर के बातिन मा फसि गा ।

१४. '"अच्छा लेव मास्टर साहेब, तुमहू का सोचबौ कि कोइ घासु दीन रहै ।" ऊ का घरे जाय कै

जल्दी रहै । एकाएक धनुषा कै सुरत ऊ के आगे घुमि गै । सुलख्खी गोड़े मा पउढ़ाए है । दूध के बिना मुह सुखि गा है ? हड़बड़ाय कै बोलि उठा,"यी घासु कहा धरी मास्टर भइया ?"

१५. तनी घासु खोलि कै सफा कै देव औ चरही मा भरिदेव । सुखा खर पतगर निकारि देव नाही तो जनावर खाइके बिमार परि जइहैं ।

१६. घीसू गट्ठर खोलि कै घासु चरही मा भरत है । देखौ मास्टर आउर दिना से दुगुना घासु है कि नाही ? कुछ खर पतवार हटावै लाग । वहर पारो केर चेहरा घुमै लाग, 'बापू । जल्दी चलौ, अम्मा बोलाइन हैं ।' झटपट घास सफा करिके घीसू मास्टर साहेब के तरफ प्रार्थना भरी नजर से देखै लाग, 'जल्दी करि देव मास्टर लामे जाय के है ।'

१७. तनिक रुकौ पाँच सौ कै नोट रही, लरिकवा तुरावै गा है, अउतै होई । तब तक घीसू भइसा तनिक गइया का चारा डारि दे, देख न नोकरवो का आजु बीमार होय के रहा ।

१८. घिसुवा कै हृदय बेदना से तड़फि उठा । मनैमन सोचै लाग, यी मास्टर मे लागत है हृदय नाम कै चीजै नाही है ? मास्टर साहेब हमार बेटवा घर मा बिमार परा है । हमका जल्दी लउटै का है । अबहिन दवइयौ लेय का है, हम का जाय देव ।

१९. "अब का बताई घीसू ? यी लरिके जेब मा खुल्ला पइसा रहहिन नाई देत है, नाही तौ पाँच सौ नोट तुरावै का कउनो सउक लाग रहै ?"

२०. जब तलक पइसा तुराय कै लावत है तनी घास डारि देव गइया के । अब तो गाय गोरू पालब बहुतै टेढ़ी खीर है । दिवाला निकरि जात है । मगर शुद्ध दूध खाय के बदे अब गाय भइसि पलही का परत है । ओखरी मा मूड़ परा है तौ पहरूवा से कब तक डेराब ? डारि दे गइया का घासु, बस अउतै होई ।

२१. घास डारै बखत घिसुवा फिर सोचै लाग । ठीकै कहत हौ मास्टर । शुद्ध दूध तुम न खइहौ तो को खाई ? तब तक लरिकवा पइसा लइके आय जात है । पइसा घिसुवा के देत है । घिसुवा पइसा लइके हाथ जोड़त है, भगवान तुम्हार भला करै मास्टर ।

२२. बड़ी तेजी के साथ घिसुवा घर के ओरिया बढ़ा । सूरज ढलि चुका रहै । साँझ कै लाली अपने आभा से लुभावय कै कोशिस करति है । वहर रजनीबाला सितारन कै चुनरिया ओढ़े, घुघट के आड़ से सन्ध्या का हरावै कै प्रयास करति रहै । सूरज भगवान का बुड़त देखिके घिसुवा के चाल मा अउर फुर्ति आय गै । उ लम्मा लम्मा डेग भरत चलि परा घर के ओर । रास्ता मा डाक्टर साहेब कै दुकान मा पहुचा तो डाक्टर कहू मरीज देखै अन्ते गये रहैं । निराश होइके हुवैं बइठि के वरखै लाग, डाक्टर साहेब का ।

२३. डाक्टर आयें तो घिसुवा हाथ जोरिकै बोला,"डाक्टर साहेब हम बड़ी देर से बइठे हन, हम पर किरपा कइ दीन जाय ।" डाक्टर बहुत सीधे औ दयालु रहैं पुछि लिहिन, "का भवा है तुमका ?"

२४. "डाक्टर साहेब हम ठीक हन । हमार लरिका बेराम है ।"

२५. "काव कष्ट है ?'"

२६. '"खासी आवत है, बोखार रहत है, छाती पिरात है, राति राति भर छटपटात है, डाक्टर साहेब ।"

"कब से यी सब है ?"

२७. "काल्हि सबरे से ।"

२८. "काल्हि सबेरे से यतना सब होत रहा औ तुम दवाई लेय अब आये हौ ?" डाक्टर खीझि कै बोला । गाँवन कै लोग बच्चन के तरफ से बहुत लापरवाह रहत हौ, आबादी बढ़ावै मा बहुत आगे हौ, पर पालनपोषण मा बहुतै असावधान रहत हौ । सर्दी कै महीना है, गरम कपड़ा ना पहिनइबो तो सर्दी ना लागी ?

२९. घिसुवा सोचै लाग, सुती कपड़ा तौ मिलत नाही, गरम कहाँ से पहिनाई । यी डाक्टरवो ना । जेकरे उप्पर बीतत है, उहै पीरा जानी । जाके पाय न फटी बेंवाई सो का जानैं पीर पराई । एकु वह मास्टर यत्ती देर काम कराइस अब यी डाक्टर दवाई कै जगह मा लेक्चर झारत है । ऊ मउन रहबै उचित सम्झिस । डाक्टर नुस्खा लिखिकै कम्पाउन्डर का दिहिन औ घीसु से कहिन देखौ भइया तुम्हरे बेटवा का निमोनिया होइ गवा है । दवाई दइके बेटउवा का ओढ़ाय कै राखेव । रूई कै फाहा लइके पसुरिन का सेकाय दिहेव औ सबेरेन ९ बजे आय कै देखाय जायौ । अब जाव देर न करौ ।

३०. येकाएक बल्ब जलि उठें । घीसु हड़बड़ाय उठा कि फुरै रजनीबाला सन्ध्या सुन्दरी का पराजित करिके आय पहुची हैं । दवाई कै शीशी लइके डाक्टर का मनही मन आर्शिबाद देत निकरा । रास्ता मा एक पाव दूध लिहिस औ तुरुन्त चलि परा घर के ओर । औ उका अनुभव भवा कि ऊ वास्तव मे देर कइ डारिस है । कोऊ साथी सङ्हाती ऊका आजु रास्ता मा नाही भेटान । ऊ रास्ता भर भगवान कै नाँव लेत दुर्गा मइया कै मनउती मनावत घरे पहुचा । दुआरे पे पहुचतै ऊ स्तब्ध होइ गा । आज पारो दउरि कै नाही आई कहै बापू हमरे औ धनुषा खातिर बजार से काव लाये हौ ? अङना मे पहुचा तो चूल्हा ठण्डा परा रहै । तब्बै भीतर से रोवै कै

आवाजि सुनाय परा । रोवै कै आवाज औ सिसकी कान मा परा तो दरवाजे पर पहुचि कै कोठरी कै दरवाजा खटखटाय कै बोलाइस, 'पारो ।'

३१. पारो दुआरे निकरि कै चिल्लाय उठी बापू । बापू । धनुषा चला गवा ।

३२. घिसुवा के हाथे से दवाई कै शीशी औ दूध कै बोतल छुटि गै । घर भर मा कोहराम मचि गा, अब आये हौ, जब तोता हाथ से उड़ि गा ? हमार बेटवा दुध औ दवाई बिना चलि गै । अन्त तक 'बापू । बापू ।' कहिकै बोलावत रहा । हाय । हमार धनुषा । अब कहाँ पइबै, सुलख्खा छाती मा लगाये चिल्लाय चिल्लाय रोवै लागी ।

३३. गाँव कै मनई सब एकट्ठा होइ गयें । कोऊ आइके घीसू का ढाढ़स बन्हावै लाग भइया हिम्मत कर, भागि कै लिखा को मेटि सका है ? समबेदना कै आँशु सबके आँखिन से बहै लागि । लोग काधे मा हाथु राखि घिसुवा का समझावै लागे कर्तार जवन रचे हैं, तवन होइन कै रहत है ।

३४. गाँव कै बड़ी बूढ़ी मेहररुवै सुलख्खा का ढाढ़सु बन्हावै लागीं,'ना रोव सुलख्खिया । भगवान अब्बै तोरि कोख बन्द नाही किहे है, उई लिहिन हैं तौ देबौ करिहैं ।' पारो चिल्लाय कै रोय परी,'हमरे यक्कै भाई रहा, अब हम केहिके हाथेमा राखी बन्हिबै । हमार धनुषा ! बिना दवाई के चलि बसा । मुँह मा दुइ घूट दूधौ ना डारि पायन । हम का करी ? दवाई खाय लेत तौ सन्तोष होइ जात कि कुछ कीन, फिर भगवान कै मर्जी ।

३५. रोवत रोवत सारी राति गुजरि गै । दरवाजे आगि जलत रही औ जलत रहें गउवा के मनई मेहरारून कै हृदय । एक खद्दर कै डेढ गज कै टुकड़ा, जवन सुलख्खी शायद आपन कुर्ती बनुआवै बदे धरे रही, कफन के नाम पे, उहै उप्पर से ओढ़ाय दीन गा । दुसरे दिन सबेरै धनुषा कै अन्तिम संस्कार कै दीन गा ।

३६. श्मसान घाट से लउटि के सब दुआरे पर कुछ देर निस्तब्ध बइठा रहें, फिर अपने घरे चल गयें । घीसू उठिकै आपन हँसिया ढूढ़ै लाग । पारो पूछै लागी, काव ढूढ़त हौ बापू ?

३७ "आपन जीवन दाता बिटिया ।"

३८. "काव होय ?" सुलक्खी पूछि बइठी ?

३९. "हसिया अउर का ?"

४०. '"हसिया काहे ढूढ़त हौ ?"

४१. "घासु काटै ना जाब का ?"

४२. "आजु न जाव तो का होइ जाई ?"

४३. "रोटी कहाँ से आई, का खइबे शाम का ?"

४४. यहु पापी पेट का का करी ? खाली रहत है तब चोरी, डाका, बेइमानी सब अनैतिक काम करावत है । भरा रहत है तो यी अउरो आँखि बदलि देत है । घिसुवा हँसिया उठाय कै घासु काटै चला गै ।

सुलक्खी अपने डचोढ़ी मा बइठी विवशता कै आँशु अचरा से पोछत रहिगै ।

शब्दार्थ

निहारिस :	देखिस
अनमने :	बिना मन कै
चुहचुहाय :	चकचकाब
ओरखत :	अगोरत
उपयोग :	सही प्रयोग
उकै :	वकरे
बदे :	खातिर
माफिक :	मेर
अड्गरखा :	आङा
लान :	गलियारा
मुनासिब :	उचित
लच्छेदार :	चालाकी पूर्ण
पउढ़ाए :	सुताए
रजनीबाला :	सूर्यास्त के समय कै सूर्य कै किरण
असावधान :	लापरवाह

बेंवाई :	बेवारा
कर्तार :	भगवान
निस्तब्ध :	उत्तरविहीन
डचोढ़ी :	ओसारा

अभ्यास

सुनाई

१. कथा कै पहिला, दुसरा, तिसरा औ चउथा अनुच्छेद का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) घिसुवा मुड़ उठाय कै निहारिस ।

(ख) 'बापू अम्मा पठइन है, धनुषा के बुखार चढ़ि आवा है' पारो कहिस ।

(ग) घिसुवा अङ्गोछा से पसीना पोछिके फिर, घास काटै मा जुटिगा ।

(घ) घाम से घिसुवा के शरीर मा पसीना चुहचुहाय आवा ।

(ङ) घासु न कटिबे तो पइसा कहा से आई? घिसुवा पारो से कहिस ।

२. नीचे दिहा पाठ का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ उत्तर बतावा जाय ।

गोटिहवा गाँव के पुरुब दख्खिन कोने के बड़के पोखरा मे दिन बइठत कै सूर्य के बिम्ब से पोखरा कै पानी लाल रहै । गाँव कै गाय-गोरू, भइसि, छगड़ी सब वहि गाँव के शिवपुरा गाँव के बीच मा फइला गउचर मा चरिकै सन्झक अपने अपने घारी के ओर आवत के, वही पोखरा मे पानी पीयै लागें । वन कै लम्मी लम्मी परछाही पोखरा मा धीरे धीरे हीलत रहै । घूरहू महतो वहरै कै आपन जौ, चना कै खेत देखिकै लउटत पोखरा के किनारे पहुचलै रहें कि न जानै केहर से आइकै अलगुवा, वनकै दूनौ गोड़ पकरि कै रोवै चिल्लाय लाग- 'महतो काका आप के रहतै अब गाँव छोड़ै के परा । अब न बइठि मिली । काका अब नाही सहा जाई ।'

'हां, जानकारी तो हमहू पाये हन ।' गोड़ छोड़वतै कहिन, 'अइसन बेइज्जती कइसै सहा जाय ।''लेकिन अलगू, तोहरे लड़िकौ कै कम दोष नाही है न, दुलहिन का अपने कर के बल

मा राखै के परत है । यी मेर कै बउरहा लरिका कै बिहअवै काहे किहे रहेव? सोना जेस दुलहिन का माटी कइके, आज यिहौ दिन गाँव का देखै के परा ।'

मूड़ झुकाये अलगुवा कहिस, 'काका हम यी बात नाही समझित,यी बात नाही है । पतोह तो लक्ष्मी जेस रही । बियाहन, वर्तन माजब, घारी बग्गर कै गोबर उठावै से लइके, खेते मा खाद डारै के, बइठावै, काटै के, हर काम मे उ घर के मरदेन से कम नाही रही । बियाहि कै जबसे लायन, तब से हमरे घर मा बरक्कत कै बाढ़ि आवै के बात न माने सुख नाही है । सुन्नरौ केतना रही, बाभन क्षत्री कै बिटिया पतोह जेस रही । लेकिन काका, लड़िका का मारि कै बहइबो तो नाही भवा । लड़िका नाही रही तो पतोह काहे कै ? अच्छा, खराब, भलादमी लुच्चा साथेन राखै के परत है । लेकिन यी बेइज्जती कवन मेर सही काका ? यी बेइज्जती कवन मेर सही..... ?'

घुरहू महतो कै मूड़ निहुरि गै । मानव उनहिन कै बिटिया पतोह दुसरे किहाँ चली गै होंय । अघोर लाज से गाँव मा मुह देखावत महतो का बहुत गाढ़ लागत रहै । अइसन लागै कि चेहरा करिया होय गवा । एक छिन बाद 'लेव देखब' भर कहि कै अलगुवा कै बिना परवाह किहे, वन धीरे धीरे घर के ओर चलें ।

हारजीत कै अवधी अनुबाद से

(क) के करे बिम्ब से पोखरा कै पानी लाल रहै ?

(ख) घूरहू महतो कै के दूनौ गोड़ पकरि कै रोवै चिल्लाय लाग?

(ग) सोना जेस दुलहिन का माटी कइके, आज यिहौ दिन गाँव का देखै के परा ।' यी के के से कहिस ?

(घ) लड़िका नाही रही तो पतोह काहे कै ? यी के के से कहिस?

(ङ) घुरहू महतो कै मूड़ काहे निहुरि गै ?

३. पाठ कै दशवाँ औ ग्यारहवाँ अनुच्छेद ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय ।

चुहचुहाय, ओरखत, माफिक, अङ्गरखा, लान, मुनासिब, लच्छेदार

२. "मास्टर तो उड़त चिरइया चिन्हतै रहें।" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल कइकै वोसे निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

३. आप यहि कथा का कइसै कहा जाई । यहि बारे मा बुँदागत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा मे पेश किहा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा सतवाँ अनुच्छेद का तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति, यति औ लय के साथ पाठ के ग्यारहवाँ औ बरहवाँ अनुच्छेद सस्वर वाचन करा जाय ।

३. अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ खाली जगही मे उचित शब्द राखिकै वाक्य पूरा करा जाय ।

चबुतरा के बीचे एक सुन्नर सजा सजावा यज्ञशाला रहै । श्री ३ महाराज जंगबहादुरै कै आज फिर से बियाह । दरवाजा के एक किनारे डोली मा एक लड़िकी के साथे गुरु पुरोहित लोग पूजा कै समान तयार कइके बइठा हैं । लेकिन अगोरि कै बइठे ढेर देर होइ गै, दुलहा श्री ३ महाराज कै सवारी अबहिन तक नाही भा है । साइत बीतै लाग है । खबर पहुचावै खातिर एक हलकारा दउरा तउनेव पर सवारी नाही भै । लेकिन हलकारा दउरत आय औ उपरेहित के कानमा कुछ कहिस । उपरेहित स्वीकृत सूचक मूड़ हिलाइन । अब वियाह कै सुरुवात भै । सोने के कलश पर सेनुर लगाइ कै वहमा लालटीका लगाइ गै । वकरे बाद चबुतरा के किनारे के एक जंगला से लटका सूत का यज्ञशाला के सामने बनावा उज्जर कपड़ा से सजावा आसन पर धइगै । बियाह देखै आवै वाले, भारदार औ चौरपइ्ख लिहे खड़ा हौदमाल कै कारिन्दा बिना कवनो आश्चर्य के, अचल खड़ा रहें ।

पुरोहित कब्बो तेज आवाजि तो कब्बो मद्धिम आवाजि से कर्मकाण्ड बाचै के सुरु किहिन । बाचै वाला आवाजि सुस्त होतैहोत एकदम से रूकि गै । उपरेहित गुरुजी का देखिन । गुरुजी पुरोहित का देखिन, बाद मा गुरुजी तनी तेज आवाजि मा दुलहिन कै सवारी लावै खातिर नकचेरवै मुश्तैद डिट्ठा का आदेश दिहिन । डिट्ठा एक छिन रुके औ बाद मा वहि से धीरेधीरे चलें । एक छिन बाद वहिं खड़ा भाई भारदार औ हौदमाल के कारिन्दा लोगन कै आँखि एक साथ कुछ इसारा किहिस । फिर सामने जाइके केन्द्रिभूत होइ गै । दुलहिन आवत रहैं ।

मनई कथा कै अवधी अनुवाद से

(क) आजौ ..... कै फिर से बियाह रहै ।

(ख) हलकारा दउरत आय औ ..... के कानमा कुछ कहिस ।

(ग) सोने के कलश पर सेनुर लगाइ कै वहमा ..... लगाइ गै ।

(घ) जङला से लटका सूत का ..... उज्जर कपड़ा से सजावा आसन पर धइगै ।?

(ङ) गुरुजी दुलहिन कै सवारी ..... नकचेरवै मुश्तैद डिट्ठा का आदेश दिहिन ।

लिखाई

१. पाठ कै सारांश लिखा जाय ।

२. "विवशता" कथा कै मुख्य सनेश काव होय, लिखा जाय ?

३. बेटवा कै तबीयत बहुत खराब होय कै समाचार सुनै के बादौ घिसुवा कवने विवशता के चलते घास काटत रहि गै ?

४. कथा का पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) पारो के कहत कहत थकि जाय के बादौ घिसुवा काहे अनसुना जेस घास काटत रहै ?

(ख) घिसुवा खीझि कै अपने बिटिया पारो से काव कहिस ?

(ग) घिसुवा काहे कहिस कि मास्टर में लागत है हृदय नाम कै चीजै नाही है ?

(घ) सूरज भगवान का बुड़त देखिके घिसुवा के चाल मा काहे आउर फुर्ति आय गै । ?

(ङ) दुवारे पे पहुचतै घिसुवा काहे स्तब्ध होइ गा ?

५. सप्रसङ्ग व्याख्या करा जाय ।

(क) यहु पापी पेट का का करी ? खाली रहत है तब चोरी, डाका, बेइमानी सब अनैतिक काम करावत है । भरा रहत है तो यी अउरो आँखि बदलि देत है ।

व्याकरण

कृत प्रत्यय

उदाहरण:

अक्कड़ बोल् + अक्कड़ = बोलक्कड़ पिय् + अक्कड़ = पियक्कड़

अन्ता फिर् + अन्ता = फिरन्ता मग् + अन्ता = मगन्ता

१. **नीचे दिहा कृत प्रत्यय कै प्रयोग कइकै दुइ/दुइ शब्द बनावा जाय ।**

अन, अनी, आव, आन, आवटी, ऐया, ऐया

तद्धित प्रत्यय

उदाहरण:

अई	मर्द + अई	= मर्दइ	पहुना + अई	= पहुनई
आ	पंख + आ	= पंखा	कर्ज + आ	= कर्जा

२. **नीचे दिहा तद्धित प्रत्यय कै प्रयोग कइकै दुइ/दुइ शब्द बनावा जाय ।**

अउती, इया, अइत, अइत, इष्ट, अक्कड, ईन

३. **नीचे दिहा शब्दन कै बनावट के तरीका का देखाइ कै, यी मध्ये कै कृत प्रत्यय औ तद्धित प्रत्यय का अलग कइकै सूची बनावा जाय ।**

पढाई, ढलान, पहुनई, चतुराइ, खेलाडी, मिलान , मरकहा, जेवनार, अधियार पढिकै, रोगिया, खेल्तै, नच्तै, बरियार, मित्रता, मनउती

अपूर्ण पक्ष

४. **काल्हि सबेरे आठ बजे आप के परिवार कै के के कवन कवन काम करत रहें ? अपूर्ण भूतकाल कै प्रयोग कइकै हरेक सदस्य के खातिर एक/एक वाक्य बनावा जाय ।**

५. **आज यहि समय आप के परिवार कै के के कवन कवन काम करत हैं ? अपूर्ण वर्तमानकाल कै प्रयोग कइकै हरेक सदस्य के खातिर एक/ एक वाक्य बनावा जाय ।**

६. **परसो सबेरे आठ बजे आप के परिवार कै के के कवन कवन काम करत रहिहैं ? अपूर्ण भविष्यतकाल कै प्रयोग कइकै हरेक सदस्य के खातिर एक/एक वाक्य बनावा जाय ।**

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) घिसुवा के पारिवारिक अवस्था कै वर्तमान रूप कै अनुमान करत वर्णन करा जाय ।

(ख) आप के गाँव मे घटना कवनो घटना के बारे मे पुछिकै दुइ अुनच्छेद लिखा जाय ।

पाठ
११

अवधी भाषा कै आदिकवि कुक्कुरीपा

१. अवधी साहित्य कै उन्नायक आदिकवि कुक्कुरीपा कै जन्म कपिलवस्तु राज्य कै ब्राह्मण कुल मे भा रहा। कालखण्ड के हिसाब से यन ई.सं. ८४० (देवपाल ८०९-४९) के आसपास कै माना जात हैं। राहुल सांकृत्ययान अपने किताब हिन्दी काव्य धारा मे चौरासी सिद्ध लोगन के सन्दर्भ मे कुक्कुरीपौ कै दुइ पद है। कुक्कुरीपा कै परिचय देत वन कहत हैं। "काल ८४० ई.(देवपाल ८० ९-४९) देश-कपिलवस्तु, कुल ब्राह्मण सिद्ध (३४), साहित्यिक कृति- योगभावनोपदेश औ स्रव परिच्छेदन।

२. डा. धर्मवीर भारती अपने किताब 'सिद्ध साहित्य' मे राहुल सांकृत्यायन के विचार कै समर्थन करत यनकै जन्मस्थान कपिलवस्तु औं जाति कै ब्राहमण माने हैं।

३. नेपाल कै सन्त साहित्य विशेषज्ञ जनकलाल शर्मौ कुक्कुरीपा का कपिलवस्तु कै माने हैं औ जाति ब्राह्मण कहे हैं। वन कुक्कुरीपा का मीनपा कै गुरू के रूप मे चर्चा किहे हैं।

४. यही किसिम से प्रो. सेम्पा दोर्जे के द्वारा हिन्दी मे अनुबाद किहा औ आचार्य अभयदत्त श्री प्रबीण के द्वारा तिब्बती भाषा मे लिखा "चौरासी सिद्धो का वृतान्त" नामक किताबौ मे वन कै परिचय देत कहा गा है 'गुरु कुक्कुरीपा कै जन्मस्थान कपिलवस्तु (कविल-स-कुन) रहा औ वन जाति कै ब्राह्मण रहें। यही किसिम से कुन खेन पदमकर (पृ. ७२-७३) के अनुसार यनकै जन्मस्थान वाराणसी (भारत) के पुर्वी भाग मे स्थित सुवर्णकुण्ड होय। कुक्कुरीपाद सरह कै छोट भाई रहें। यनके बाल्यकाल कै नाँव उदभट स्वामी रहा। राहुल नाँव कै उपाध्याय से उप सम्पदा लइकै भिक्षु बनें। भिक्षु के रूप मे यन कै नाँव वीरभद्र रहा। वन वही उपाध्याय से मन्त्र यान साधना कै दिक्षा लइकै बोध गया मे साधना करत रहें। उहाँ वन 'त्यायिपा' के नाँव से प्रसिद्ध भयें। वहि वन दिन भर सौ ठू कुतुइन के साथे रहत रहें

औ रात मे डाकिनी (डाइन) लोगन से गणचक्रन कै उपक्रम किहा करत रहें । यही नाते यनकै नाँव कुक्कुरीपा परा ।

५. राहुल औ आउर विद्वान लोगन के द्वारा चर्चा किहा कपिलवस्तु राज्य वर्तमान मे हमरेन देश के लुम्बिनी अञ्चल अन्तर्गत कपिलवस्तु जिला मे परत है । वही कपिलवस्तु के नाँव पर यहि जिला कै नाँव कपिलवस्तु राखि गै । उप्पर चर्चा किहा अलगअलग विद्वान लोगन के विचार के आधार पर यी कहै मे कवनो शंका नाही है कि कुक्कुरीपा यही कपिलवस्तु राज्य अन्तर्गत कै ब्राह्मण कुल मे जन्मा रहें ।

६. कुक्कुरीपा के साथै कुक्कुरीपाद, कुकुराजा आदि के नाँव से प्रसिद्ध यन, सिद्ध सन्त लोगन मध्ये मर्यादाक्रम मे ३४ वें स्थान पर आवत हैं । यही किसिम से सिद्ध सन्त लोगन कै मर्यादाक्रम के आधार पर तो यन महत्त्वपूर्ण हइन हैं, साथै साथ वर्तमान नेपाल मे मिला अबहिन तक कै सबसे पुरान साहित्य यनही कै मिलत है । यिहै भर नाही अवधी भाषा कै अबहिन तक मिला लेख्य साहित्य मध्ये सबसे पुरान साहित्य यनही कै होय । यही नाते कुक्कुरीपै अवधी साहित्य कै आदि कवि होंय । कुक्कुरीपै से अवधी साहित्य रचना कै अबिरल धारा निकरिके आज अवधी भाषा औ नेपालीय साहित्य प्रतिभा क्षेत्र का विश्व अवधी साहित्य सागर मे नेपाल के वैशिष्ट्य योगदान का गति देत है ।

७. प्रो. सेम्पा दोर्जे कुक्कुरीपा कै नाँव कुक्कुरीपा कइसै परा, यहि वारे मे चर्चा करत कहत हैं 'कपिलवस्तु कै एक जने बाभन का तन्त्र शक्ति पावै कै इच्छा जाग । वन योगी कै ध्यान करत धीरेधीरे लुम्बिनी नगर के ओर जात रहें । रस्ता मे एकठू कुतुइन चलै मे असमर्थ होइकै रोवत रहै, कुतुइन कै असमर्थता देखिकै वहि बाभन के मन मे अपार दया जाग । बाभन महाराज कुतुइन का उठाय कै नगर मे पहुँचे । वन वहि नगर मे एकठू खाली गुफा देखिन । वन वहि कुतुइन का लइकै वही गुफा मे जाइकै रहैं लागे । वन भिक्षाटन कइके आपन जीविका चलावैं औ वही गुफा मे रहिकैं साधना करैं । बारह बरिस के बाद वन्है लौकिक सिद्धी 'अभिज्ञा' आदि कै प्राप्ति भैं ।

८. सिद्धी पावै के बाद वन्है 'त्रयस्त्रिंशत' देवता लोगन के यिहाँ से अपने किहाँ आवै कै नेवता मिला । कुक्कुरीपा उहाँ गयें लेकिन कुतुइनिया गुफै मे छुटि गई । देवता लोग यनकै भव्य रूप से स्वागत सत्कार किहिन । लेकिन जब वन्है कुतुइनिया कै याद आय तो वन उहाँ से लउटै कै तयारी करै लागे । देवता लोग वन्है रोकै कै बहुत प्रयास किहिन । लेकिन केहू कै बाति नाही मानिन । वन गुफा मे लउटै कै निश्चय कइकै उहाँ से चले ।

९. यहर मनई के अनुपस्थिति मे ऊ कुतुइन वहिंकै जमीन खोदि कै वह मे रहा गन्हाउर औ पानी खाय पीयै । गुफा मे आवै के बाद कुतुइन का देखिकै वोका हाथ से सुहुरावै लागें । वही समय ऊ कुतुइन डाकिनी कै रूप धारण किहिस औं योगी का 'परमसिद्धी' दिहिस । परमसिद्धी पावै के बाद यिहैं योगी लुम्विनी क्षेत्र के साथै चारिउ ओर कुक्कुरीपा के नाँव से प्रसिद्ध भयें ।

शब्दार्थ

कालखण्ड :	समयकाल
चौरासी सिद्ध :	बौद्ध धर्म प्रचारक चौरासी सिद्ध सन्त
जन्मस्थान :	जन्म भवा जगह
विशेषज्ञ :	विषय विशेष कै ज्ञानी
वाल्यकाल :	बचपन कै काल खण्ड
त्यायिपा :	वोध गया मे साधना करत के कुक्रीपा कै नाँव
गणचक्र :	गण लोगन का सिद्ध करै के खातिर बनावा जायवाला चक्र
उपक्रम :	साधना
मर्यादाक्रम :	मर्यादा कै क्रम
आदिकवि :	पहिला कवि
वैशिष्ट्य योगदान :	विशेष योगदान
असमर्थता :	विबशता
भिक्षाटन :	भिक्षा माङै क्रिया
लौकिक सिद्धी :	तान्त्रिक विधा अर्न्तगत कै विशेष सिद्धी
त्रयस्त्रिंशत :	तैतिस कोटि
अनुपस्थिति :	गैरहाजिरी
परमसिद्धी :	विशिष्ठ सिद्धी
प्रसिद्ध :	मशहूर

अभ्यास

सुनाई

१. जीवनी कै पहिला औ चउथा अनुच्छेद का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) कुक्कुरीपामद कै साहित्यिक कृति योगभावनोपदेश औ स्रवपरिच्छेदन होय ।

(ख) कुक्कुरीपाद कै जन्मस्थान कपिलवस्तु (कविल-स-कुन) रहा ।

(ग) कुक्कुरीपाद के बाल्यकाल कै नाँव राहुल स्वामी रहाँ ।

(घ) भिक्षु के रूप मे कुक्कुरीपाद कै नाँव वीरभद्र रहा ।

(ङ) अवधी भाषा कै लेख्य साहित्य मध्ये सबसे पूरान साहित्य कुक्कुरीपादै कै होय ।

२. पाठ का ध्यानपूर्वक सुना जाय औ खाली जगही के खातिर उचित शब्द चुना जाय ।

(क) कुक्कुरीपाद कै जन्म.....राज्य कै ब्राह्मण कुल मे भा रहा । (रूपन्देही / कपिलवस्तु)

(ख) कुक्कुरीपाद सिद्ध सन्त लोगन मध्ये मर्यादाक्रम मे ..... वें स्थान पर आवत हैं ।(३४ / ३५)

(ग) बोध गया मे कुक्कुरीपाद ..... के नाँव से प्रसिद्ध भयें । (त्यायिपा / वीरभद्र)

(घ) कुक्कुरीपाद अवधी साहित्य कै ..... होंय । (विशिष्ट कवि / आदि कवि)

(ङ) .....पावै के बाद त्यायिपा कुक्कुरीपाद के नाँव से प्रसिद्ध भयें । (परमसिद्धी / अभिज्ञा)

३. पाठ कै पचवाँ अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ साथी का बोलै के कहा जाय ।

जन्मस्थान - ज न्म स्था न

उपक्रम, वैशिष्ट्य, योगदान, असमर्थता, लौकिक

२. "कुक्कुरीपाद अवधी भाषा कै आदिकवि होंय ।" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

३. आप से परिचित अवधी भाषा कै कवनो साहित्यकार के बारे मा बुँदागत रूप मा परिचय तयार करा जाय औ कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा पचवाँ अनुच्छेद का तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति, यति औ लय कमे साथ पाठ के पहिला अनुच्छेद का सस्वर वाचन करा जाय ।

३. नीचे दिहा अनुच्छेद ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

कथाकार सनत रेग्मी (सनतकुमार रेग्मी) कै वि.सं. २००४ असोज ६, नेपालगञ्ज, बाँके मे भै । आप के माताजी कै नांव लीलादेवी औ पिताजी गोपाल शर्मा रहें । स्नातक, साहित्यरत्न तक कै अध्ययन पूरा करै वाले रेग्मीजी मूल रुप से समाजसेवा, औ साहित्य सेवा मे निरन्तर रूप मे सक्रिय हैं । रेग्मी कै पहिला रचना समाजकी छोरी (कथा, पञ्चामृत, २०१७) होय । कथाकार औ उपन्यासकार के रूप मे सक्रिय रेग्मी जी कै कुछ रचना यहि किसिम से हैं : मातृत्वको चीत्कार (कथासङ्ग्रह, २०२४), चन्द्र ज्योत्स्ना र कालो बादल (कथासङ्ग्रह, २०२५), दिनान्त (कथासङ्ग्रह, २०३५), बन्द कोठाहरूको सहर (कथासङ्ग्रह, २०४५), लछमनियाँको गौना (२०५१), समय सत्य (२०५४), सनत रेग्मीका प्रतिनिधि कथाहरू (२०६०), स्मृतिदंश र अन्य कथाहरू (२०६६), सनत रेग्मी : सिर्जन संवाद (अन्तर्वार्तासङ्ग्रह, २०६६) । यहि मध्ये आप कै सब से प्रसिद्ध कथा सङ्ग्रह लछमनियाको गौना होय ।

यही किसिम से आप के द्वारा सम्पादन औ अनुवाद किहा कृति दियालो (२०३०), सिर्जना (त्रैमासिक, २०३१), महेन्द्र सौरभ (२०३४), सेवा (२०४३), वाङ्मय जगत् (२०५३), पृथ्वी जयन्ती स्मारिका (२०६०), नेपाली उपन्यास शतवार्षिकी स्मारिका (२०६०), स्टोरिज् फ्रम नेपाल (अङ्ग्रेजी भाषा, २०६०), समकालीन साहित्य (अङ्क ३६-५३), कथा-विमर्श (२०६८), लोकप्रिय नेपाली कहानियाँ (२०६९), समय (साहित्य सङ्कलन) आदि होंय ।

यही किसिम से आप का मैनाली कथा पुरस्कार (२०४९), राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कार (ई १९९६, १९९८), गणेश दुवाल-खिलकुमारी पुरस्कार (२०५५), विजयश्री पुरस्कार (२०६६), मानश्री पुरस्कार (२०६६), दीपगोविन्द पुरस्कार (२०६८), दैवीप्रकोप पीडितोद्धार पदक । सारस्वत सम्मान (इ.सं. १९९६), प्रतिभा सम्मान (पर्सा, २०६०), भेरी साहित्य सम्मान(नेपालगञ्ज, २०६०), देवकोटा स्मृति सम्मान (कलैया, २०६०), मध्यपश्चिम स्रष्टा समाजबाट अभिनन्दन (२०६४), जेसिस सम्मान (२०६६), चेतना प्रवर्धन समाज विराटनगरबाट सम्मान (२०६८) आदि से सम्मानित औ पुरष्कृत किहा गा हैं ।

(क) कथाकार सनत कुमार रेग्मी कै जन्म कब औ कहा भवा रहा ?

(ख) कथाकार सनत कुमार रेग्मी कै सब से चर्चित कथा सङ्ग्रह कवन होय ?

(ग) कथाकार सनत कुमार रेग्मी अनवादक के रूप मे कवने कवने भाषा मे अनुवाद किहे हैं ?

(घ) कथाकार सनत कुमार रेग्मी के द्वारा सम्पादन किहा पुस्तक कवन कवन होंय ?

(ङ) कथाकार सनत कुमार रेग्मी कवने कवने सम्मान से सम्मानित हैं ?

लिखाई

१. पाठ के पहिला औ दुसरा अनुच्छेद का सुनिकै लिखौ ।

२. पाठ के पचवाँ अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।

३. कुक्कुरीपा के जीवन से आप का कइस नशिक्षा मिलत है ?

४. सप्रसङ्ग व्याख्या करा जाय ।

(क) कुक्कुरीपै से अवधी साहित्य रचना कै अबिरल धारा निकरिके आज अवधी भाषा औ नेपालीय साहित्य प्रतिभा क्षेत्र का विश्व अवधी साहित्य सागर मे नेपाल के वैशिष्ट्य योगदान का गति देत है ।

व्याकरण

समस्त शब्द

१. नीचे कै उदाहरण पढ़िकै समस्त शब्द का बनावा जाय ।

(क) विग्रह	**समस्त पद**
आंखि का + फोरै वाला	= अखिफोरवा
कुलि का + बोरै वाला	= कुलबोरवा
भूखि से + मरब	= भुखमरी
वुद्धि से + जीयै वाले	= वुद्धिजीवी
काम के खातिर + लायक	= .....
चिडिया के खातिर + घर	= .....
देश से + निकाला	= .....
राजा कै + दरबार	= .....

राष्ट्र कै + पिता = ...

रोज दिन + होयवाला = ...

भ्रष्ट + आचार = ...

सिंह के जइसन + नाद = ...

२. नीचे दिहा समस्त शब्दन कै विग्रह करा जाय ।

समस्त पद		**विग्रह**	
विद्याधन	.....	+	.....
भवसागर	.....	+	.....
भइयाराजा	.....	+	.....
भाईजान	.....	+	.....
पढ़ालिखा	.....	+	.....
लालपियर	.....	+	.....
दुइधारा	.....	+	.....
त्रिकोण	.....	+	.....

३. नीचे दिहा वाक्यन मध्ये कवन वाक्य कवने पूर्णकाल कै होय, लिखा जाय ।

(क) आप लोग पाठ पढ़ि भै रहेव । (पूर्ण भूतकाल)

(ख) गोपाल खाय चुके हैं ।

(ग) राधा खाय भई रहीं ।

(घ) तोहरे लोग खाय भए हौ ।

(ङ) आप लोग खाय चुके होबौ ।

(च) भरत पढ़ि भवा है ।

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) पढत के अपने का बढ़िया लाग कथा के बारे मे अनुच्छेद लिखा जाय ।

(ख) आप अपने क्षेत्र के कवनो विद्वान के बारे मे जानकारी लइकै जीवनी लिखा जाय ।

पाठ
१३

सूफी साहित्य

१. परै बीच धारहरिया प्रेमराज को टेक ।
मानहिं भोग छवो ऋतु, मिलि दुवौ होइ एक ॥ ॥

२. प्रथम वसन्त नवल ऋतु आई । सुऋतु चइत वैसाख सोहाई ॥
चन्दन चीर पहिरि धारि अंगा । सेनुर दीन्ह विहँसि भरि मंगा ॥
कुसुम हार औ परिमल बासू । मलयागिरि छिरका कविलासू ॥
सौंर सुपेति फूलन डासी । धानि औ कन्त मिले सुखबासी ॥
पिउ सँजोग धानि जोबन बारी । भौंर पुहुप संग करहिं धमारी ॥
होइ झागु भलि चाँचरि जोरी । बिरह जराइ दीन्ह जस होरी ॥
धनि ससि सरिस तपै पिय सुरू । नखत सिंगार होहिं सब चूरू ॥

३. जिन्ह घर कन्ता ऋतु भली, आव वसन्त जो नित्त ।
सुख भरि आवहिं देवहरै, दुःख न जानै कित्त ॥ ॥

४. ऋतु ग्रीषम कै तपनि न जहाँ । जेठ असाढ़ कन्त घर जहाँ ॥
पहिरि सुरंग चीर धनि झीना । परिमल मेद रहा तन भीना ॥
पदमावति तन सिअर सुबासा । नइहर राज कन्त घर पासा ॥
औ बड़ जूड़ तहाँ सोवनारा । अगर पोति सुख तने ओहारा ॥
सेज बिछावन सौंर सुपेती । भोग बिलास करहिं सुख सेती ॥
अधर तमोर कपुर भिमसेना । चन्नन चर्चि लाव तन बेना ॥
भा अनन्द सिंघल सब कहूँ । भागवन्त कहँ सुख ऋतु छहूँ ॥

५. दारिउँ दाख लेहिं रस, आम सदाफर डार ।
हरियर तन सुअटा कर, जो अस चाखनहार ॥ ॥

६. रितु पावस बरसै पिउ पावा । सावन भादौ अधिक सोहावा ॥
पदमावति चाहत ऋतु पाई । गगन सोहावन भूमि सोहाई ॥
कोकिल बैन पाँति बग छूटी । धनि निसरीं जनु बीरबहूटी ॥
चमक बीजु बरसै जल सोना । दादुर मोर सबद सुठि लोना ॥
रङ्गराती पीतम सँग जागी । गरजै गगन चउकि गर लागी ॥
सीतल बूँन ऊँच चौपारा । हरियर सब देखाइ संसारा ॥
हरियर भूमि कुसुम्भी चोला । औ धनि पिउ संग रचा हिंडोला ॥

७. पवन झकोरे होइ हरषु, लागे सीतल बास ।
धनि जानैं यी पवन हैं, पवन सो अपने पास ॥

८. आइ सरद ऋतु अधिक पियारी । आसिन कातिक ऋतु उजियारी ॥
पदमावति भइ पुनिउँ कला । चौदसि चाँन उई सिंघला ॥
सोरह कला सिंगार बनावा, नखत भरा सुरुज ससि पावा ॥
भा निरमल सब धरति अकासू । सेज सवरि कीन्ह फुलबासू ॥
सेत विछावन औ उजियारी । हँसि हँसि मिलहिं पुरुष औ नारी ॥
सानेनफूल भइ पुहुमी फूली । पिय धनि सौं धनि पिय सौं भूली ॥
चख अञ्जन देइ खञ्जन देखावा । होइ सारस जोरी रस पावा ॥

९. यहि ऋतु कन्ता पास जेहि, सुख तेहि के हिय माहँ ।
धनि हँसि लागै पिउ गरै, धनि गरि पिउ के बाँह ॥ ॥

१०. ऋतु हेमन्त संग पिएउ पियाला । अगहन पूस सीत सुख काला ॥
धनि औ पिउ महँ सीउ सोहागा । दुहुन्ह अंग एकै मिलि लागा ।।
मन सौ मन तन सौं तन गहा । हिय सौं हिय बिचहर न रहा ॥
जानहुँ चन्दन लागै अंगा । चन्दन रहै न पावै संगा ॥
भोग करहिं सुख राजा रानी । उन्ह लेखे सब सृष्टि जुड़ानी ॥

जूझ दुवौ जोबन सौं लागा । बिच हुँत सीउ जीउ लेइ भागा ॥

दुइ घट मिलि एकै होइ जाहीं । ऐसहुँ मिलहिं तबहूँ न अघाहीं ॥

११. हंसा केलि करहिं जिमि, कूदहिं कुरलहिं देउ ।

सीउ पुकारि कै पार भा, जस चकई कै बिछोहु ॥ ॥

१२. आइ सिसिर ऋतु तहाँ न सीऊ । जहाँ माघ फागुन घर पीऊ ॥

सौंर सुपेती मन्दिर राती । दगल चीर पहिरहिं बहु भाँती ॥

घर घर सिंघल होइ सुख जोजू । रहा न कतहुँ दुःख कर खोजू ॥

जहँ धनि पुरुष सीउ नहि लागा, जानहु काग देखि सर भागा ॥

जाइ इन्द्र सौ कीन्ह पुकारा । हैं पदमावति देस निकारा ॥

यहि ऋतु सदा सँग महँ सेवा । अब दरसन तें मोर बिछोवा ॥

अब हँसि कै ससि सूरहिं भेंटा । रहा जो सीउ बीच सो मेटा ॥

१३. भएउ इन्द्र कर आयसु, बड़ सताव यह सोइ ।

कबहुँ काहु के पार भइ, कबहूँ काव के होइ ॥

(पदमावत से)

शब्दार्थ

मँगा :	माङि मे
बिहसि :	खुश होइके
डाँसी :	बिछावा
पुहुप :	फूल
धमारी :	रमझल्ला
देवहरै :	देव मन्दिर मे
पावस :	वर्षा

चाहति :	मनचाहा
बीजु :	विजुली
कुसुमी :	लाल रङ्ग कै
चोला :	पहिरन
गर :	गला
परिमल :	सुवाश, उत्तम महक
चाचर :	होली मे गावा जायवाला एक किसिम कै गीत
धनि :	नायिका
लोना :	शोभायमान
सुठि :	बरबस
चाँन :	चन्द्रमा
खञ्जन :	खिड़रिच चिरई
दुहुन्ह :	दुनौ
बिचहर :	वीच मे
सीउ :	माङि
सूरहि :	वीर का

अभ्यास

सुनाई

१. पाठ मे दिहा चौपाई का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) वसन्त ऋतु मे चइत औ बैशाख महीना आवत है ।

(ख) ग्रीष्म ऋतु मे अषाढ़ औ सावन महीना आवत है ।

(ग) ग्रीष्म ऋतु मे सावन औ भाँदव महीना आवत है ।

(घ) हेमन्त ऋतु मे भाँदव औ कुवार महीना आवत है ।

(ङ) सिसिर ऋतु मे माघ औ फागुन महीना आवत है ।

२. **पाठ मे दिहा कविता ध्यानपूर्वक सुनिकै वोका दोहरावा जाय ।**

३. **पाठ मे दिहा पहिला चौपाई का ध्यानपूर्वक सुनिकै फिर साथी का सुनावा जाय ।**

बोलाई

१. **नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ साथी का बोलै के कहा जाय ।**

डाँसी, पुहुप, आसिन, चाँन, खञ्जन, दुहुन्ह, सीउ, सौंर, सुपेती, सूरहि

२. **कविता मे प्रयुक्त यहि दोहा का अपने साथिन के बीचे छलफल कइकै वोकर अर्थ कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।**

पवन झकोरे होइ हरषु, लागे सीतल बास ।

धनि जानैं यी पवन हैं, पवन सो अपने पास ॥

३. **कविता मे प्रयुक्त यहि चौपाई पर अपने साथिन के बीचे छलफल कइकै वोकर अर्थ कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।**

रितु पावस बरसै पिउ पावा । सावन भादौ अधिक सोहावा ॥

पदमावति चाहत ऋतु पाई । गगन सोहावन भूमि सोहाई ॥

कोकिल बैन पाँति बग छूटी । धनि निसरीं जनु बीरबहूटी ॥

चमक बीजु बरसै जल सोना । दादुर मोर सबद सुठि लोना ॥

रङ्गराती पीतम सँग जागी । गरजै गगन चउकि गर लागी ॥

सीतल बूँन ऊँच चौपारा । हरियर सब देखाइ संसारा ॥

हरियर भूमि कुसुम्भी चोला । औ धनि पिउ संग रचा हिंडोला ॥

यहि बारेमा बुदागत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा मे पेश किहा जाय ।

पढ़ाई

१. **पाठ के दुसरे अनुच्छेद मे रहा चौपाई का तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लागत है देखा जाय ।**

२. **गति, यति औ लय के साथ पाठ मे दिहा कविता सस्वर वाचन करा जाय ।**

३. नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ व्याख्या कइकै बतावा जाय ।

यहि ऋतु कन्ता पास जेहि, सुख तेहि के हिय माहँ ।

धनि हँसि लागै पिउ गरै, धनि गरि पिउ के बाँह ॥

लिखाई

१. पाठ के पहिला चौपाइ का ध्यानपूर्वक पढ़िके सारांश लिखा जाय ।

२. कवि छवो ऋतु कै वर्णन कहाँ से लइकै कहा तक किहे हैं, विस्तारपूर्वक लिखा जाय ।

३. पाठ के नीचे दिहा हरफ कै भाव लिहा जाय ।

प्रथम वसन्त नवल ऋतु आई । सुऋतु चइत वैसाख सोहाई ॥

चन्दन चीर पहिरि धारि अंगा । सेनुर दीन्ह विहँसि भरि मंगा ॥

कुसुम हार औ परिमल बासू । मलयागिरि छिरका कविलासू ॥

सौंर सुपेति फूलन डासी । धानि औ कन्त मिले सुखबासी ॥

पिउ सँजोग धानि जोबन बारी । भौंर पुहुप संग करहिं धमारी ॥

होइ झाग भलि चाँचरि जोरी । बिरह जराइ दीन्ह जस होरी ॥

धनि ससि सरिस तपै पिय सुरू । नखत सिंगार होहिं सब चूरू ॥

४. सप्रसङ्ग व्याख्या करा जाय ।

जहँ धनि पुरुष सीउ नहि लागा, जानहु काग देखि सर भागा ॥

जाइ इन्द्र सौ कीन्ह पुकारा । हैं पदमावति देस निकारा ॥

व्याकरण

लेख्य चिह्न

अवधी भाषा के लेख्य रूप मे प्रयोग किहा जाय वाले चिन्ह यहि किसिम से है

अल्प विराम वा अक्षर सीमा विराम (,) अर्धविराम वा शब्द वाक्य खण्ड विश्राम (;) विराम (:), पूर्ण विराम (।), प्रश्नवाचक (?), विस्मय बोधक (!), एकल उद्धरण चिन्ह (‘ ’), युगल उद्धरण चिन्ह (“ ”)

१. **अवधी भाषा के लेख्य रूप मे प्रयोग किहा जाय वाले चिन्हन का ध्यान मे राखिकै नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ यहि अनुच्छेद मे कवन कवन चिन्ह प्रयोग भवा हैं, सूची बनावा जाय ।**

मुंशी वंशीधर चउकें । अलोपीदन यहि इलाका कै सब से प्रतिष्ठित जमिन्दार रहें । लाखौ रूपया कै लेनदेन करत रहें । यहर कै छोटबड़ा केहू अइसन नाही रहा । जे यनकै ऋणी न होय । व्यापारौ लम्मै चौड़ा रहा । बड़ा चल्तापुर्जा आदमी रहें । अङ्ग्रेज अफिसर वनके इलाका मे शिकार खेलै आवैं, तो यनही कै मेहमान बनैं । बरहो महीना सदाव्रत चलै । मुंशीजी पुछिन गाड़ी कहा जइहैं ? उत्तर मिला कानपुर । लेकिन जब प्रश्न यहमा काव है ? पुछिन तब फिर सन्नाटा छाइ गै । दरोगा साहेब कै शंका आउर बढ़ा । कुछ देर तक उत्तर आवै कै इन्तजार करै के बाद वन जोर से बोलें, "तोहरे सब शब्दहीन होइ गवा हौ ?" "हम पुछित हन, यहमा काव लदा है ?"

अबकिरो कवनो उत्तर नाही मिला तो वन घोड़ा का गाड़ी से सटाय कै बोरा का टोइन । भ्रम दुर होइ गै । ऊ नोन कै ढेला रहैं ।

पण्डित अलोपीदिन अपने रथ पर सवार, कुछ सूतत कुछ जागत चला आवत रहैं । अचानक कुछ गाड़ीवान घबड़ान आइकै जगाइन औ बोलें, 'महराज ! दरोगाजी गाड़िन का रोकि दिहे हैं औ घाट पर खड़ा आप का बोलावत हैं ।'

पण्डित अलोपीदीन का लक्ष्मी के उप्पर अखंड विश्वास रहा । वन कहा करैं कि संसार का तो के कहै, स्वर्गो मे लक्ष्मियै जी कै राज है । वन कै यी कहब यथार्थौ रहै । न्याय औ नीति सब कुछ लक्ष्मियै जी कै खेलौना होंय । यी सबका, जब औ जइसै चाहत हीं, नचावत हीं । लेटै लेटा गर्व से बोलें, 'चलो हम आइत हन ।' यी कहि कै पंडित जी बड़े निहचिन्तता के साथ पान कै बीरा लगाइ कै खाइन । फिर लिहाफ ओढ़े दरोगा के लगे आइकै बोलें, "बाबुजी, आर्शिबाद ! कहा जाय हमसे कवन अपराध भै, कि गाड़िन का रोकि दिहा गै । हम बभनेन के उप्पर आप कै कृपा दृष्टि रहै के चाहीं ।" वंशीधर रिसियाय कै बोलें, "सरकारी हुकुम ।" पं. आलोपीदीन हँसि कै कहिन, "हम तो न सरकारी हुकुम का जानित हन औ न सरकार का । हमार सरकार तो आपै होव । हमरे औ आप के घर कै मामिला होय, हम कब्बो आप से बहरे होइ सकित हन ? आप व्यर्थै मे कष्ट उठावा गै । यी तो होइन नाही सकत है, कि यहर से जाई औ यहि घाट के देवता का भेट न चढ़ाई । हम तो आप के सेवा मे खुदै आवत रहेन ।"

२. **नीचे दिहा उदाहरण का पढ़िकै 'पढ़' धातु से बनै वाले तीनौ काल कै सामान्य पक्ष लिखा जाय ।**

कर्ता	पुरूष	धातु/प्रत्यय = क्रिया पद	उदाहरण	कैफियत
हम	प्रथम	पढ + एन = पढेन	हम पाठ पढेन ।	सकर्मक क्रिया
हमरे लोग	प्रथम	पढ + एन = पढेन	हमरे लोग पाठ पढेन ।	सकर्मक क्रिया
तूँ/तुम	दूसर	नाँच् +यौ = नाँच्यौ	तूँ खुब नाँच्यौ ।	अकर्मक क्रिया
तोहरे लोग /तुम लोग	दूसर	नाँच् +यौ = नाँच्यौ	तोहरे लोग खुब नाँच्यौ । तुम लोग खुब नाँच्यौ ।	अकर्मक क्रिया

३. **नीचे दिहा वाक्य मे 'पढ़' धातु से बनै वाला कुछ वाक्य नीचे दिहा है । यहमा कवन वाक्य कवने काल औ पक्ष कै होय, लिखा जाय ।**

(क) ऊ लोग पाठ पढ़िन् । (ख) आप लोग पाठ पढ़ि भै रहेव ।

(ग) आप लोग पाठ पढ़त रहेव । (घ) तोहरे लोग पढ़त हौ ।

(ङ) गुड्डी पढ़ि चुकी हीं । (च) हमरे लोग पढ़तै होबै ।

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) यही कविता का आधार बनाय कै दिहा औ चौपाई के ढाँचा मे कविता लिखा जाय ।

(ख) अपने गाँव के बारे मे बढिया से जानकारी लइकै एक कविता लिखा जाय ।

पाठ
१४

प्रिया कै वियाह

तपानाथ शुक्ल

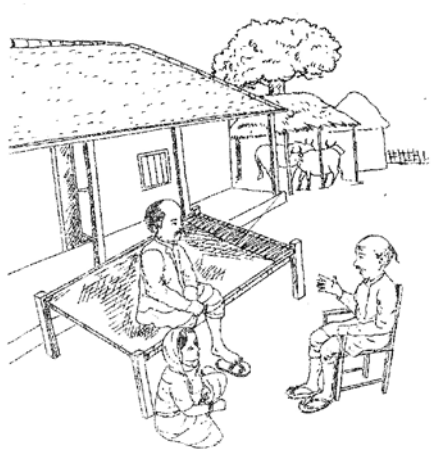

१. एक मध्यम वर्गीय कायस्थ परिवार कै घर। परिवार मा घरपति रामचन्द्र श्रीवास्तव (अन्दाजी ४५ बर्ष) वनकै दुलहिन पार्वती (४० बर्ष), बेटवा सुरेश (२० वर्ष) बिटिया प्रिया (१६ वर्ष)। कुलि चार लोगन कै परिवार। (घरपति रामचन्द्र दुपरहेंक भोजन कइके ओसारे मा ओठङ्हा हैं। वनके किनारे पार्वती बइठि कै पान लगावत हीं।

२. पार्वती : (**पानकै बीरा रामचन्द्र का देति हीं**)कुछै दिन मा नतिजा निकरि जाई, अब तो तनी हाथपाँव दउरावो। बिटिया सयान होत जात ही, आप तो कान मे तेल डोरे सोवत हौ, कवनो फिकिर नाही है।

३. रामचन्द्र : (**पान कुँचत**) प्रिया अउर पढ़ै के कहत ही। पढ़हू मा तेज ही। सोचित है वोका अउर पढ़ै दी।

४. पार्वती : (**हाथ चम्कावत**) चार जनी कै चार मुँह कै बाति कहुँ आप का सुनै के परत है । अब टोला-पड़ोसी मेरमेर कै बाति करै लाग हैं। कवनो बदनामी होई तब अकिल आई।

५. रामचन्द्र : हम पण्डित रामअवतार जी से बात किहे रहेंन। वयँ कहत रहँ कि बिलासपुर औ बरकुल मा बढ़िया शादी है।....ढेर दिन भवा पण्डितजी यहर दर्शनौ नाहीं दिहिन।

६. पार्वती : (**रामचन्द्र कै बाति विचवै मे काटिकै**) तूँ खाली लग्गी से घास खियावै के जानत हौ। पण्डित कै बिटिया सयान ही कि तोहार ? अपनहूँ तो कहूँ आवै जाय के चाहीं। प्रिया के उमिर कै बिटियै लरिकोर होइ गई, ... कवनो चिन्ता नाही है।

७. रामचन्द्र : ठीक है, ठीक है। अब ढेर बाति न करा जाय। बड़कनू (सुरेश) के आवै देव। वनँहू से पूछी। पहिले तो वनहीं कै बियाह करै के परी। वन प्रिया से बड़ा हैं।

८. पार्वती : वनकै कवन जल्दी है? बन्नहै पढ़ै देव । बी.ए. करै के बादै बियाह करब कइके कहत रहें । वन तो नाहीं मनिहैं, चाहे आपन माथ फोरि लेव ।

९. रामचन्द्र : बेटवा से तो पुछि लिहेव अब ...तिनक बिटियवो पुछि लेव, ...वोकर का विचार है?

१०. पार्वती : अरे तू बउराय गेयव कि काव, ऊ कही भला ,"माई हमार बियाह कइ देव" । जब हमार-तहार बियाह भवा रहा तब दादा-माई हम्मन से पूँछे रहें ...बियहवा करबो कि नाही ?

११. रामचन्द्र : अरे वहि जमाना कै बात दूसर रहा । अब तो लरिकन कै मन जानब जरूरी है । शादीबियाह ठीक करौ औ बिहान कही देयं हम नाही करब तब ?

१२ पार्वती : यी काहे नाहीं कहत हौ कि हम्मै घुसकै कै मन नाहीं लागत । तुहँसे तौ घर-सल्लाहव करब बेकार है । (**रिस के मुद्रा मे**) हम जाइत है, जवन मन मा आवै तवन करौ आज से ।

(**पार्वती उठि कै जातै रहीं कि यतने मे पण्डित रामअवतार कै प्रवेश**)

१३. पं. रामअवतार : रामराम बाबु , कहा है हालचाल ?

१४. रामचन्द्र : पण्डितजी पाय लागी । बड़ा लम्मा उमिरि है आप कै । अबहिन आपै के बारे मा चर्चा होत रहा ।

१५. पं.रामअवतार : का बाति है ? दूनो परानी बइठि कै काहे खोजत रहेव । हम तोहरै काम मे लाग रहेन । यही से आवै मा कुछ बिलम्ब होइ गै ।

१६. रामचन्द्र : कवनो खुशखबरी लइके जरुरै आवा गा होई । (**पार्वती के ओर देखिकै**) हम तुहँसे कहत नाहीं रहेंन ? पण्डित जी कुछ बढ़ियै खबर लइके अइहैं । पण्डित जी ! कहा जाय वन पचन काव जबाब दिहिन ।

१७. पं. रामअवतार : रामचन्द्र बाबु ! हम दूनौ जगह गै रहेंन । लेकिन दूनो जगह से यक्कै जबाब मिला । वन लोगन कै कहनाव है कि, लरिके पढ़त हैं । तोहार रिस्ता वन लोगन का पसन्द है । कहत रहें कि वनकै बिटियवों तो पढ़ाकू ही । वहू का तनी अउर पढ़ि-लिखि लेय देव । पढ़ा-लिखा लड़िका का पढ़ीलिखि लड़की शोभा देई ।

१८. रामचन्द्र : अउर तो ठीक है पण्डित जी । बकिर सयान बिटिया, बाप महतारी के मूड़ेक बोझा कहत हैं ... जेतना जल्दी ऊ बोझा उतारि मिलै, वतनै जल्दी मूड़ हल्का होइ जाई ।

१९. पं. रामअवतार : बाबु, यकरे माने अपने माथेक बोझा दुसरेक माथे मढ़ै चाहत हौ । बिटिया का बोझ समझत हौ । वोका अउर पढ़ावो लिखावो, स्वावलम्वी बनावो, जवने से ऊ जवने घरे जाय वहिँ बोझा न होइके, रथके पहिया के रूप मे बनि जाय ।

२०. रामचन्द्र : हाँ पण्डितजी सही कहा गै । आप कै सोह्रौ आना सही है ।

२१. पार्वती : आप तो हम्मन के यतना उपदेश देवा जात है । बकिर प्रिया कै जोड़िया आप अपने बिटिया कै बियाह तो परसलियै कइ देवा गै ।

२२. पं. रामअवतार : सुना जाय ! हमार बिटिया तोहरे बिटिया जइसन पढ़ाकू नाहीं रही । आठ कक्षा मा दुइ बेर फेल भई । मजबूरन हम वोकर बियाह कराय दिहेन । बकिर अब महसूस होत है कि हमसे गलती भै । यतना कम उमिरि मे वोकर वियाह हम्मै नाई करै के चाहत रहा (**पण्डित के चेहरा पर पश्चाताप देखाय परत है**) ।

(**यी लोगन कै बाति होतै रहा कि अङना मे सुरेश कै प्रवेश । वन झोरा एक किनारे धइकै पहिले पण्डित जी कै, फिर अपने पिताजी औ माता जी कै चरणस्पर्श करत हैं**)

२३. सुरेश : बप्पा ! अम्मा ! प्रिया कहाँ ही ? नाही देखात ही ... आज हम एक बहुत बढ़िया खबर लइके आय हन ।

२४. पार्वती : प्रिया खाय पीइकै बगिया मे आम तुरुवावै गई है , अउतै होई । बइठो । थका होबो । तनी सुनावो तो तोहार बढ़िया खबर ।

२५. रामचन्द्र, पण्डितजी : हाँ भाई ! सुनावो, सुनावो कइसन खबर है ।

२६. सुरेश : आज सबेरे दश कक्षा कै परीक्षाफल प्रकाशित भवा है । ...आप लोग सुना गै कि नाही ?

२७. रामचन्द्र : रेडियो मा बैटरी खतम होय गै है । यही नाते नाहीं सुनि पायेन । कहौ, प्रिया पास भई कि नाहीं ?

२८. सुरेश : अरे पास होवै कै बाति किहा जात है ? ऊ तो अपने विद्यालय मे सबसे ढ़ेर नम्बर पाय कै प्रथम श्रेणी मे पास भई है ।

२९. पं. रामअवतार : देखौ ! हम कहत नाहीं रहेंन । तोहार बिटिया मेहनती ही । वोका अउर पढ़ावो ।

३०. पार्वती : (**सुरेश के ओर इशारा कइकै**) जा बाबू ! बगिया मे वोका खबर कइ दे । आज तो ऊ फूली नाइ समाई । (**रामचन्द्र के ओर देखिकै**) औ अपनेव जाव बजारि से मिठाई लइ आवो, प्रिया कै बाबुजी ....आज हम पूरे गाँव मे मिठाइ बाँटब ।

(**सुरेश कै बगिया के ओर प्रस्थान**)

३१. पं. रामअवतार : (**रामचन्द्र के ओर मुड़िकै**) अच्छा बाबु ! अब हम्मै आज्ञा देव । हम चलित हन ।

३२. पार्वती : कहाँ पण्डितजी, बिना मुँह मीठ किहे हम आप का नाई जाय देब । तनी बइठा जाय, बिटियवो आवत होई ।

३३. पं. रामअवतार : आर्शिवादो देब औ मिठाइयु खाबै...लेकिन घरहु तो चलै के परा न । (**यी लोगन कै बातचीत होतै रहा कि ओसार मा सुरेश औ प्रिया कै प्रवेश प्रिया वसरीपारी सब कै प्रणाम करत ही औ आर्शिवाद लेत ही**)

३४. पं. रामअवतार : खुश रहो बिटिया । खुब पढ़ो । तोहार तरक्की सुनिकै मन गद्‌गद् होइ गै । (**रामचन्द्र के ओर देखिकै**) रामचन्द्र बाबु ! अब तो बिटिया के सहर के स्कूल मे भेजौ ।

३५. सुरेश : हाँ पण्डितजी ! हम प्रिया के अपने साथे लइ जाब औ वहीं पढ़ाइब ।

३६. रामचन्द्र : लेकिन बड़कऊ, हम दुइ जने कै खर्चापानी कइसे जुटाय पाइब । अबहिनौ बड़े मुश्किल से तोहार बन्दोबस्त होइ पावत है ।

३७. सुरेश : वोकर चिन्ता न किहा जाय । एक तो प्रिया के छात्रवृत्ति मिली, फीस नाहीं देवै के परी । औ बाँकी खर्च कै व्यवस्था हमरे ट्युसन पढ़ाइ कै कइ लेवा जाई ।

(**प्रिया के चेहरा पे सन्तोष कै मुस्कान देखाय परत है**)

३८. पार्वती : बकिर हमरे तो प्रिया कै बियाहे कै बाति किहा जात है । गाँव मे यकरे जोड़ी पारी सबकै बियाह होइ गै । खाली यिहै बाँकी ही बियाह करै के ।

३९. सुरेश : अम्मा ! आज के जमाना मे बिटिया का खाली चुल्हा चउका नाही, स्वावलम्बी बनाइब जरूरी है । दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँचि गै ? आप का अपने गावैं कै रीत पिछुवाये है ।

४०. पं. रामअवतार : (**ताली बजावत**) वाह बेटा, वाह ! तोहार विचार अति उत्तम है । बिटियन के बियाह से पहिले शिक्षित औ स्वावलम्बी बनाइब जरूरी है । हम तोहरे यहि बाति का दिल मे राखै चाहित है ।

शब्दार्थ

मध्यम वर्गीय :	सामान्य आम्दानी होयवाला परिवार
कायस्थ :	एक जाति विशेष
घरपति :	घर कै मुखिया
नतीजा :	परिक्षाफल

कवाइत :	बिना मतलब कै बातचीत
घुसकै :	चलै फिरै
पढ़ाकु :	पढ़ै वाली
स्वावलम्बी :	आत्मनिर्भर
चरण स्पर्श :	पाव छुवै कै क्रिया
समर्थन :	सहमती

अभ्यास

सुनाई

१. एकांकी के बह्वाँ अनुच्छेद तक साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) घरपति रामचन्द्र श्रीवास्तव कै कुलि चार लोगन कै परिवार है ।

ख) बिटिया सयान होत जात ही, तुहैं वोका पढ़ावै कै कवनो चिन्तै नाहीं है ।

(ग) हम पण्डित रामअवतार जी से बात किहे रहेंन ।

(घ) ठीक है, बड़कनू का तो आवै देव । लेकिन वनँहू से अब यहि बारे मे काव पूछी ।

(ङ) पार्वती रिसियाय कै कहिन कि हम जाइत है, जवन मनमा आवै तवन करा जाय अब ।

२. एकांकी साथी से सुनिकै दिहा वाक्य मे उचित शब्द राखिकै वाक्य पूरा करा जाय ।

(क) रामचन्द्र कहिन पण्डितजी .....बड़ा लम्मा उमिरि है ।

ख) पं.रामअवतार कहिन हम तोहरै काम मे ..... रहेन ।

ग) पार्वती पंडितजी से कहिन प्रिया कै जोड़िया आप अपने बिटिया कै बियाह तो ..... कइ देवा गै ।

(घ) पं. रामअवतार कहिन ! हमार बिटिया तोहरे बिटिया जइसन .....नाहीं रही ।

(ङ) सुरेश कहिन कि ऊ तो अपने स्कूल मे सब से ढ़ेर नम्बर पाय कै ..... मे पास भई है ।

३. पाठ के दशवाँ औ एक्तिसवाँ अनुच्छेद से चालिसवे अनुच्छेद तक का ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ साथी का बोलै के कहा जाय ।

मध्यम वर्गीय, कायस्थ, घरपति,कवाइत, स्वावलम्बी, चरण स्पर्श

२. "यहि एकांकी मे केकर कहनाव ठीक है ?" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

३. आप के आसपास लैङ्गिक विभेद कै यहि किसिम कै कवनो घटना भवा है ? वहि बारेमा बुँदागत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा मे पेश किहा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा तेह्रवाँ अनुच्छेद से सत्तइसवाँ अनुच्छेद तक तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लाग देखिकै गुरुजी का बतावा जाय ।

२. गति, यति औ लय के साथ पाठ कै तेइसवाँ अनुच्छेद से चालिसवाँ अनुच्छेद तक सम्वाद करा जाय ।

३. नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

हर आदमी कै जिन्दगी मे ऊ क्षण बहुत खुशी कै होत है जवने समय आदमी का सन्तान जन्मत है । वइसै तो हमरेन के समाज मे औलाद के जन्म के वक्त हर बाप महतारी का वतनै खुशी मिलत है । लेकिन खास कइकै हमरेन के मधेसी समाज मे जब औलाद के रूप मे लड़की कै जन्म होत है, तब बाप अऊर महतारी के मुँह पे खुशी के बजाय दुःख झलकत है ।

अव प्रश्न उठत है कि यह प्रकार कै दुःख काहे होत है ? यह प्रश्न कै जवाफ है "दहेज प्रथा"हां दहेज प्रथा के नाते ही बाप अऊर महतारी औलाद के रूप मे "बिटिया"नाही देखै चाहत हैं । खास तौर से देखा जाय तो जब दहेज कै सुरूवात भवा तौ यी गलत नाही रहा । यी सिर्फ एक उपहार के रूप मे रहा । जउनेम दुलहा औ दुलहिन के जरुरत वाला सामान दइ जात रहा । लेकिन लोभलालच मे परिकै आज आदमी यहि उपहार का माग के रूप मे शुरू कइ दिहे है । यही के नाते "दहेज प्रथा" आज हमरेन के समाज मे एक प्रमुख समस्या

के रूप मे देखाय परत है । जवनेक मार मे आज हरेक व्यक्ति औ हरेक परिवार ग्रसित है । खास तौर पे देखा जाय तो यी समस्या आवै कै प्रमुख कारण अशिक्षा औ जनचेतना कै कमी होय । शिक्षा औ जनचेतना कै कमी के नाते आज हमरेन कै समाज "दहेज प्रथा" से होय वाला खराबी नाई देखि पावत है । खाली लोभलालच मे परिकै दहेज कै लेनदेन करत है औ दहेज का बढ़ावा देत है ।

(क) कवन समय हरेक बाप महतारी के खातिर खुशी कै होत है ?

(ख) हमरे समाज मे बिटिया जन्मै के बाद, यहि किसिम कै दुःख काहे होत है ??

(ग) हमरे समाज मे सुरूवात मे दहेज कवने रूप मे रहा ?

(घ) आज आदमी यहि उपहार का माग कवने रूप मे सुरू कइ दिहे है ?

(ङ) हमरे समाज मे यी समस्या कवने कवने नाते आ हैं ?

लिखाई

१. पाठ कै सारांश लिखा जाय ।

२. "प्रिया कै वियाह" एकांकी कै मुख्य सनेश काव होय, लिखा जाय ?

३. पार्वती अपने बिटिया का बिना बियाह किहे आगे पढ़ावै खातिर कइसै तयार भईं, अपने शब्द मे लिखा जाय ?

४. एकांकी पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) सुरु मे के प्रिया का पढ़ावै के कहिस रहा ?

(ख) सुरु मे के प्रिया कै बियाह करे के चाहत रहा ?

(ग) पं. रामअवतार प्रिया के बियाह के बारे मा काव कहिन ?

(घ) आर्थिक समस्या कै समाधान के खातिर सुरेश कवन उपाय बताइन ?

(ङ) अन्तिम मे पण्डित निचोड़ के रूप मे काव कहिन ?

५. सप्रसङ्ग व्याख्या करा जाय ।

(क) आज के जमाना मे बिटिया का खाली चुल्हा चउका नाही, स्वावलम्बी बनाइब जरूरी है । दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँचि गै ? आप का अपने गावैं कै रीत पिछुवाये है ।

व्याकरण

वर्ण विन्यास

१. पाठ का पढ़िकै पाठ से सुरु, मध्य औ अन्त मे ह्रस्व इकार भवा बारह शब्द चुनिकै कापी मे लिखा जाय ।

२. पाठ का पढ़िकै पाठ से सुरु, मध्य औ अन्त मे दीर्घ इकार भवा बारह शब्द चुनिकै कापी मे लिखा जाय ।

३. श, ष, क्ष, त्र औ ज्ञ अक्षर प्रयोग भवा दुइ दुइ शब्द लिखा जाय ।

४. नीचे दिहा अनुच्छेद मे कुछ वर्ण विन्यास गलत किसिम से लिखा हैं । हरेक वर्ण विन्यास गत गल्ती का ठीक कइकै लिखा जाय ।

अगर लडिकी शिक्षित रही तो ऊ अपने पैर पे खडा होई जाई । वन्हैं केहु के सहारा कै जरुरत नाई पडी । जवने से हमरेन के समाज मे मेहरारु के ऊपर होयवाला अतयाचारौ मे कमी होई जाई । लेकिन अइसन होब तब्ब सम्भव है जब हरेक आदमी के दिमाग मे यी बात प्रस्ट होइ जाय कि अब "दहेज प्रथा" एकदम चरम सिमा पे पहुँच गा है औ अब एकर अन्त करब बहुत जररी है ।

५. नीचे कुछ वाक्यन का उदाहरण के रूप मे दिहा हैं । यहि वाक्यन का ध्यानपूर्वक देखा जाय दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(१) सरल वाक्य

एक मात्र स्वतन्त्र उप वाक्य होय वाले संरचना का सरल वाक्य कहा जात है । सरल वाक्य मा एक मात्र समापिका क्रिया रहत है । सरल वाक्य का मूल वाक्य कहि सका जात है ।

जइसै :उमेश पढ़े गवा । हरि कै वेटवा मेहनती है ।

रीता मन लगाय कै खाना बनावति हीं ।

सरल वाक्य मा निम्न तत्त्व कै उपस्थिति रहत है ।

१. उद्देश्य औ विधेय

२. उद्देश्य विस्तार औ विधेय विस्तार

३. एक मात्र समापिका क्रिया

२. मिश्र वाक्य

एक निरपेक्ष औ दूसर सापेक्ष उपवाक्य के संयोजक से बना वाक्य का मिश्र वाक्य कहा जात है । निरपेक्ष उपवाक्य का मुख्य, प्रधान या स्वतन्त्र वाक्य कहा जात है । वइसै सापेक्ष उपवाक्य का आश्रित, अङ्ग या अधीन उपवाक्य कहा जात है ।

मिश्र वाक्य = मुख्य उपवाक्य + आश्रित उपवाक्य

जे बड़ा है, उ बड़वार काम कइ सकत है ।

मुख्य उपवाक्य - उ बड़वार काम कइ सकत है ।

आश्रित उपवाक्य - जे बड़ा है ।

संयुक्त वाक्य

दुइ या दुइ से बेसी स्वतन्त्र उपवाक्य मिलिकै बना वाक्य का संयुक्त वाक्य कहा जात है । येका निरपेक्ष संयोजक से जोड़ा जात है ।

उदाहरण : राजन बजार गवा औ खेलौना खरीदिस । यहिं राजन बजार गवा । राजन खेलौना खरीदिस, यी दुइ स्वतन्त्र उपवाक्य होय । येका संयोजक औ से जोड़ा गा है औ संयुक्त वाक्य तयार भवा है ।

(क) सरल वाक्य कै प्रयोग कइकै अपने परिवार कै वर्णन करा जाय ।

(ख) मिश्र वाक्य कै प्रयोग कइकै अपने परिवार कै वर्णन करा जाय ।

(ग) संयुक्त वाक्य कै प्रयोग कइकै अपने आसपास के वातावरण कै वर्णन करा जाय ।

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) "समाज कै कुरीति हटावा जाय" विषय पर आधारित रहिकै सम्बाद लिखा जाय ।

(ख) आप के गाँवठाँव मे का कइसन कुप्रथा है सूची तयार कइकै वोकरे बारे मे लिखा जाय ।

पाठ १५

व्यावसायिक चिठ्ठी

व्यावसायिक चिठ्ठी मूल रूप से अनुरोध, सिकायत, स्वीकृति, अस्वीकृति, समस्या, खबर, निमन्त्रण, धन्यबाद आदि के खातिर लिखा जात है । एक व्यावसायिक चिठ्ठी मे साधारणतया निम्न तत्त्व शामिल होत हैं ।

व्यावसायिक पत्र कै प्रारूप

१. लेटर हेड	२. संस्था कै नाँव	३. पता
४. टेलीफोन नं.	५. तारिख	६. पाठक कै नाँव (पद लिखा जाय)
७. प्रिय/श्री/सुश्री पाठक कै नाँव	८. विषय	९. परिचय
१०. मुख्य भाग	११. निष्कर्ष	१२. सस्नेह
१३. लेखक कै हस्ताक्षर	१४. नाँव	१५. पद

उदाहरण - व्यावसायिक चिठ्ठी

कविता एजुकेशनल प्रा.लि.

सागरटोल, तौलिहवा, कपिलवस्तु

मिति : २०७६/११/२८

सेवा मे
जनक शिक्षा सामाग्री केन्द्र,
सानोठिमी, भक्तपुर ।
महोदय,

यहि साल के कक्षा आगामी बैशाख मे सुरू होय के नाते विद्यालय तह कै उल्लेखित अनुसार कै पाठ्य पुस्तक माग अनुसार के सङ्ख्या मे यथाशीघ्र उपलब्ध करावै कै व्यवस्था किहा जाय । यही पत्र के साथे पुस्तक के दररेट के अनुसार कै २५०००/ कै भुक्तानी मास्टर चेक यही पत्र के साथ सामिल किहा है ।

आप से अनुरोध है कि यहि पुस्तकन का यही चइत मसान्त तक यहि पुस्तक भण्डार का उपलब्ध कराय कै यहि जिला के माग का समय से पूरा कइ दीन जाई । धन्यवाद ।

भवदीय
कविता चौधरी
(प्रोप्राइटर)
कविता एजुकेशनल प्रा.लि.
सागरटोल, तौलिहवा, कपिलवस्तु ।

१.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	६००० थान
२.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	५५०० थान
३.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	५००० थान
४.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	४५०० थान
५.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	४००० थान
६.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	३५०० थान
७.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	३००० थान
८.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	२००० थान
९.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	१८०० थान
१०.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	१८०० थान

जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र लि.

सानोठिमी, भक्तपुर

मिति : २०७६/११/२८

सेवा मे,
कविता एजुकेशनल प्रा.लि.
सागरटोल, तौलिहवा, कपिलवस्तु ।
महोदय,

आप के द्वारा माग किहा कक्षा के अनुसार के सङ्ख्या मे पाठ्यपुस्तक पार्सल कइकै यही पत्र के साथ पठवा जात है ।

आप से अनुरोध है कि पुस्तक पावै के बाद लिखित रूप मे जानकारी करावा जाई । पुस्तक कै कक्षा औ विषय के अनुसार कै पाठ्यपुस्तक यहि किसिम से हैं ।

भवदीय
श्याम श्रेष्ठ
(प्रमुख, वितरण शाखा)
जनक शिक्षा सामाग्री केन्द्र
सानोठिमी, भक्तपुर ।

१.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	६००० थान
२.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	५५०० थान
३.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	५००० थान
४.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	४५०० थान
५.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	४००० थान
६.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	३५०० थान
७.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	३००० थान
८.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	२००० थान
९.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	१८०० थान
१०.	इच्छाधीन बाहेक कै हरेक विषय	१८०० थान

कविता एजुकेशनल प्रा.लि.

सागरटोल, तौलिहवा, कपिलवस्तु

मिति : २०७६/१२/१०

सेवा मे
जनक शिक्षा सामाग्री केन्द्र,
सानोठिमी, भक्तपुर ।
महोदय,

आप के यिहाँ से भेजि गवा कक्षा अनुसार कै पाठ्यपुस्तक यहि कविता एजुकेशनल प्रा.लि. का मिलि चुका है । यहि पुस्तकन मध्ये तपसील के सङ्ख्या मे कक्षागत रूप मे कुछ पाठ्यपुस्तक विवरण के अनुसार उपलब्ध नाही हैं ।

यही नाते आप से अनुरोध है कि विवरण के अनुसार कै बाकी पाठ्यपुस्तक यहि पुस्तक भण्डार का यथाशीघ्र उपलब्ध कराइकै स्थानीय तह पर पुस्तक कै उपलब्धता सुनिश्चित करावै मे सहयोग किहा जाय । धन्यवाद ।

भवदीय
कविता चौधरी
(प्रोप्राइटर)
कविता एजुकेशनल प्रा.लि.
सागरटोल, तौलिहवा, कपिलवस्तु ।

१	नेपाली विषय	१०० थान
२	सामाजिक शिक्षा विषय	६०० थान
३	गणित विषय	३०० थान
४	नेपाली विषय	५०० थान
५	अङ्ग्रेजी विषय	२०० थान
६	गणित विषय	५०० थान

शब्दार्थ

व्यावसायिक चिठ्ठी :	पेशागत चिठ्ठी
प्रारूप :	ढाँचा/मसौदा, खाका
पाठक :	पढ़ै वाले
निष्कर्ष :	निचोड़
उल्लेखितः	उल्लेख किहा
यथाशीर्घ :	जल्दी से जल्दी
उपलब्ध :	पठावै
मास्टर चेक :	वैंक के द्वारा भुक्तानी सुनिश्चित किहा चेक
पार्सल :	एक जगही से दुसरे जगही भेजै खातिर तयार किहा समान विशेष
सुनिश्चित :	पक्का

अभ्यास

सुनाई

१. पहिला चिठ्ठी का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) यी चिठ्ठी जनक शिक्षा सामाग्री केन्द्र, सानोठिमी, भक्तपुर का लिखा गा है ।

(ख) चिठ्ठी मे माग अनुसार कै पाठ्यपुस्तक उपलब्धता के बारे मे जानकारी देय कै अनुरोध किहा है ।

(ग) पत्र के साथे पुस्तक के दररेट के अनुसार कै भुक्तानी सामान्य चेक से किहा है ।

(घ) जनक शिक्षा से यहि पुस्तकन का यही चइत मसान्त तक पुस्तक भण्डार का उपलब्ध करावै कै अनुरोध किहा है ।

(ङ) यी चिठ्ठी कविता चौधरी (प्रोप्राइटर,कविता एजुकेशनल प्रा.लि.) जनक शिक्षा सामाग्री केन्द्र का लिखे हिन ।

२. चिठ्ठी के दुसरा उदाहरण साथी से ध्यानपूर्वक सुना जाय औ यी चिठ्ठी के केका औ काहे लिखे है ? बुँदागत रूप मे बतावा जाय ।

३. पाठ मे भवा चिठ्ठी कै तिसरा उदाहरण का ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ साथी का बोलै केकहा जाय ।

व्यावसायिक, प्रारूप, निष्कर्ष, उल्लेखित, यथाशीर्घ, उपलब्ध, मास्टर चेक, पार्सल

२. "यहि पाठ मे चिठठी कै उदाहरणन मध्ये तिसरा चिठ्ठी कविता एजुकेशनल फाउण्डेशन का काहे लिखै के बाध्य होय के परा ?" यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

३. पाठ मे दिहा उदाहरणन मध्ये पहिला दुसरा औ तिसरा चिठ्ठी एक दुसरे से कइसै फरक है औ कवन चिठ्ठी का करै खातिर लिखा जात है ? वहि बारेमा बुँदागत रूप मे लिखा जाय औ कक्षा मे पेश किहा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ मे दिहा पहिले चिठ्ठी का तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ैं मे केतना समय लाग, देखा जाय औ गुरूजी का बतावा जाय ।

२. गति, यति औ लय के साथ पाठ के तिसरा चिठ्ठी सस्वर वाचन करा जाय ।

३. नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

यशोधरा माध्यमिक विद्यालय

तौलिहवा, कपिलवस्तु

मिति : २०७६/११/१२

श्री नगरप्रमुखजी,

कपिलवस्तु नगरपालिका, तौलिहवा,

कपिलवस्तु ।

विषय : भवन निर्माण के खातिर बजेट व्यवस्था सम्बन्ध मे ।

महोदय,

यी विद्यालय जिला सदरमुकाम मे अवस्थित होय के साथै यी यहि जिला कै पूरान विद्यालय मध्ये कै एक होय । विद्यालय परिवार निरन्तर रूप मे स्थानीय समुदाय के सदभाव औ सहयोग से विद्यार्थी मैत्री वातावरण बनाय कै शिक्षण कार्य आगे बढ़ावत आ है । यही नाते आज के दिन मे यहि विद्यालय मे विद्यालय भवन, विषयगत शिक्षक, शैक्षिक औ खेलकुद सामाग्री, शौचालय, पीयै के पानी औ पुस्तकालय कै अवस्था व्यवस्थित स्वरूप मे है ।विता साल व्यवस्थित पुस्तकालय निर्माण के प्रयास मे दुइ कक्षा कोठरी का पुस्तकालय मे परिवर्तित कइ दिहा गै । यहि नाते यहि साल कक्षा कोठरी कै आभाव विशेष रूप मे देखान है ।

अत: विद्यालय के यहि समस्या के समाधान के खातिर गत महीना मे नगरपालिका मे भवा छलफल के अनुसार तीन कोठरी कै नवा भवन बनावै के खातिर लागत अनुमान कै विस्तृत विवरण सहित आप के समक्ष पेश किहा है ।

आशा है कि आगामी साल के बजेट मे यहि विद्यालय कै भवन निर्माण के खातिर आवश्यक बजेट कै व्यवस्था कइकै विद्यालय कक्षा सञ्चालन मे सहयोग किहा जाई । धन्यबाद ।

भवदीय

रतन लाल गुप्त

प्रधानाध्यापक

(क) यी चिठ्ठी के केका लिखे है ?

(ख) चिठ्ठी के अनुसार विद्यालय कै अवस्था कइसन है ?

(ग) विद्यालय भवन बनावै खातिर नगरपालिका से माग करे के खातिर काहे बाध्य होय के परा है ?

(घ) विद्यालय परिवार कहाँ भवा छलफल के आधार पर यी चिठ्ठी नगरपालिका का लिखे है ?

(ङ) सरकारी कार्यालय से कवनो चीज बनावै खातिर विस्तृत लागत इष्टिमेट के काहे जरूरत होत है ?

लिखाई

१. पाठ कै दुसरा चिठ्ठी पढ़िकै यी चिठ्ठी के, कब, केका, काहे लिखै है ? बुँदागत रूप मे लिखा जाय ।

२. पाठ के अनुसार पहिला चिठ्ठी लिखे कै मुख्य उद्देश्य काव होय, लिखा जाय ?

३. कविता एजुकेशनल प्रा.लि. का जनक शिक्षा सामाग्री केन्द्र का सिकायत पत्र लिखै के काहे बाध्य होय के परा, अपने शब्द मे लिखा जाय ।

४. पाठ का पढ़िकै नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

(क) उदाहरण के रूप मे सुरु मे दिहा चिठ्ठी का काव कहा जाई ?

(ख) उदाहरण के रूप मे सुरु मे दिहा चिठ्ठी मे कवने तह कै पुस्तक के खातिर अनुरोध किहा है ?

(ग) उदाहरण के रूप मे बीच मे दिहा चिठ्ठी के, के का औ काहे लिखे है ?

(घ) व्यावसायिक चिठ्ठी मे लेटरहेड राखब काहे जरूरी होत है ?

(ङ) व्यावसायिक चिठ्ठी मे कवने कवने किसिम कै चिठ्ठी आवत हैं ?

५. दिहा प्रश्न कै विस्तृत रूप मे जवाफ लिखा जाय ।

(क) तिसरे चिठ्ठी मे किहा अनुरोध अनुसार एक प्रा.लि. का पुस्तक उपलब्ध कराए कइसै स्थानीय तहपर पर पुस्तक कै उपलब्धता सुनिश्चित करावै मे सहयोग पहुची?

व्याकरण

वर्ण विन्यास

१. पाठ पढ़िकै पाठ से सुरु, मध्य औ अन्त मे ह्रस्व इकार भवा बारह शब्द चुनिकै कापी मे लिखा जाय ।

२. पाठ का पढ़िकै पाठ से सुरू, मध्य औ अन्त मे दीर्घ इकार भवा बारह शब्द चुनिकै कापी मे लिखा जाय ।

३. श, ष, क्ष, त्र औ ज्ञ अक्षर प्रयोग भवा दुइ/दुइ शब्द लिखा जाय ।

४. नीचे दिहा अनुच्छेद मे कुछ वर्ण विन्यास गलत किसिम से लिखा हैं । हरेक वर्ण विन्यास गत गल्ती का ठीक कइकै लिखा जाय ।

छाती के भित्तर गाह्न जेस लागत है, सम्झना बहिनी । आँखि से निकरे अजस्र धारा आँसु पोछत चीनीमाया कहत हीं बहिनी, हम्मै यिहां सुख है, हम वहि पापिन कै औ ऊ लोगन कै रहै वाले गाँव का याद तक नाही करै चाहित हन । लेकिन काहे हम्मै सतावै आवत है, यहि किसिम से वन्हरे, सपना बनि कै टेबुल पर धरा लोटा से पानी पियावत सम्झना कहत हीं दिदी आप चाहे जेतना भुलाय्क सोचौ लेकिन ऊ गाँव औ वहिं कै मनई आप कै आपन होंय आप कै नाता सम्बन्ध है ऊ लोगन से जुड़ाव, यिहै होय यहि नाते चाहे जेतना भुलाय चाहा जाय, घृणा किहा जाय लेकिन आप के अवचेतन मन मे ऊ जुड़ि कै बइठा है ऊ मन उहाँ काव होत होई कवनो खराब काम तो नाही भा है यिहै सोचत रहत है

५. नीचे दिहा उदाहरण के आधार पर हरेक कै आउर दुइ दुइ शब्द लिखा जाय ।

(क) दुइ अक्षरन कै गुच्छता

अ उर	अउर
ग अ ऊ	गऊ
च आ उर	चाउर

(ख) तीन अक्षरन कै गुच्छता

क रि आ इब	करिआइब

(ग) चार अक्षरन कै गुच्छता

से इ आ इब	सेइआइब

विभक्ति :- कारक के अर्थ का प्रकाशित करै खातिर आउर पद के बीच मा सम्बन्ध राखै के खातिर आवै वाले प्रत्यय (चिन्ह) का विभक्ति कहा जात है ।

कारक विभक्ति भेद तालिका

कारक	अर्थ	विभक्ति	उदाहरण	विभक्ति चिन्ह	
कर्ता	काम (क्रिया) सम्पन्न करै वाला	प्रथमा	राम रावण का मारिन ।		
कर्म	क्रिया (काम) पर असर केर भोक्ता	द्वितीया	हरि भात खात हैं । हरि तुहैं/तुमका बोलावत हैं ।	क,का, कइहा	अमानवीय कर्म मा विभक्ति नाहिन लागत है ।
करण	काम (क्रिया) करै केर माध्यम साधन, जरिया	तृतीया	पुस्तक से ज्ञान मिलत है । यइसन प्रेम राखव/राखउ ।	से, सेती, द्वारा सन् ।	
सम्प्रदाय	काम, क्रिया, करण, केर, उद्देश्य, प्रापक (संयोग)	चतुर्थी	हम भाई का १० रुपया दिहेन । मम हित चले आयव/आउअ ।	का, खातिर, के लिए, लागी	
अपादान	हद, स्थान, समय, अलग, होव (वियोग)	पञ्चमी	छत पर से बिटिया गिर परी । कवने दिन से काम करिहौ ।	से, ते	

सम्बन्ध	मलिकाना स्वामित्व	षष्टी	हमार भाई अच्छा है । मोर बहिनिया पढ्ति हैं ।	आर, री, कै,केर, के हार,	
अधिकरण	आधार	सप्तमी	कितबिया भ्होरा मे है । महतारी छतपर बइठी हैं ।	माँ, पर, प, म, महियाँ, ओर	
सम्वोधन	बोलावट	–	हे भइया, सडकियप न जाव ।		
निर्देश : कारक पद कै क्रिया से प्रत्यक्ष सम्बन्ध न राखै वाले सम्बन्ध कारक का अब कारक नाही माना जात है ।					

सिर्जनात्मक/प्रयोगात्मक कार्य

(क) विद्यालय का छात्रवृत्तिं पावै खातिर निवेदन लिखा जाय ।

(ख) व्यापारिक चिठ्ठी औ घरायसी चिठ्ठी लिखत के कवने कवने बाति मे ध्यान देय के चाहीं लिखा जाय औ कक्षा मे प्रस्तुत करा जाय ।

पाठ
१६

नाग पञ्चमी कै कथा

आलोक कुमार तिवारी 'अवध'

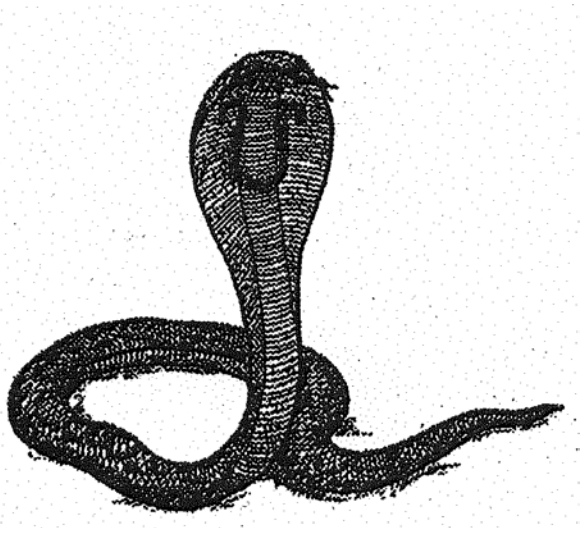

१. एक परिवार रहै । वहि परिवार मे पतोह कै वड़ा दुर्दशा रहै । बेचारी का ठीक से खाना तक नाही मिलै । अक्सर तो वोका भूखा सूति जाय के परै । उप्पर से दिनभरि कै झकझोरा । बोकर सासु बड़ा दुष्ट रहै । ऊ पतोह पर तनिकौ विश्वास नाई करै । पतोह का अनेक किसिम से कष्ट देय । घर मे खेतीबारी ढेर रहै । घर कै सब मर्द तो खेत मे काम करै चला जांय औ एक पहर रात बीति जाय, तब्बै घरे लउटैं । घर मे दिनभर सासु-पतोह मे खुब कलह होय । दुपहरे कै नहारी सासु अपने लइकै जाय । वोका शंका रहै यदि पतोह नहारी लइ गयी तो रास्ता मे कुछ न कुछ चोराय कै खाय लेई ।

२. पुड़ी औ गोझिया-गुलगुला बना । जब दुपहरे कै नहारी लइकै सासु जाय लागी तो पतोह बोली, "लावो अम्मा आज हमही नहारी दइ आई ।" हां-हां, दइ काहे नाइ अइबू । खीर, पुड़ी, गोझिया गुलगुला देखिकै लार टपकत होई न । तुँहैं रस्ता मे खाय करतिन दइ देई, नई ?" पतोह बोली, "नाई अम्मा ! चाहे जवन किरिया खवाय लेव, हम नाई खाबै । चाहो तो हमरे मुँह मे चीन्हा बनाय देव । यदि नाइै मिटी तो समझेव कि नाही खायन औ यदि मिटि जाई तो समझेव कि खाये हन ।" सासु अइसै किहिस, पतोह के मुँह पे चीन्हा लगाइस औ नहारी बान्हि कै पतोह का पठै दिहिस । राहि मे इमली कै एकठू पेड़ मिला । वह मे एकठू खोड़हर रहा । पतोह कुछ खीर औ थोरै पुड़ी औ गोझिया गुलगुला वही खोड़हर मे धय दिहिस । बाकी नहारी खेत मे पहुचाय दिहिस । ऊ खेत से लउटि कै बोली, देखि लेव अम्मा, सारा

चीन्हा ठीक है ना ? सासु देखिस सारा चीन्हा ठीक रहै । वन्है विश्वास होइ गै कि पतोह चोराय कै नाई खाये ही ।

३. थोरै देर के बाद पतोह बहाना कइकै इमली के पेड़ के लगे पहुची । खीर पुड़ी औ गोझिया गुलगुला निकारै करतिन खोड़हरा मे हाथ डारिस । बकिर वहि तो कुछ नाई रहै । बेचारी के आँखि मे आँसु भरि आय । ऊ बोली "हम तो समझत रहेन कि यहि दुनिया मे सबसे ज्यादा दु:खी हमही हन, बकिर अब हम्मै अइसन लागत है कि हमहू से ज्यादा दु:खी लोग हैं । जे खीर पुड़ी खाय लिहिस । खोड़हरा मे नाग देवता बइठा सब सुनत रहैं । वनही खीर-पुड़ी खाये रहें । नाग देवता बहरे निकरे औ बोले, "बिटिया का बाति है ? पतोह बोली" बाबूजी, घर मे खाय के नाही मिलत है । आज चोरी से कुछ खाय वाला सामान यहिं लुकुवाइकै गै रहेन कि लउटि कै खाबै । लागत है, केहू का मालुम होइ गै । ऊ सब खाय लिहिस ।" नाग देवता कहिन "बिटिया, खीर, पुड़ी तो हमही खाये हन । अब तूँ चिन्ता न करौ, हमरे साथे घरे चलौ । हम तुँहैं अच्छा-अच्छा खयका खियाइब ।" पतोह कहिस "बकिर हमरे घर कै अदमी का कहिहैं ? हमार सासु तो हम्मै मारिन डरिहैं ।" नाग भीत्तर गै औ थोरै देर मे ढेर सारा धन लइके बहरे आय औ बोला, "जाव यी लइकै जाव औ अपने सासु से कहेव कि हमरे पिताजी बिदा करावै आ हैं, तो बिदा कइ दिहैं ।"

४. पतोह कुल धन अपने सासु का दइ दिहिस औ कहिस कि "पिताजी बिदा करावै आ हैं ।" लालची सासु धन के लालच मे यतना लीन होइ गई कि वोका कुछ ध्यान नाई रहि गै । सासु बोली "ठीक है, जाव ।" पतोह नाग के साथे चलि दिहिस । वोका लइके नाग देवता एक बाबी के लगे गयें कहिन बिटिया घरे चलौ ।" पतोह बोली "बाबूजी, हम यतना छोट बाबी मे कइसै जाय पाइब ?" नाग देवता कहिन "आपन आँखि बन्द कइ लेव ।" ऊ आपन आँखि बन्द किहिस कि नागदेवता कै महिमा कहाँ से कहाँ पहुचि गई । पतोह जब आँखि खोलिस तो अपने आप का एक विशाल महल मे पाइस । महल तरहतरह के सरसामान से सजा रहै । नाग देवता कहिन "बिटिया, जब तक त यहिं रहै चाहौ, आराम से रहौ । पेट भर खाव पीयव औ मउजि करौ ।" नागदेवता बड़े उत्साह से घूमिघूमि कै सारा महल देखाइन । छ कोठरी तो नागदेवता अइसन देखाइन कि जवन खाली हीरा-जवाहरात से भरा रहै । खाय, पीयै कै तो कवनो कमी रहै नाई । नाग देवता कहिन, "यी छवो कोठरी कै सारा समान तोहार होय खाव, पहिरौ, बकिर सतवाँ कोठरी न खोलेव । नाईं तो तोहरे धर्म कै महतारी नागिन तोहार जान लय लेई । पतोह बोली, "अच्छा, बाबूजी ।"

५. कुछ दिन तो बहुत मउजि-मस्ती मे बीता । जवन चीज ऊ आँखियौ से नाई देखे रही उ खाइस-पीस औ पहिरिस । लेकिन कुछ दिन बाद वोकर मन यी सबसे भरि गै । वोकर ध्यान तो अब सतवाँ कोठरी पे रहै । ऊ सोचै कि कब मवक्का मिलै औ कब सतवाँ कोठरी खोलि कै देखी । लेकिन नाग देवता का रोकै के नाते वोका नाई खोलै । एकदिन वोकर मन नाई मान औ मवक्का देखिकै ऊ कोठरी खोलि दिहिस । ऊ कोठरी छोटछोट साँपन से भरा रहै । जइसै ऊ दरवाजा खोलिस तो केहू कै पूछ कटि गै । केहू कै मुँह कचरि गै, केहू दबि गै औ तमाम अण्डा फुटि गयें । ऊ झट्ट से किवाड़ बन्द किहिस औ अपने कोठरी मे आइकै सूती ।

६. जब नागिन अपने बच्चन कै यी दुर्दशा देखिस तो आग बबूला होइ गयी । वही समय नाग देवता का बोलवाइस औ बोली "के केकर धरम कै महतारी औ के केकर बिटिया ? तोहार लाडली बिटिया हमरे लरिकन का लूल-लङ्गण औ बयण्डा बनाइस है । अब हम येंका नाई छोड़ब ।" नाग देवता का यी सब सुनिकै बड़ा दुःख भै, लेकिन ऊ तरफदारी करत बोले "ऊ जान बूझि कै यइसन नाई किहिस है । अन्जान मे वोसे गल्ती होइ गै । वोका माफी दइ देव ।" बकिर नागिन नाई मानी । ऊ कहिस "वोका हम माफी तो नाई दइ सकित । हम जब-जब बण्डा-बूचा का देखब तो हम्मै येकर ध्यान आय जाई । हाँ, वन्है हम अपने घर मे नाई मारब । यनके घरही जाइकै बदला लेबै । येका अब घर से बहरे कइ देव ।" नाग देवता लाचार होइकै कहिन, "बिटिया, तोहरे घर वाले तुहैं याद करत होइहैं, चलो तोहरे घरे छोड़ि आई ।" पतोह आँखि बन्द किहिस औ जब खोलिस तो बाबी से बाहर । धनदवलत, हीरा-मोती लादे-फाने घरे पहुची ।

७. यतना धन देखिकै सासु अवाक रहि गई । ऊ पतोह कै बड़े आदर भाव से परिछन किहिस । धन पाइकै सासु कै व्यवहार नरम होइ गै । ऊ अब पतोह का मोहाय लागी । जवन पतोह दिन प्रतिदिन गारी सहत रही, मारु सहत रही, उहै आज धन के बदौलत प्यारी होइ गयी । रात मे पतोह सूतै करतिन अपने कोठरी मे गई औ अचरा से दीया बुताय कै बोली–

"नाग बाढ़ैं नागिन बाढ़ैं, बाढ़ै राज छमासी ।

डुण्ड-वुण्ड मोरे भइया बाढ़ैं, जिन पुरइ मोरि आसी ।"

८. मर्द बोला, "अबकिर तो तूँ मयका से बहुत कुछ सिखि कै आई हिउ ।" नागिन घात लगाये खटिया के नीचे बइठी रहै । जब पतोह के मुँह से ऊ अपने परिवार कै मंगलकामना सुनिस,

तो बड़ी खुस भई । ऊ सोचिस, "बण्डै सही, हमार लरिके जिन्दा तो हैं, यी उ सबकै मंगलकामना करत ही, तो दुश्मन तो नहियय होइ सकत ही ।" यिहै सोचिकै नागिन घरे लउटि आई । नाग देवता चिन्तामगन बइठा नागिन कै राहि देखत रहें । ऊ सोचत रहैं अब्बै नागिन डसि कै आवत होई । जइसै नागिन आई नाग देवता पूछिन, "बिटिया का डसि आइउ ?" नागिन बोली "भला, हम अपने बिटिया का काहे डसबै ? का केहू अपने बिटिया कै अमंगल सोचि सकत है ? हमार बिटिया जुगजुग जीयै औ अखण्ड सुहाग भोगै औ हमार बन्डौ जीयै ।" नाग यी सुनिकै बड़ा खुस भै । सब लोग सुख से रहै लागें ।

शब्दार्थ

झकझोरा :	झन्झट
एक पहर :	तीन पहर कै समय
खोड़हर :	पेड़ कै खोड़िह्ला
बाबी :	साँप कै बिल
उत्साह :	उमंग
धर्म कै महतारी :	मुँहबोली महतारी
किवाड़ :	किल्ली
बयण्डा :	बिगड़ा अण्डा
बण्डा :	विकृत
बूचा :	पुछकट्टा
करतिन :	खातिर
छमासी :	छ महीना कै
मंगलकामना :	शुभकामना
चिन्तामगन :	चिन्ता मे मगन
अवाक :	अचम्हित
अमंगल :	अशुभ

अभ्यास

सुनाई

१. व्रत कथा कै पहिला औ दुसरा अनुच्छेद का साथी से सुनिकै दिहा वाक्य ठीक है कि बेठीक पहिचाना जाय ।

(क) अक्सर तो वोका भूखा सूति जाय के परै ।

(ख) घर कै सब मर्द एक पहर दिन बीति जाय के बादै घरे लउटैं ।

(ग) इमली कै पेड़ मे एकठू खोड़हर रहा ।

(घ) पतोह कुछ खीर, थोरै पुड़ी औ गोझिया गुलगुला वही खोड़हर मे धइ दिहिस ।

(ङ) सासु देखिस सारा चीन्हा ठीक नाही रहै ।

२. नीचे दिहा पाठ ध्यानपूर्वक सुना जाय औ उत्तर बतावा जाय ।

एक गाँव मा एक जनी बृद्ध महिला रहत रहीं । वयँ शीतला माता कै भक्त रहीं औ हमेशा शीतला माता कै व्रत करत रहीं । वनके गाँव मा वनके अलावा आउर केहु नाही शीतला माता कै पूजा-व्रत करत रहा । एक दिन वही गाँव मा कउनो कारण आगि लागि गवा । वहिसे गाँव मा रहा घर औ झोपड़ा जरि गवा, लेकिन वही वृद्धा कै घर नाही जरा । सब कुछ सही-सलामत रहि गवा । सब लोग वृद्धा से येकर कारण पुछिन तौ वन बताइन कि हम शीतला माता कै व्रत औ पूजा करित है । यहि नाते हमार घर आगि से बचि गवा औ सब कुछ सुरक्षित है । यी बाति सुनैक बाद अन्य गाँव वालेव शीतला माता कै व्रत औ पुजा करै के शुरू कइ दिहिन ।

(क) के शीतला माता कै भक्त रहीं ?

(ख) वहि गाँव मे आउर के के शीतला माता कै भक्त रहा ?

(ग) एक दिन गाँव मे कवन घटना घटा ?

(घ) गाँव मे केकर घर सही सलामत बचि गै ?

(ङ) शीतला माता कै पूजा तोहरे गाँव मे होत है कि नाही, लिखा जाय ?

३. पाठ कै छठवाँ अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक सुनिकै लिखा जाय ।

बोलाई

१. नीचे दिहा शब्दन का ठीक से बोला जाय औ साथी का बोलै के कहा जाय ।

खोड़हर, उमंग, किवाड़, किल्ली, बण्डा, विकृत, पुछकट्टा, मंगलकामना,

चिन्तामगनः चिन्ता

२. "के केकर धरम कै महतारी औ के केकर बिटिया ? तोहार लाडली बिटिया हमरे लरिकन का अपाहिज औ बयण्डा बनाइस है । अब हम येंका नाई छोड़ब ।" यहि सोच से आई नागिन काहे घरे लउटि आई ? यहि विषय मे अपने साथिन के बीचे छलफल करा जाय औ छलफल से निकरा निष्कर्ष का कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

३. अवधी समाज मा कहा/सुना जाय वाला लोककथन मध्ये कवनो एक कथा का बुँदागत रूप मा तयार करा जाय औ कक्षा मा प्रस्तुत करा जाय ।

पढ़ाई

१. पाठ कै तिसरा अनुच्छेद का तेजी से पढ़ा जाय औ वोका पढ़ै मे केतना समय लागत है देखा जाय ।

२. गति, यति औ लय के साथ पाठ के छठवाँ अनुच्छेद का सस्वर वाचन करा जाय ।

३. नीचे दिहा अनुच्छेद का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ पुछा प्रश्न कै उत्तर बतावा जाय ।

सूर्य देव कै बियाह प्रजापति दक्ष कै बिटिया संज्ञा से भवा । सूर्य कै रूप परम तेजस्वी रहा, जउने का सामान्य आँखि से देखि पाइब सम्भव नाही रहा । देवी संज्ञा का सूर्य देव कै तेज सहन कइ पाइब मुश्किल होता जात रहा । यहि नाते संज्ञा अपने परछाहीं का पति सूर्य के सेवा मा लगाय दिहिन औ खुद वहिं से चली गईं । कुछ समय बाद देवी संज्ञा के गर्भ से तीन सन्तान कै जन्म भवा । यी तीन सन्तान मनु, यम औ यमुना के नाव से प्रसिद्ध हैं।

(क) सूर्य कै बियाह केसे भवा रहा ?

(ख) सूर्य कै रूप का सामान्य आँखि से देखि पाइब काहे नाही संभव रहा ?

(ग) संज्ञा काहे अपने परछाहीं का पति सूर्य के सेवा मा लगाय दिहिन ?

(घ) देवी संज्ञा के गर्भ से कै सन्तान कै जन्म भवा ?

(ङ) संज्ञा के गर्भ से जन्मे तीन सन्तान कवने कवने नाँव से प्रसिद्ध हैं ?

लिखाई

१. पाठ का ध्यानपूर्वक पढ़ा जाय औ नीचे दिहा प्रश्न कै उत्तर लिखा जाय ।

एक बार देवता औ दानव मे युद्ध शुरू होइ गै । वहि युद्ध मे देवता लोग कै हार होत रहा । अइसन अवस्था मा देवता ब्रह्मदेव के पास गये औ रक्षा कै प्रार्थना किहिन । ब्रह्मदेव कहिन कि यहि संकट से बचावै के खातिर सब देवता लोग के पत्नी का अपने-अपने पति के खातिर व्रत राखैक चाहीं औ सच्चे दिल से वनके विजय के खातिर प्रार्थना करैक चाहीं ।

ब्रह्मदेव यी वचन दिहिन कि अइसन किहे पर निश्चित है कि युद्ध मा देवता लोग कै जीत होई । ब्रह्मदेव के यहि सुझाव का सब देवता औ उनकै पत्नी लोग खुशी-खुशी स्वीकार किहिन । ब्रह्मदेव के कहा अनुसार कार्तिक महीना के चतुर्थी के दिन सब देवता के पत्नी लोग व्रत लिहिन औ अपने पत्नी यानी देवता लोग के विजय के खातिर प्रार्थना किहिन । उनकै यी प्रार्थना स्वीकार भवा औ युद्ध मा देवता लोग कै जीत भवा ।

(क) केसे केसे युद्ध शुरू भवा ?

(ख) देवता लोग काहे ब्रह्मदेव किहा गयें ?

(ग) ब्रह्मदेव देवता लोगन से काव कहिन ?

(घ) ब्रह्मदेव के कहा अनुसार देवता कै पत्नी लोग काव किहिन ?

(ङ) कथा के अनुसार देवता लोगन कै जीत कइसै भवा ?

२. पाठ के सतवाँ अनुच्छेद कै सारांश लिखा जाय ।

३. यहि लोक कथा से आप का कइसन शिक्षा मिलत है ?

४. सप्रसङ्ग व्याख्या किहा जाय ।

"नाग बाढ़ैं नागिन बाढ़ैं, बाढ़ै राज छमासी । डुण्ड-वुण्ड मोरे भइया बाढ़ैं, जिन पुरइ मोरि आसी ।"

५. आप अपने परिवार से पुछिकै एक लोक कथा लिखा जाय औ गुरुजी का देखावा जाय ।

व्याकरण

वाच्य

१. नीचे कुछ कर्तृ वाच्य,कर्म वाच्य औ भाव वाच्य कै उदाहरण दिहा हैं ।

कर्तृ वाच्य :- वाक्य मे कर्ता प्रधान होय या कर्ता अनुसार क्रिया कै लिङ्ग, पुरूष, वचन होय के नाते कर्ता औ क्रिया के बीच मे पदसङ्गति होय वाला वाच्य कर्तृवाच्य होय । यी सर्कमक औ अकर्मक दूनौ क्रिया से बनत है ।

उदाहरण : हम भात खाबै । (सकर्मक कर्तृवाच्य)

ऊ नाचिस । (अकर्मक कर्तृवाच्य)

कर्म वाच्य :- जवने वाक्य कर्म प्रधान होय औ जवने मे कर्म के अनुसार लिङ्ग, वचन औ पुरूष मे परिवर्तन आइकै कर्म औ क्रिया के बीचे पदसङ्गति होइकै बनै वाला वाच्य कर्मवाच्य होय । यी खाली सकर्मक क्रिया से बनत है । यकरे धातुमा इ प्रत्यय जुटि जात है ।

कर्मवाच्य = कर्ता(से/द्वारा) + कर्म + क्रिया (धातु + इ + रूपायक प्रत्यय)

भाई से + किताब + पढि जात है ।

भाई से किताब पढ़ा जात है ।

भाव वाच्य :- वाक्य भाव प्रधान होय औ यदि क्रियै मे वोकर अर्थ केन्द्रित है, तो अइसन वाच्य भाव वाच्य होय । भाव वाच्य मुख्य रूप मे अकर्मक क्रिया से बनत है । येकर क्रिया तृतिय पुरूष, एकवचन औ पुलिङ्ग होत है । यहू के धातु मे इ जुटत है ।

भाव वाच्य = कर्ता(से/द्वारा) + कर्म + क्रिया (धातु + इ + रूपायक प्रत्यय)

दादा से + उठि + नाही जाई । दादा से उठि नाही जाई । (अकर्मक)

यी उदाहरणन के आधार पर नीचे दिहा वाक्यन मध्ये कवन कर्तृ वाच्य, कवन कर्म वाच्य औ कवन भाव वाच्य होंय, अलग अलग कइकै लिखा जाय ।

(क) दादा से हम गरियावा गयन ।

(ख) दादा हम्मय गरियावत हैं ।

(ग) राम से किताब पढ़ि जाई ।

(घ) हम से सेव खाय जाई ।

(ङ) राम से पढ़ि नाही जाई ।

(च) सीता आज गीत गइहैं ।

(छ) करम हुसेन से अकेलै घरे नाही जाय जाई ।

२. **नीचे दिहा अनुच्छेद मे कुछ लेख्य चिन्ह गलत किसिम से लिखा है । हरेक का ठीक कइकै लिखा जाय ।**

एक खरगोश रहै, ऊ एक पेड़ के तरे सूता रहा । अचानक जोर से अवाजि सुनिस । धम्म । ऊ उठि के बइठि गै औ सोचै लाग कि यतने जोर से काव धम्म से भै । यहर वहर देखिस । वोकां कुछ नाही देखान । एकाएक वकरे दिमाग मे आय यी कुछु नाही बलुक आसमान गिरै लाग है । यी वही कै धमाका होय, खरगोश डेराय गै औ भागै लाग ।

सिर्जनात्मक/परियोजना कार्य

(क) अपने घर मे कवनो व्रत के दिने कहा जाय वाले कथा का पुछिकै लिखा जाय औ गुरुजी का देखावा जाय ।

(ख) लोककथा या व्रत कथा मे कइसन कइसन विषय रहत है, घटना कै वर्णन रहत है यहि विषय मे दुइ अनुच्छेद लिखा जाय ।